सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 197, नई दिल्ली, बुधवार 24 सितंबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 श्री धार्मिक लीला कमेटी द्वारा गणेश पूजा के साथ रामलीला मंचन की शुरुआत
06 भारत से गिद्ध लुप्त हो रहे हैं।
08 2 से 5 अक्टूबर तक मनाया जाएगा दान उत्सव – मैडम पियूषा

दिल्ली परिवहन निगम ने 46 ड्राइवरों को प्रतिनियुक्ति (डेप्युटेशन) पर राजस्व विभाग में भेजा

संजय बाटला

दिल्ली परिवहन निगम जो दिल्ली को सवारी बस सेवा उपलब्ध करवाने का उपक्रम है लेकिन दिल्ली सरकार द्वारा निगम के नाम पिछले 15 सालों से कोई बस नहीं खरीद कर लेने/ देने से अब अपने यहां नियुक्त स्थाई एवं अस्थाई ड्राइवर को प्रतिनियुक्ति के आधार पर दूसरे विभागों में भेजने के काम पर लग गया है।

दिल्ली परिवहन निगम के बस टर्मिनलों को भी पार्किंग, आफिस कार्यालयों और इलेक्ट्रिक चार्जिंग केंद्रों में परिवर्तित कर राजस्व कमाने की कार्यवाही शुरू हो चुकी है।

'अर्थात' दिल्ली परिवहन निगम और दिल्ली सरकार अंदर ही अंदर फैसला कर दिल्ली में अब सरकारी बस जनता को उपलब्ध कराने से हमेशा के लिए वंचित करने जा रहे है।

दिल्ली में जनता को जरूरत एवम् समयानुसार सुरक्षित, सुगम सार्वजनिक सवारी बस सेवा उपलब्ध करवाने के लिए बनाए गए निगम को बिना किसी कानूनी प्रक्रिया को अपनाए किस तरह बंद किया जा सकता है और उसकी संपत्ति को कैसे कब्जा कर दूसरे कार्य में प्रयोग किया जा सकता है इसके लिए दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली सरकार और दिल्ली परिवहन निगम सच में सक्षम है यह सिद्ध हो रहा हैं।

जनता द्वारा सरकारी संपति पर कब्जा तो सुनना आम बात है पर निगम की संपत्ति पर सरकार या अन्य सरकारी विभाग भी कब्जा कर सकता है यह एक नायाब उदाहरण सामने देखने को पहली बार आ रहा है।

अब देखना यह होगा की भारत देश की राजधानी दिल्ली को आने वाले कुछ वर्षों के बाद सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करवाने का दायित्व किसके कंधों पर आयेगा या जनता दिल्ली की सड़को सार्वजनिक सवारी बस सेवा के परेशान होती नजर आएगी।

आपकी जानकारी हेतु स्पष्ट कर दें की दिल्ली के लिए माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश के अनुसार किसी भी प्रकार से सार्वजनिक सवारी बस सेवा के लिए जनता परेशान ना हो पर 40% और 60 % के रेश्यो के अनुसार निगम और अन्य सेवा उपलब्ध कराना आवश्यक के आदेश पारित है, पर दिल्ली सरकार और दिल्ली परिवहन विभाग कब अपने आगे माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश को मानते हैं।

जनहित में जारी

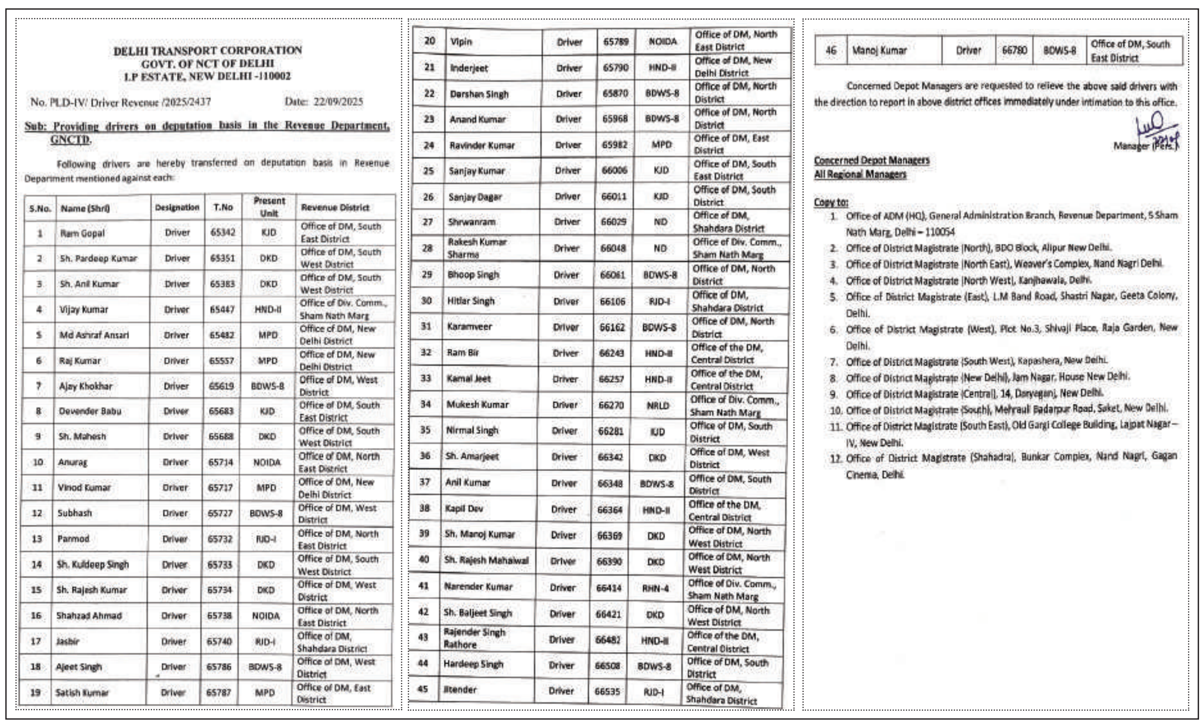

DELHI TRANSPORT CORPORATION
GOVT. OF NCT OF DELHI
I.P ESTATE, NEW DELHI -110002

No. PLD-IV/ Driver Revenue /2025/2437 Date: 22/09/2025

Sub: Providing drivers on deputation basis in the Revenue Department, GNCTD.

Following drivers are hereby transferred on deputation basis in Revenue Department mentioned against each:

S.No.	Name (Shri)	Designation	T.No	Present Unit	Revenue District
1	Ram Gopal	Driver	65342	KJD	Office of DM, South East District
2	Sh. Pardeep Kumar	Driver	65351	DKD	Office of DM, South West District
3	Sh. Anil Kumar	Driver	65383	DKD	Office of DM, South West District
4	Vijay Kumar	Driver	65447	HND-II	Office of Div. Comm., Sham Nath Marg
5	Md Ashraf Ansari	Driver	65482	MPD	Office of DM, New Delhi District
6	Raj Kumar	Driver	65557	MPD	Office of DM, New Delhi District
7	Ajay Khokhar	Driver	65619	BDWS-8	Office of DM, West District
8	Devender Babu	Driver	65683	KJD	Office of DM, South East District
9	Sh. Mahesh	Driver	65688	DKD	Office of DM, South West District
10	Anurag	Driver	65714	NOIDA	Office of DM, North East District
11	Vinod Kumar	Driver	65717	MPD	Office of DM, New Delhi District
12	Subhash	Driver	65727	BDWS-8	Office of DM, West District
13	Parmod	Driver	65732	RJD-I	Office of DM, North East District
14	Sh. Kuldeep Singh	Driver	65733	DKD	Office of DM, South West District
15	Sh. Rajesh Kumar	Driver	65734	DKD	Office of DM, West District
16	Shahzad Ahmad	Driver	65738	NOIDA	Office of DM, North East District
17	Jasbir	Driver	65740	RJD-I	Office of DM, Shahdara District
18	Ajeet Singh	Driver	65786	BDWS-8	Office of DM, West District
19	Satish Kumar	Driver	65787	MPD	Office of DM, East District
20	Vipin	Driver	65789	NOIDA	Office of DM, North East District
21	Inderjeet	Driver	65790	HND-II	Office of DM, New Delhi District
22	Darshan Singh	Driver	65870	BDWS-8	Office of DM, North District
23	Anand Kumar	Driver	65968	BDWS-8	Office of DM, North District
24	Ravinder Kumar	Driver	65982	MPD	Office of DM, East District
25	Sanjay Kumar	Driver	66006	KJD	Office of DM, South East District
26	Sanjay Dagar	Driver	66011	KJD	Office of DM, South District
27	Shrwanram	Driver	66029	ND	Office of DM, Shahdara District
28	Rakesh Kumar Sharma	Driver	66048	ND	Office of Div. Comm., Sham Nath Marg
29	Bhoop Singh	Driver	66061	BDWS-8	Office of DM, North District
30	Hitlar Singh	Driver	66106	RJD-I	Office of DM, Shahdara District
31	Karamveer	Driver	66162	BDWS-8	Office of DM, North District
32	Ram Bir	Driver	66243	HND-II	Office of the DM, Central District
33	Kamal Jeet	Driver	66257	HND-II	Office of the DM, Central District
34	Mukesh Kumar	Driver	66270	NRLD	Office of Div. Comm., Sham Nath Marg
35	Nirmal Singh	Driver	66281	KJD	Office of DM, South District
36	Sh. Amarjeet	Driver	66342	DKD	Office of DM, West District
37	Anil Kumar	Driver	66348	BDWS-8	Office of DM, South District
38	Kapil Dev	Driver	66364	HND-II	Office of the DM, Central District
39	Sh. Manoj Kumar	Driver	66369	DKD	Office of DM, North West District
40	Sh. Rajesh Mahawal	Driver	66390	DKD	Office of DM, North West District
41	Narender Kumar	Driver	66414	RHN-4	Office of Div. Comm., Sham Nath Marg
42	Sh. Baljeet Singh	Driver	66421	DKD	Office of DM, North West District
43	Rajender Singh Rathore	Driver	66482	HND-II	Office of the DM, Central District
44	Hardeep Singh	Driver	66508	BDWS-8	Office of DM, South District
45	Jitender	Driver	66535	RJD-I	Office of DM, Shahdara District
46	Manoj Kumar	Driver	66780	BDWS-8	Office of DM, South East District

Concerned Depot Managers are requested to relieve the above said drivers with the direction to report in above district offices immediately under intimation to this office.

Manager (Pers.)

Concerned Depot Managers
All Regional Managers

Copy to:
1. Office of ADM (HQ), General Administration Branch, Revenue Department, 5 Sham Nath Marg, Delhi – 110054
2. Office of District Magistrate (North), BDO Block, Alipur New Delhi.
3. Office of District Magistrate (North East), Weaver's Complex, Nand Nagri Delhi.
4. Office of District Magistrate (North West), Kanjhawala, Delhi.
5. Office of District Magistrate (East), L.M Band Road, Shastri Nagar, Geeta Colony, Delhi.
6. Office of District Magistrate (West), Plot No.3, Shivaji Place, Raja Garden, New Delhi.
7. Office of District Magistrate (South West), Kapashera, New Delhi.
8. Office of District Magistrate (New Delhi), Jam Nagar, House New Delhi.
9. Office of District Magistrate (Central), 14, Daryaganj, New Delhi.
10. Office of District Magistrate (South), Mehrauli Badarpur Road, Saket, New Delhi.
11. Office of District Magistrate (South East), Old Gargi College Building, Lajpat Nagar – IV, New Delhi.
12. Office of District Magistrate (Shahadra), Bunkar Complex, Nand Nagri, Gagan Cinema, Delhi.

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

भारत में समानता और भेदभाव-रहित होने का अधिकार (Equality & Non-Discrimination) कानून क्या कहता है?

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

भारतीय संविधान में समानता (Equality) और गैर-भेदभाव (Non-Discrimination) का अधिकार सबसे बुनियादी अधिकारों में से एक है।

1. अनुच्छेद 14: सभी नागरिक कानून के समक्ष समान हैं और उन्हें कानून से समान सुरक्षा प्राप्त होगी।
2. अनुच्छेद 15: धर्म, जाति, लिंग, नस्ल या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।
3. अनुच्छेद 16: सार्वजनिक नौकरियों और अवसरों में समानता।
4. अनुच्छेद 17: अस्पृश्यता (Untouchability) का उन्मूलन।
5. अनुच्छेद 18: उपाधियों (Titles) का अंत।

मतलब कानून साफ कहता है कि सभी लोग बराबर हैं और किसी भी आधार पर उन्हें नीचा नहीं दिखाया जा सकता।

हकीकत (Reality in India)

कानून मौजूद होने के बावजूद ज़मीनी सच्चाई अलग है—

1. जाति आधारित भेदभाव: दलित और पिछड़े वर्ग अब भी ग्रामीण भारत में सामाजिक बहिष्कार और हिंसा का सामना करते हैं।
2. लैंगिक असमानता: महिलाओं को शिक्षा, नौकरी, वेतन और सुरक्षा के मामलों में बराबरी नहीं मिलती।
3. धर्म आधारित भेदभाव: अल्पसंख्यक समुदायों को कई बार पक्षपात और हिंसा का शिकार होना पड़ता है।
4. आर्थिक असमानता: भारत की आबादी का बड़ा हिस्सा अब भी गरीबी रेखा के नीचे है, जबकि कुछ वर्ग अत्यधिक अमीर हैं।

पड़ोसी देशों की स्थिति (Surrounding Countries)

1. **पाकिस्तान:** संविधान में समानता का अधिकार है, पर धार्मिक अल्पसंख्यकों (हिंदू, सिख, ईसाई) के खिलाफ भेदभाव और हमले आम हैं।
2. **बांग्लादेश:** धर्मनिरपेक्ष संविधान होने के बावजूद अल्पसंख्यक समुदायों को भेदभाव झेलना पड़ता है।
3. **नेपाल:** नया संविधान सभी नागरिकों को समानता देता है, लेकिन जातिगत भेदभाव अभी भी समाज में गहराई तक मौजूद है।
4. **श्रीलंका:** सिंहली और तमिल समुदायों के बीच लंबे समय से भेदभाव और हिंसक संघर्ष रहे हैं।
5. **म्यांमार:** रोहिंग्या मुस्लिम समुदाय के साथ गंभीर भेदभाव और मानवाधिकार उल्लंघन हुए हैं।

कानून बनाम वास्तविकता (Law vs Reality)

कानून: सबको बराबर अधिकार, अवसर और सम्मान।

हकीकत: समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था में गहरी असमानताएँ।

नतीजा: अदालतें और आयोग (जैसे राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, महिला आयोग आदि) लगातार हस्तक्षेप करते हैं, लेकिन बदलाव धीमा है।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com

"श्री श्री दुर्गा शरणम" तैंतीसवां सार्वजनिन दुर्गोत्सव

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके शहर उत्तम नगर में 'उत्तम नगर कालीबाड़ी द्वारा शनिवार दिनांक 27 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025 बृहस्पतिवार तक सी-50, मनसा राम पार्क, नई दिल्ली-59 में श्री श्री दुर्गा माँ की पूजा एवम् 20 अक्टूबर, 2025 सोमवार श्री श्री काली माँ की पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सबसे हार्दिक निवेदन है कि आप सब इस विशाल आयोजन में सम्मिलित होकर माँ दुर्गा एवम्काली माँ का आर्शीवाद प्राप्त करें और इस आयोजन को सफल बनायें।

प्रिय भक्तों!

हमें आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि उत्तम नगर कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में 33वें वर्ष दुर्गा पूजा एवं काली पूजा समारोह का आयोजन कर रही है। हम आपके परिवार और मित्रों को 27 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक हमारे काली मंदिर में आयोजित होने वाले इस समारोह में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित करते हैं।

आइए एक बार फिर खुशियाँ बाँटें, अपनी आत्मा को समृद्ध करें और पारिवारिक माहौल में त्योहार का आनंद लें। आप सभी के उदार सहयोग और भागीदारी की हम बहुत सराहना करते हैं। दुर्गा पूजा पर और हमेशा आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

भवदीय
उत्तम नगर कालीबाड़ी,
मलय डे (अध्यक्ष) 7217666618
जयंत डे (सचिव) 9654385888
पिंकी कुंडू (सदस्य)

पूजा कार्यक्रम-2025
27 सितंबर 2025, (शनिवार). बोधन
28 सितंबर 2025, (रविवार) षष्ठी आमंत्रण और अधिबास
29 सितंबर 2025, (सोमवार) सप्तमी पूजा
30 सितंबर 2025, (मंगलवार) अष्टमी और संधि पूजा
1 अक्टूबर 2025, (बुधवार) नवमी पूजा
2 अक्टूबर 2025, (गुरुवार) दशमी पूजा और विसर्जन
पुष्पांजलि 11.00 बजे से 1:00 बजे तक,
प्रसाद वितरण 1.00 बजे से 1:30 बजे तक,
भोग वितरण 1.30 बजे से 3.00 बजे तक।
संध्या आरती- 7.00 बजे
श्री श्री काली पूजा सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025
कार्यक्रम का स्थान:
कालीबाड़ी, सी-50, मनसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

स्टॉल प्रस्ताव:
सिंगल साइड ओपन स्टोल: 2000
कॉर्नर साइड स्टोल: 3500
तीन साइड ओपन स्टोल: 4500
सिर्फ एक टेबल: 1000
सिर्फ दो टेबल: 1250

कार्यक्रम विवरण:
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान: डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें: 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार: 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ:
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें:
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क: इंदु राजपूत
मोबाइल: 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
• दशहरे के दूसरे दिन
• दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
• स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण:
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र: इंदु राजपूत, मोबाइल: 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

डॉ. लॉजिस्टिक्स : भारतीय अर्थव्यवस्था में लॉजिस्टिक्स की बढ़ती भूमिका

भारत तेजी से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस विकास यात्रा में लॉजिस्टिक्स सेक्टर को देश की रीढ़ माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों की सफलता सीधे तौर पर लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन की मजबूती पर निर्भर है।

डॉ. अंकुर शरण (डॉ. लॉजिस्टिक्स) का कहना है कि यदि सामान सही लागत और समय पर उपभोक्ता तक पहुँचता है, तभी उद्योगों की गति तेज हो सकती है। आज लॉजिस्टिक्स केवल ढुलाई भर नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था को गति देने वाला एक अहम स्तंभ बन चुका है।

इंपोर्ट-एक्सपोर्ट की अहमियत

भारत का वैश्विक व्यापार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। देश की अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने में इंपोर्ट और एक्सपोर्ट शिपमेंट की विशेष भूमिका है। चाहे कच्चा माल हो, मशीनरी हो या तैयार माल — इनके सुरक्षित और समयबद्ध परिवहन से ही उद्योग और व्यापार सुचारु रूप से चलते हैं। अगर लॉजिस्टिक्स में देरी हो या प्रक्रियाएँ जटिल हों तो यह सीधे देश के व्यापार संतुलन और विकास दर को प्रभावित करता है।

डॉ. शरण का मानना है कि "भारत को वर्ल्ड लीडर बनने के लिए अपनी एक्सपोर्ट क्षमता को कई गुना बढ़ाना होगा और यह तभी संभव होगा जब लॉजिस्टिक्स सेक्टर पूरी तरह से आधुनिक, तेज़ और पारदर्शी बने।"

युवाओं को क्यों सीखनी चाहिए इंपोर्ट-एक्सपोर्ट की बुनियादी जानकारी

इस अवसर पर श्री संजय चिलवाल ने युवाओं पर ज़ोर देते हुए कहा कि आज इंपोर्ट-एक्सपोर्ट शिपमेंट से जुड़े नियम, डॉक्यूमेंटेशन और प्रक्रियाएँ समझना बेहद ज़रूरी है। यदि युवा इनकी बुनियादी शिक्षा हासिल करें तो न केवल वे अच्छे रोजगार पा सकते हैं, बल्कि उद्यमिता (Entrepreneurship) के क्षेत्र में भी प्रवेश कर सकते हैं।

आज कई MSMEs और स्टार्टअप्स अपने उत्पादों को विदेश भेजने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे में प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता है जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार की जटिलताओं को समझें और भारत को ग्लोबल मार्केट में प्रतिस्पर्धी बना सकें।

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य की संभावनाओं पर बात करते हुए डॉ. शरण ने बताया कि भारत में ई-कॉमर्स, ऑटोमोबाइल, फार्मा और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों के विस्तार से लॉजिस्टिक्स में अपार अवसर मौजूद हैं। साथ ही ग्रीन लॉजिस्टिक्स और डिजिटल सप्लाई चेन पर ध्यान देने से अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

लॉजिस्टिक्स अब केवल माल ढुलाई का साधन नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक वृद्धि की धुरी बन चुका है। इंपोर्ट-एक्सपोर्ट शिपमेंट्स को समझना और युवाओं को इसमें दक्ष बनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। विशेषज्ञों की मानें तो आने वाले वर्षों में यह सेक्टर न केवल अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा बल्कि भारत को वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भी आगे ले जाएगा।

!!नवरात्रि में नवार्ण मंत्र का महत्व:-!!

माता भगवती जगतजननी दुर्गाजी की साधना-उपासना के क्रम में, नवार्ण मंत्र एक ऐसा महत्त्वपूर्ण महामंत्र है। नवार्ण अर्थात नौ अक्षरों का इस नौ अक्षर के महामंत्र में नौ ग्रहों को नियंत्रित करने की शक्ति है, जिसके माध्यम से सभी क्षेत्रों में पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है और भगवती दुर्गा का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है यह महामंत्र शक्ति साधना में सर्वोपरि तथा सभी मंत्रों-स्तोत्रों में से एक महत्त्वपूर्ण महामंत्र है। यह माता भगवती दुर्गाजी के तीनों स्वरूपों माता महासरस्वती, माता महालक्ष्मी व माता महाकाली की एक साथ साधना का पूर्ण प्रभावक बीज मंत्र है और साथ ही माता दुर्गा के नौ रूपों का संयुक्त मंत्र है और इसी महामंत्र से नौ ग्रहों को भी शांत किया जा सकता है।

नवार्ण मंत्र

।। ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चै ।।

नौ अक्षर वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र में देवी दुर्गा की नौ शक्तियां समायी हुई है। जिसका सम्बन्ध नौ ग्रहों से भी है।

ऐं=सरस्वती का बीज मन्त्र है।

ह्रीं=महालक्ष्मी का बीज मन्त्र है।

क्लीं=महाकाली का बीज मन्त्र है।

इसके साथ नवार्ण मंत्र के प्रथम बीज "ऐं" से माता दुर्गा की प्रथम शक्ति माता शैलपुत्री की उपासना की जाती है,जिस में सूर्य ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के द्वितीय बीज "ह्रीं" से माता दुर्गा की द्वितीय शक्ति माता ब्रह्मचारिणी की उपासना की जाती है,जिस में चन्द्र ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के तृतीय बीज "क्लीं" से माता दुर्गा की तृतीय शक्ति माता चंद्रघंटा की उपासना की जाती है, जिस में मंगल ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के चतुर्थ बीज "चा" से माता दुर्गा की चतुर्थ शक्ति माता कुष्मांडा की उपासना की जाती है, जिस में बुध ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के पंचम बीज "मुं" से माता दुर्गा की पंचम शक्ति माँ स्कंदमाता की उपासना की जाती है, जिस में बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के षष्ठ बीज "डां" से माता दुर्गा की षष्ठ शक्ति माता कात्यायनी की उपासना की जाती है, जिस में शुक्र ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के सप्तम बीज "यैं" से माता दुर्गा की सप्तम शक्ति माता कालरात्रि की उपासना की जाती है, जिस में शनि ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के अष्टम बीज "विं" से माता दुर्गा की अष्टम शक्ति माता महागौरी की उपासना की जाती है, जिस में राहु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के नवम बीज "चैं" से माता दुर्गा की नवम शक्ति माता सिद्धीदात्री की उपासना की जाती है,जिस में केतु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र साधना विधीः-

विनियोगः

ll ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्य ब्रम्हाविष्णुरुद्राऋषयःगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दांसी, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासर स्वत्यो देवताः, ऐं बीजम, ह्रीं शक्तिः,क्लीं कीलकम श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासर स्वत्यो प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ll

विलोम बीज न्यासः-

ॐ च्वैं नमः गूदे ।

ॐ विं नमः मुखे ।

ॐ यैं नमः वाम नासा पूटे ।

ॐ डां नमः दक्षिण नासा पुटे ।

ॐ मुं नमः वाम कर्णे ।

ॐ चां नमः दक्षिण कर्णे ।

ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे ।

ॐ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे ।

ॐ ऐं ह्रीं नमः शिखायाम ॥

(विलोम न्यास से सर्व दुखो का नाश होता है, संबन्धित मंत्र उच्चारण के साथ दाहिने हाथ की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ब्रम्हारूप न्यासः-

ॐ ब्रम्हा सनातनः पादादी नाभि पर्यन्तं मां पातु ॥

ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धी पर्यन्तं नित्यं मां पातु ॥

ॐ रुद्र स्त्रीलोचनः विशुद्धेर्वम्हरंध्रातं मां पातु ॥

ॐ हं सः पादद्वयं मे पातु ॥

ॐ वैनतेयः कर इयं मे पातु ॥

ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु ॥

ॐ गजाननः सर्वाड्गानी मे पातु ॥

ॐ सर्वानन्द मयोहरीः परपरौ देहभागौ मे पातु ॥

(ब्रम्हारूपन्यास से सभी मनोकामनाये पूर्ण होती है, संबन्धित मंत्र उच्चारण के साथ दोनों हाथो की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ध्यान मंत्रः-

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छुलं भूशुण्डीम शिरः शड्ख संदधतीं करैस्त्रीनयनां सर्वाड्ग भूषावृताम ।

नीलाश्मद्युतीमास्यपाददशकां सेवे महाकालीकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधु कैटभम ॥

माला पूजनः- जाप आरंभ करने से पूर्व ही इस मंत्र से माला का पुजा कीजिये, इस विधि से आपकी माला भी चैतन्य हो जाती है.

"ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः"

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिनी ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहनामी दक्षिणे करे ।जपकाले च सिद्ध्यर्थ प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देही देही सर्वमन्त्रार्थसाधिनी साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

अब आप चैतन्य माला से नवार्ण मंत्र का जाप करे-

नवार्ण मंत्र :-

ll ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ll

नवार्ण मंत्र की सिद्धि 9 दिनो मे 1,25,000 मंत्र जाप से होती है, परंतु आप ऐसे नहीं कर सकते है तो रोज 1, 3, 5, 7, 9, 11, 21, 51, 108. इत्यादि माला मंत्र जाप ही कर सकते है, इस विधि से सारी इच्छाये पूर्ण होती है, दुख कम होते है और धन की वसूली भी सहज ही हो जाती है। हमे शास्त्र के हिसाब से यह सोलह प्रकार के न्यास देखने मिलती है जैसे ऋष्यादी, कर, हृदयादी, अक्षर, दिड्ग, सारस्वत, प्रथम मातृका, द्वितीय मातृका, तृतीय मातृका, षडदेवी, ब्रम्हरूप, बीज मंत्र, विलोम बीज, षड, सप्तशती, शक्ति जाग्रण न्यास और बाकी के 8 न्यास गुप्त न्यास नाम से जाने जाते है, इन सारे न्यासो का अपना एक अलग ही महत्व होता है, उदाहरण के लिये शक्ति जाग्रण न्यास से माँ सुक्ष्म रूप से साधको के सामने शीघ्र ही आ जाती है और मंत्र जाप की प्रभाव से प्रत्यक्ष होती है और जब माँ चाहे किसी भी रूप मे क्यू न आये हमारी कल्याण तो निश्चित ही कर देती है।

आप नवरात्री एवं अन्य दिनो मे भी इस मंत्र के जाप कर सकते है। मंत्र जाप काली हकीक माला अथवा रुद्राक्ष माला से ही किया करे।

।। जय शंकरसुवन केशरीनन्दन महावीर हनुमान ।।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, हनुमान जी भगवान शिव का अवतार हैं, जिन्होंने भगवान राम की सेवा के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, हनुमान जी को कई अन्य देवताओं से भी विशेष वरदान मिले, जैसे इन्द्र ने उन्हें किसी भी शस्त्र से अछूते रहने का वरदान दिया। हनुमान जी की रामभक्ति की मिसाल और उनके अद्वितीय साहस ने उन्हें श्रीराम की सेना का प्रमुख योद्धा बना दिया।

रामायण में हनुमान जी का किरदार बेहद दिलचस्प और प्रेरणादायक है। ये एक ऐसा अवतार हैं, जिन्होंने आम जन के लिए कई प्रेरणादायक किस्से और चरित्र स्थापित किये हैं। हनुमान जी को जितना समझा जाए, उतना कम है। एक सरल भक्त, एक चंचल मस्तिष्क, एक वीर योद्धा और एक समर्पित सेवक और न जाने क्या-क्या।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हनुमान जी या तो शिव का अंश हैं या फिर वो शिव का अवतार। लेकिन शिवजी तो महादेव हैं। फिर उन्होंने भगवान विष्णु का सेवक होना क्यों चुना-

पौराणिक मान्यताओं की मानें, तो भगवान विष्णु जब राम अवतार में पृथ्वी पर आए, तो उन्हें एक ऐसे परमभक्त और सहयोगी की आवश्यकता थी जो हर परिस्थिति में उनकी सहायता कर सके। चूँकि शिवजी स्वयं श्रीराम के अनन्य भक्त हैं, इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि वे हनुमान के रूप में जन्म लेंगे और श्रीराम की सेवा करेंगे।

हनुमान जी ने रामभक्ति की सर्वोच्च मिसाल पेश की और श्रीराम की सेना के प्रमुख योद्धा बनकर लंका विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई मान्यताओं में ये भी कहा जाता है कि शिवजी त्रिकालदर्शी हैं और उन्होंने ये देख लिया था कि भगवान राम को पृथ्वी का कल्याण करने के लिए एक सहायक की आवश्यकता पड़ने वाली है। इसलिए, उन्होंने अपने रुद्रावातारों में से ग्यारहवां रुद्र अवतार यानि हनुमान के रूप में अवतार लेने का फैसला किया।

शिव पुराण के अनुसार, एक बार माता पार्वती ने शिवजी से पूछा कि ₹प्रभु !आप श्रीराम के इतने बड़े भक्त हैं, तो क्या कभी आपको उनकी सेवा का अवसर मिलेगा?₹ तब शिवजी ने उत्तर दिया ₹राम अवतार में, मैं भी एक विशेष रूप में प्रकट होकर उनकी सेवा करूँगा।₹ यही कारण था कि जब भगवान राम का जन्म हुआ, तब शिवजी ने हनुमान जी के रूप में अवतार लिया।

पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी को अमरता का वरदान भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु, भगवान शिव, माता सीता और स्वयं श्रीराम सहित कई देवताओं से प्राप्त हुआ था। ब्रह्मा जी ने हनुमान जी को अजेयता (किसी से पराजित न होने) और मृत्यु से मुक्ति का वरदान दिया। हनुमान जी भगवान शिव के ही अवतार माने जाते हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें चिरंजीवी (अमर) होने का आशीर्वाद दिया।

जब श्रीराम जी का पृथ्वी से प्रस्थान करने का समय आया, तब उन्होंने हनुमान जी को कलियुग तक धरती पर रहने और अपने भक्तों की सहायता करने का आशीर्वाद दिया। जब हनुमान जी माता सीता की तलाश में लंका गए थे, तो उन्हें बहुत तलाश करने पर भी माता सीता नहीं मिली थी। उन्हें लगा कि माता सीता शायद जीवित नहीं। लेकिन जब उन्होंने एक बार फिर से प्रभु राम का नाम लेकर माता सीता को तलाशना शुरू किया, तो वो उन्हें अशोक वाटिका में मिल गयी। लेकिन तब तक हनुमान जी भूख-प्यासे उन्हें तलाशते रहे थे। इसी कारण माता सीता ने हनुमान जी को कभी भूख-प्यास न लगने और अजेय रहने का वरदान दिया। यमराज ने भी हनुमान जी को मृत्यु से अजेयता प्रदान की।

अमरता के अलावा भी हनुमान जी को कई अन्य देवताओं से भी कई वरदान मिले थे। जैसे कि, इन्द्र ने वज्र से प्रहार के बाद हनुमान जी को किसी भी शस्त्र से अछूते रहने का वरदान दिया था, वहीं वरुणदेव ने जल में न डूबने का आशीर्वाद दिया था और अग्निदेव ने हनुमान जी को अग्नि से न जलने का वरदान दिया।

सालासर बालाजी महाराज – आस्था का अद्भुत केंद्र

स्थान – राजस्थान के चुरू ज़िले में स्थित है यह प्रसिद्ध मंदिर।

विशेषता – यहां हनुमान जी की मूर्ति दाढ़ी-मूंछ वाली है, जो अन्यत्र नहीं मिलती।

श्रद्धा का केंद्र – हर साल लाखों भक्त यहाँ अपनी मनोकामनाओं के साथ दर्शन के लिए आते हैं।

चमत्कारी स्थल – मान्यता है कि सच्चे मन से मांगी गई हर मुराद यहाँ जरूर पूरी होती है।

हनुमान जयंती मेला – साल में एक बार लगता है विशाल मेला, जहाँ गूंजता है "जय श्री बालाजी" का नारा।

भक्ति मंत्र –

"जो आवे शरण तुम्हारी, ताकी बिगड़ी बने हमारी!"

जय श्री बालाजी महाराज की जय!

मानव मन की नकारात्मक ऊर्जा.....

मानव मन की नकारात्मक ऊर्जा, जैसे क्रोध और ईर्ष्या, समस्याओं और रोगों का मूल कारण है। धर्म हमें इन प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने और सकारात्मक कर्म करने का संदेश देते हैं। सकारात्मक विचार प्रगति लाते हैं, जबकि नकारात्मक विचार पतन की ओर ले जाते हैं। संतुलित जीवन के लिए आंतरिक ऊर्जा को सही दिशा देना आवश्यक है।

मानव मन में उत्पन्न होने वाली ऋणात्मक ऊर्जा ही अधिकतर समस्याओं और रोगों की मूल जड़ है। यह नकारात्मक ऊर्जा जैसे क्रोध, अत्यधिक महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, अहंकार, दंभ, हिंसा, दूसरों को पीड़ा पहुंचाने की प्रवृत्ति हमारे ही विनाश का कारण बनती है। सभी धर्मों का मूल संदेश यही है कि मनुष्य अपनी ऋणात्मक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखे और जीवन में अधिक से अधिक सकारात्मक यानी धनात्मक कर्मों को अपनाए। अनुभवों से परिपक्व हर व्यक्ति यही कहेगा कि सकारात्मक विचार और कार्य आपको प्रगतिशील और सफल बनाएंगे, जबकि नकारात्मक प्रवृत्तियां धीरे-धीरे आपको पतन के रास्ते पर ले जाएंगी।

अगर जीवन को संतुलित, सुखद और समृद्ध बनाना है तो स्वयं के भीतर की ऊर्जा को पहचान

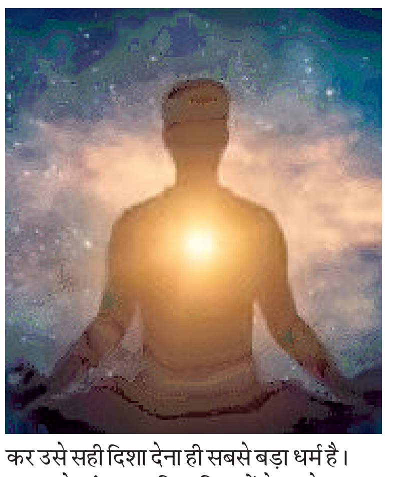

कर उसे सही दिशा देना ही सबसे बड़ा धर्म है। मनुष्य के अंदर मानसिक विकारों के आने पर या मानसिक स्थिति संतुलित न होने पर उसके शरीर पर विभिन्न प्रकार के विकारों के लक्षण उत्पन्न हो जाते है। मनुष्य जैसा सोचता है, जैसा कर्म करता है वैसा ही प्रभाव उसके शरीर के विभिन्न अंगों पर पड़ता है। अगर मनुष्य के कार्य एवं मानसिक स्थिति धनात्मक हो तो शरीर के अंदर रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है और जीवन शक्ति लंबे समय तक ऊर्जावान बनी रहती है। स्वस्थ मानसिकता के अभाव में हम चाहें कितना भी अच्छा भोजन करें, कितना भी व्यायाम और शरीर की देखभाल करें हम रोग मुक्त नहीं हो सकते।

धनात्मक ऊर्जा का तात्पर्य मनुष्य के अंदर उठने वाले अच्छे भावों से है। जैसे कि दूसरों के प्रति संवेदनशीलता, प्रेम, आचार-व्यवहार में सीधापन, सत्य बोलने की आदत, जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण, व्यर्थ का घमंड न होना, हंसमुख होना इत्यादि। ऐसा देखा गया है कि अत्यधिक क्रोध और हिंसक विचारों वाले व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की गंभीर समस्याएं आ घेरती हैं जैसे कि अत्यधिक अम्ल बनना, रक्त का दबाव बढ़ जाना, किडनी संबंधी समस्याएं, कब्ज, यकृत में दोष आ जाना, अनिद्रा इत्यादि। व्यवसाय को लेकर अत्यधिक चिंतित रहना, जुआ, सट्टा खेलना, गलत तरीके से अर्थ कमाना इत्यादि कार्यों के कारण ब्लड-प्रेशर, त्वचा रोग, हार्ट अटैक जैसे रोग हो सकते हैं। अत्यधिक भोग और विलासितापूर्ण जीवन जीना, कर्मेन्द्रियों का इस्तेमाल न करना, सदैव आलस्यमय रहना, गरिष्ठ और विलासितापूर्ण भोजन करने से मधुमेह जैसे रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

ध्यान से कल्याण...!

नवरात्रि शक्ति-पूजा का हैं उत्सव,
इस पर्व को समझना हैं महोत्सव।
पहले-पहल शक्ति को हैं समझना,
शक्ति क्या? है, इसे जागृत करना।

इस तत्व को जीवन में आत्मसात,
यदि हम करें फिर बन जाए बात।
काल प्रवाह में बाह्य प्रतीक बचते,
उनके भीतर के मूल तत्व बिसरते।

मृत परंपराएं आजीवन ढोते रहते,
ये परंपराएं बुरी नहीं,आवश्यक हैं।
परंपरा शरीर में मूल-तत्व के प्राण,
जीवन 'अमूल्य' ध्यान से कल्याण।

संजय एम तराणेकर

हनुमान जी, हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण देवता हैं

महाकाव्य रामायण में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये भक्त हैं और भगवान श्रीराम के प्रमुख सेवक रहे हैं। हनुमान जी को पवनपुत्र हनुमान, मारुति, अंजनीपुत्र, वायुपुत्र भी कहा जाता है। वे वानर रूप में होते हैं, लेकिन उनकी दिव्य शक्तियाँ उन्हें अन्य सभी देवताओं से भिन्न बनाती हैं।

हनुमान जी का प्रमुख कार्य भगवान श्रीराम की सेवा करना था। उन्होंने अपनी अद्वितीय भक्ति, वीरता, और सेवाभाव के माध्यम से भगवान श्रीराम की सहायता की और उनकी अनगिनत कठिनाइयों को आसानी से पार किया। हनुमान जी की भक्ति और सेवाभावना अद्वितीय हैं।

उनका हृदय पूरी तरह से भगवान श्रीराम में समर्पित है। वे भक्तों को भगवान के प्रति प्रेम और आस्था की शक्ति प्रदान करते हैं। हनुमान जी की कहानी वानर सेना के महान सेनानायक के रूप में रामायण में प्रस्तुत है। उन्होंने अशोकवाटिका में सीता माता को ढूंढने के लिए अपने अद्वितीय बल और वीरता का प्रदर्शन किया। हनुमान जी को अनगिनत शक्तियाँ प्राप्त हैं, जैसे कि अमरत्व, व्योमकाय, अनिमा, गरिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्तिगम्य, इन्द्रिया-संग्राहक, इत्यादि।

हनुमान जी का आराधना का विशेष महत्व है, और हनुमान चालीसा, हनुमान आरती, और रामायण का पाठ करने से उनकी कृपा मिलती है। हनुमान जी एक अद्भुत देवता हैं, जो विश्व में भक्तों को शक्ति, साहस, और भगवान की प्रेम भावना से युक्त करते हैं।

भगवान शिव से हनुमान जी को आशीर्वाद मिलने का कारण विशेष है, जो हिन्दू धर्म में भक्ति और श्रद्धा से जुड़े हैं। हनुमान जी भगवान शिव के एक गुणी भक्त थे, उन्होंने अपनी पूरी भक्ति और सेवा के माध्यम से भगवान शिव को प्रसन्न किया था। इससे हनुमान जी को शिव भगवान के कृपादृष्टि का अद्भुत आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

हनुमान जी ब्रह्मचारी थे और उन्होंने अपनी आत्मा को भगवान की सेवा में समर्पित किया। उनकी अद्वितीय तपस्या और वीरता ने उन्हें भगवान शिव के प्रति अद्वितीय आसक्ति की प्राप्ति में सहायक बनाया।

हनुमान जी भगवान राम के प्रमुख भक्त थे और उनकी अद्वितीय राम भक्ति ने उन्हें अद्वितीय आत्मा के साथ भगवान शिव के साक्षात्कार की अनुभूति कराई। इससे उन्हें शिव भगवान के आशीर्वाद की पूर्णता मिली।

हनुमान जी भगवान शिव के प्रति अत्यंत प्रेम और विनम्रता के साथ रहते थे। उनकी शिव भगवान के प्रति अनबंधित प्रेम ने उन्हें भगवान के कृपादृष्टि में लाने में सहायक बनाया।

रामायण में वर्णित है कि भगवान शिव और पार्वती ने हनुमान को अपने आशीर्वाद से सम्पन्न किया। उन्होंने हनुमान को अद्वितीय बुद्धि, वीरता, और भगवान राम के सेवा में समर्पित रहने की शक्ति दी। इस प्रकार, हनुमान जी ने अपनी पूरी भक्ति, सेवा, और प्रेम भावना के साथ भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त किया जो उन्हें अद्वितीय गुणों से सम्पन्न बना दिया।

9 औषधियों के पेड़ पौधे जिन्हें नवदुर्गा कहा गया है

(1) शैलपुत्री (हरड़) कई प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है.यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है यह पथया, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी सात प्रकार की होती है

(2) ब्रह्मचारिणी (ब्राह्मी) ब्राह्मी आयु व याददाश्त बढ़ाकर, रक्तविकारों को दूर कर स्वर को मधुर बनाती है.इसलिए इसे सरस्वती भी कहा जाता है

(3) चंद्रघंटा (चंदुसूर) यह एक ऐसा पौधा है जो धनिए के समान है. यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है इसलिए इसे चर्महंती भी कहते हैं

(4) कूष्मांडा (पेठा) इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है.इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं. इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो रक्त विकार दूर कर पेट को साफ करने में सहायक है मानसिक रोगों में यह अमृत समान है

(5) स्कंदमाता (अलसी) देवी स्कंदमाता औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं. यह वात, पित्त व कफ रोगों की नाशक औषधि है.इसमे फाइबर की मात्रा ज्यादा होने से इसे सभी को भोजन के पश्चात काले नमक सेभूंजकर प्रतिदिन सुबह शाम लेना चाहिए यह खून भी साफ करता है

(6) कात्यायनी (मोइया) देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका व अम्बिका.इसके अलावा इन्हें मोइया भी कहते हैं.यह औषधि कफ, पित्त व गले के रोगों का नाश करती है

(7) कालरात्रि (नागदौन) यह देवी नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती हैं.यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी और मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने वाली औषधि है.यह पाइल्स के लिये भी रामबाण औषधि है इसे स्थानीय भाषा जबलपुर में दूधी कहा जाता है

(8) महागौरी (तुलसी) तुलसी सात प्रकार की होती है सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरूता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र. ये रक्त को साफ कर ह्वदय रोगों का नाश करती है. एकादशी को छोडकर प्रतिदिन सुबह ग्रहण करना चाहिए

(9) सिद्धिदात्री (शतावरी) दुर्गा का नौवां रूप सिद्धिदात्री है जिसे नारायणी शतावरी कहते हैं. यह बल, बुद्धि एवंविवेक के लिए उपयोगी है.विशेषकर प्रसूताओं (जिन माताओं को ऑपरेशन के पश्चात अथवा कम दूध आता है) उनके लिए यह रामबाण औषधि है इसका सेवन करना चाहिए

आइए हम सभी इस नवरात्रि के पावन अवसर पर इन प्राकृतिक आयुर्वेदिक औषधियों का सेवन करें।

विटामिन B12 और विटामिन D की कमी: कारण, लक्षण और आयुर्वेदिक समाधान

भारत में क्यों आम होती जा रही है यह समस्या?

आज के आधुनिक और तेजी से बदलते जीवनशैली में विटामिन B12 और विटामिन D की कमी एक सामान्य समस्या बनती जा रही है। रिसर्च के अनुसार भारत की लगभग 47% आबादी इन दो ज़रूरी विटामिन्स की कमी से प्रभावित है। खास बात यह है कि यह समस्या सिर्फ शाकाहारियों में ही नहीं, मांसाहारियों और फलाहारियों में भी पाई जा रही है।

मुख्य कारण: पोषण की कमी या आदतों की गलती?

1. विटामिन B12 शरीर में कुछ विशेष सूक्ष्म जीवाणुओं (Bacteria) की मदद से बनता है। लेकिन आजकल के अत्यधिक स्वच्छता और केमिकल-आधारित जीवनशैली ने इन अच्छे बैक्टीरिया का विनाश कर दिया है।

2. रोज़ सुबह टूथपेस्ट, डेटॉल, शैम्पू जैसे रसायनों का अत्यधिक प्रयोग

3. केमिकल युक्त पानी (RO Water) और रासायनिक खेती

4. कीटाणु मुक्त भोजन और स्टोरेज में Wax और Preservatives

5. धूप से डर और लगातार AC में रहना

ये सभी कारण हमारे शरीर को जरूरी Natural Exposure से वंचित करते हैं, जिससे विटामिन B12 और D का स्तर धीरे-धीरे कम होता चला जाता है।

पहचानें लक्षण, क्या आपको भी हो रही है यह कमी?

अगर आपके शरीर में इन विटामिन्स की कमी है, तो आप निम्न लक्षणों का अनुभव कर सकते हैं

1. कमजोरी और थकान

2. बालों का गिरना या जल्दी सफेद होना

3. हाथ-पैर में सुन्नता या जलन

4. भूख न लगना या गैस की समस्या

5. उंगलियों या जोड़ों में दर्द

6. हल्की सी मात्रा में खाना खाने पर भी पेट भारी लगना

इन लक्षणों के दिखने पर तुरंत रक्त परीक्षण (Blood Test) कराना चाहिए।

विटामिन B12 और D की कमी का प्राकृतिक और आयुर्वेदिक समाधान

1. सही खानपान की शुरुआत करें

1. हरी पत्तेदार सब्ज़ियां जैसे पालक, मेथी, चौलाई

2. अंकुरित अनाज, चना, मूँग

3. ताज़े फल और सलाद

4. स्पिरुलिना और नोनी जूस जैसे प्राकृतिक पूरक

5. सोया दूध, जिसे घर पर बनाना सबसे अच्छा रहता है

6. अंजीर और खजूर, जिन्हें यीस्ट के साथ भिगोकर सेवन करें

2. धूप का सेवनः- सुबह 9 से 11 बजे तक की धूप में 20-30 मिनट बिताएं। स्किन पर सीधे धूप पड़नी चाहिए, क्रीम या सनस्क्रीन के बिना।

3. आदतों में बदलाव

1. अत्यधिक Sanitization से बचें

2. साबुन, केमिकल्स और RO पानी का सीमित प्रयोग करें

3. ऑर्गेनिक खाना और स्थानीय फल-सब्जियों को प्राथमिकता दें

4. कीटाणुओं और मिट्टी से थोड़ा संपर्क बनाएं

परहेज़ और सावधानी अगर विटामिन B12 का स्तर बहुत कम (जैसे कि 19) हो जाए तो कुछ समय के लिए डॉक्टरी सलाह के अनुसार दवाइयां या इंजेक्शन लेना अनिवार्य हो जाता है लेकिन ध्यान रहे, अगर आप दिए गए आयुर्वेदिक और प्राकृतिक उपायों को नियमित रूप से नहीं अपनाते हैं, तो सुधार की संभावना कम हो जाती है।

निष्कर्ष विटामिन B12 और D की कमी एक गंभीर लेकिन नियंत्रण योग्य समस्या है। इसके लिए न तो केवल एलोपैथिक दवाएं जरूरी हैं और न ही सिर्फ खाने का ध्यान। ज़रूरत है एक संतुलित जीवनशैली, सजीव (Natural) आहार और आयुर्वेदिक दृष्टिकोण की।

अगर आप भी इन लक्षणों से परेशान हैं, तो आज ही अपना लाइफस्टाइल बदलें। समय पर जांच कराएं और आयुर्वेदिक उपायों को अपनाएं।

राउरकेला के समग्र विकास हेतु आर एस पी का ध्यानाकर्षण, विकास की पहल पर शीघ्र कार्रवाई हो

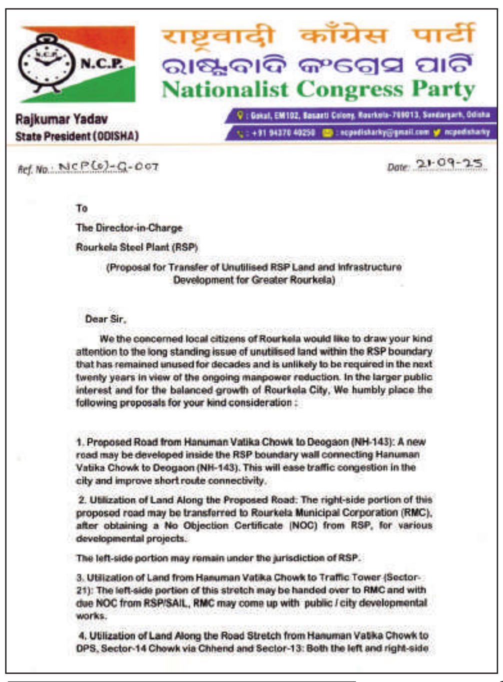
राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी
Nationalist Congress Party
Rajkumar Yadav
State President (ODISHA)
Gokul, EM102, Basanti Colony, Rourkela-769013, Sundargarh, Odisha
+91 94370 40250 ncpodisharky@gmail.com ncpodisharky

Ref. No.: NCP(O)-G-007 Date: 21-09-25

To
The Director-in-Charge
Rourkela Steel Plant (RSP)

(Proposal for Transfer of Unutilised RSP Land and Infrastructure Development for Greater Rourkela)

Dear Sir,

We the concerned local citizens of Rourkela would like to draw your kind attention to the long standing issue of unutilised land within the RSP boundary that has remained unused for decades and is unlikely to be required in the next twenty years in view of the ongoing manpower reduction. In the larger public interest and for the balanced growth of Rourkela City, We humbly place the following proposals for your kind consideration :

1. Proposed Road from Hanuman Vatika Chowk to Deogaon (NH-143): A new road may be developed inside the RSP boundary wall connecting Hanuman Vatika Chowk to Deogaon (NH-143). This will ease traffic congestion in the city and improve short route connectivity.

2. Utilization of Land Along the Proposed Road: The right-side portion of this proposed road may be transferred to Rourkela Municipal Corporation (RMC), after obtaining a No Objection Certificate (NOC) from RSP, for various developmental projects.

The left-side portion may remain under the jurisdiction of RSP.

3. Utilization of Land from Hanuman Vatika Chowk to Traffic Tower (Sector-21): The left-side portion of this stretch may be handed over to RMC and with due NOC from RSP/SAIL, RMC may come up with public / city developmental works.

4. Utilization of Land Along the Road Stretch from Hanuman Vatika Chowk to DPS, Sector-14 Chowk via Chhend and Sector-13: Both the left and right-side

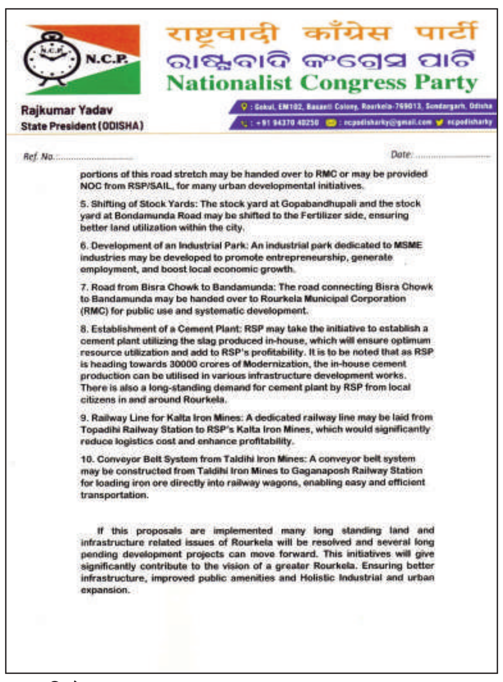
राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी
Nationalist Congress Party
Rajkumar Yadav
State President (ODISHA)

Ref. No. Date:

portions of this road stretch may be handed over to RMC or may be provided NOC from RSP/SAIL, for many urban developmental initiatives.

5. Shifting of Stock Yards: The stock yard at Gopabandhupali and the stock yard at Bondamunda Road may be shifted to the Fertilizer side, ensuring better land utilization within the city.

6. Development of an Industrial Park: An industrial park dedicated to MSME industries may be developed to promote entrepreneurship, generate employment, and boost local economic growth.

7. Road from Bisra Chowk to Bandamunda: The road connecting Bisra Chowk to Bandamunda may be handed over to Rourkela Municipal Corporation (RMC) for public use and systematic development.

8. Establishment of a Cement Plant: RSP may take the initiative to establish a cement plant utilizing the slag produced in-house, which will ensure optimum resource utilization and add to RSP's profitability. It is to be noted that as RSP is heading towards 30000 crores of Modernization, the in-house cement production can be utilised in various infrastructure development works. There is also a long-standing demand for cement plant by RSP from local citizens in and around Rourkela.

9. Railway Line for Kalta Iron Mines: A dedicated railway line may be laid from Topadihi Railway Station to RSP's Kalta Iron Mines, which would significantly reduce logistics cost and enhance profitability.

10. Conveyor Belt System from Taldihi Iron Mines: A conveyor belt system may be constructed from Taldihi Iron Mines to Gaganaposh Railway Station for loading iron ore directly into railway wagons, enabling easy and efficient transportation.

If this proposals are implemented many long standing land and infrastructure related issues of Rourkela will be resolved and several long pending development projects can move forward. This initiatives will give significantly contribute to the vision of a greater Rourkela. Ensuring better infrastructure, improved public amenities and Holistic Industrial and urban expansion.

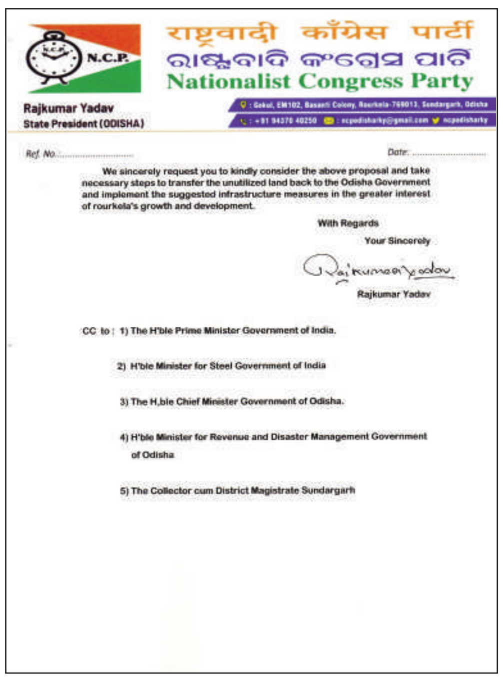
राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी
Nationalist Congress Party
Rajkumar Yadav
State President (ODISHA)

Ref. No. Date:

We sincerely request you to kindly consider the above proposal and take necessary steps to transfer the unutilized land back to the Odisha Government and implement the suggested infrastructure measures in the greater interest of rourkela's growth and development.

With Regards
Your Sincerely
Rajkumar Yadav

CC to : 1) The H'ble Prime Minister Government of India.
2) H'ble Minister for Steel Government of India
3) The H,ble Chief Minister Government of Odisha.
4) H'ble Minister for Revenue and Disaster Management Government of Odisha
5) The Collector cum District Magistrate Sundargarh

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला, सुंदरगढ़ - ओड़िशा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज प्रधानमंत्री भारत सरकार, इस्पात मंत्री भारत सरकार, मुख्यमंत्री ओड़िशा, राजस्व मंत्री ओड़िशा एवं जिलापाल सुंदरगढ़ को ज्ञापन भेजकर राउरकेला एवं आसपास के क्षेत्र के विकास हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए।

दर्शाये गए मुख्य बिंदु-

नई सड़क प्रस्ताव- हनुमान वाटिका चौक से देवगांव (एनएच-143) तक आरएसपी सीमा दीवार के अंदर सड़क निर्माण, जिससे यातायात दबाव घटेगा और शहर को बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी।

भूमि उपयोग-सड़क किनारे के भू-भाग को आरएमसी को एनओसी के साथ हस्तांतरित कर शहरी विकास कार्यों हेतु उपयोग करने का प्रस्ताव।स्टॉक यार्ड स्थानांतरण-गोपाबंधुपाली व बोन्डामुंडा रोड के स्टॉक यार्ड को उर्वरक पक्ष की ओर स्थानांतरित करने की अनुशंसा।

औद्योगिक पार्क - एमएसएमई उद्योगों हेतु औद्योगिक पार्क स्थापित कर स्थानीय रोजगार व उद्यमिता को बढ़ावा।बिसरा चौक–बोन्डामुंडा सड़कः सड़क को आरएमसी को सौंपकर व्यवस्थित विकास की मांग।

सीमेंट प्लांट स्थापना-आरएसपी स्लैग का उपयोग कर सीमेंट प्लांट स्थापित करे, जिससे स्थानीय मांग भी पूरी होगी और संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होगा।रेल कनेक्टिविटी - टोपाडीही से कल्टा आयरन माइंस तक समर्पित रेलवे लाइन।

तालडीही आयरन माइंस से गगनापोश तक कन्वेयर बेल्ट सिस्टम।

डॉ. यादव ने कहा कि ये प्रस्ताव न केवल राउरकेला बल्कि पूरे पश्चिमी ओड़िशा के सामाजिक-आर्थिक विकास में मील का पत्थर सिद्ध होंगे।

श्री धार्मिक लीला कमेटी द्वारा गणेश पूजा के साथ रामलीला मंचन की शुरुआत

मुख्य संवाददाता

नई दिल्लीः लालकिला मैदान स्थित माधवदास पार्क में श्री धार्मिक लीला कमेटी द्वारा सोमवार को भव्य रामलीला मंचन की शुरुआत की गई। शुभारंभ गणेश वंदना एवं भगवान गणेश की एकदंत कथा के मंचन के साथ हुआ।

धीरज धर गुप्ता (महासचिव) बताते हैं कि इस साल 102 साल पूरे होने पर इस साल की सभी झलकियों और तैयारियों को साझा किया।

विशेष मेहमान जो इसमें शामिल हुए भाजपा महासचिव दुष्यंत गौतम, योगेंद्र चंदोलिया, विजेंद्र गुप्ता, अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा , शिल्पा रायज़ादा ,विनय वर्मा विधायक (उत्तर प्रदेश विधान सभा), स्पेशल कमिश्नर अनिल शुक्ला और दिल्ली पुलिस के जॉइंट कमिश्नर मधुप वर्मा मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। मंचन के दौरान गणेश वंदना की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया और रामलीला को भव्य बना दिया।

श्री धार्मिक लीला कमिटी (रजि.), लाल किला मैदान के सभी सदस्यों आमंत्रित हैंऔर अपना समय रामलीला के लिए समर्पित किया और निम्नलिखित नाम हैं: धीरज धर गुप्ता, सुरेश गोयल, प्रदीप सरन, महेश गुप्ता, राकेश गुप्ता, रजत गुप्ता, अतुल गुप्ता, कमल कांत जैन, सतीश गर्ग, ब्रहम सोनी, मनीष गुप्ता, सुनील गुप्ता, मोहम्मद उस्मान, राजेश गुप्ता, सुशील जैन, ब्रहम सोनी, ओम किशन गुप्ता, अभिषेक गोयल, सोनल गुप्ता, शिवम गुप्ता, विकास गुप्ता, विनय शर्मा, चमन शर्मा ,उत्सव शर्मा, प्रवक्ता रवि जैन समेत समिति के पदाधिकारी और कलाकार शामिल हुए।

समिति पदाधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष रामलीला के मंचन में पारंपरिक प्रसंगों के साथ-साथ तकनीकी प्रयोगों का भी विशेष ध्यान रखा गया है, ताकि दर्शकों को अधिक आकर्षक और जीवंत अनुभव मिल सके।

प्रेम पच्चीसा (भाग 27)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

ग्रामीण क्षेत्रों में समस्याओं के समाधान के लिए रोहन और उसकी टीम के साथी संबंधित विभागों को लिखे पत्रों के संबंध जब कार्यवाही / प्रगति कि जानकारी लेने जाते हैं तो सभी जगह निराशा ही हाथ लगती है । शाम को संस्था के ऑफिस में सभी बैठकर चर्चा करते हैं कि है सरकारी फंड और परियोजनाओं में रिश्वत की मांग एक गंभीर मामला/मुद्दा है, जो विकास कार्यों को प्रभावित करता है। रोहन और उनकी टीम जैसी स्थितियों में, रिश्वतखोर अधिकारियों से निपटने के लिए कानूनी और सुरक्षित तरीके अपनाते हैं । सबसे पहले, प्रमाण (जैसे रिकॉर्डेड बातचीत, ईमेल, या गवाह) इकट्ठा करें, लेकिन बिना किसी गैर-कानूनी तरीके से फिर, आधिकारिक प्लेटफॉर्म पर शिकायत दर्ज़ करते हैं। इस संबंध में वे पहले सेंट्रल विजिलेंस कमीशन (CVC): भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतें ऑनलाइन, फोन या मोबाइल से दर्ज करते हैं ।

सर्वप्रथम केंद्र स्तर के कामों के लिए CPGRAMS (केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली): केंद्र या राज्य सरकार के विभागों के ख़िलाफ़ शिकायत फाइल करते हैं . कुछ साथी लोकपालः प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट के तहत शिकायत दर्ज़ करते हैं । दूसरे राज्य स्तर पर एंटी-करप्शन ब्रांच (हेल्पलाइन 1031), राज्य में विजिलेंस एंड एंटी-करप्शन डायरेक्टोरेट (टोल-फ्री 1800-345-3767) पर अपनी शिक़ायत करके सभी साथियों को समझाता है कि शिकायत गुमनाम रखने का विकल्प चुनें ताकि ख़तरा महसूस न हो।साथ ही सोशल मीडिया या पब्लिक प्लेटफॉर्म पर पोस्ट सार्वजनिक करने से पहले सावधानी बरतें, क्योंकि इससे कानूनी मुद्दे हो सकते हैं। इसके बजाय, एंटी-करप्शन टास्क फोर्स से संपर्क करें। CBI (सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन) से संपर्क करें यदि मामला केंद्रीय स्तर का है।

माया बताती है कि रिश्वत दिए बिना काम करवाने के लिए RTI (राइट टू इंफॉर्मेशन) का उपयोग करें, ताकि फंड स्वीकृति की स्थिति जान सकें। वैकल्पिक रूप से, उच्च अधिकारियों या विधायक/सांसद से संपर्क करें।सामाजिक संगठन भ्रष्टाचार विरोधी अभियानों में मदद कर सकते हैं। वे कानूनी सहायता, जागरूकता और समर्थन प्रदान करते हैं। साथ ही नए सदस्यों को जानकारी देते हुए रोहन ने बताया कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडियाः ग्रामीण भ्रष्टाचार पर काम करते हैं; उनसे संपर्क करें। साथ ही कॉमनवेल्थ ह्यूमन राइट्स इनिशिएटिव (CHRI) या एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) वे भ्रष्टाचार के मामलों में मार्गदर्शन देते हैं।

सुधा जी ने कहा कि लोकल NGOs जैसे ग्रामीण विकास पर काम करने वाली संस्थाएं (उदाहरणः PRIA - पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया) या एंटी-करप्शन हेल्पलाइन चलाने वाली ग्रुप्स। इनसे संपर्क करने के लिए, उनकी वेबसाइट्स पर जाएं या हेल्पलाइन नंबर इस्तेमाल करें। वे टीम को ट्रेनिंग भी दे सकती हैं कि कैसे भ्रष्टाचार का सामना करें। माया ने समझाया कि याद रखें, भ्रष्टाचार की रिपोर्टिंग से सिस्टम सुधार होता है, लेकिन व्यक्तिगत सुरक्षा प्राथमिकता है। यदि मामला गंभीर है, तो पुलिस या वकील से तुरंत मदद लें। बैठक समाप्त हो रही थी कि रोहन के सेल फोन पर सरपंच ने बताया कल स्थानीय विधायक रामलाल जी कल वाला प्रस्तावित गाँव का दौरा करने वाले हैं,,

(क्रमशः भाग 28)

विद्योतमा फाउंडेशन, दिल्ली की शाखा द्वारा काव्य गोष्ठी का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत विद्योतमा फाउंडेशन दिल्ली शाखा की ओर से ऑनलाइन काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया ।यह काव्य गोष्ठियां संस्था की सभी शाखाओं द्वारा आयोजित की जा रहीं हैं। इस कविगोष्ठी में दिल्ली और दूसरे प्रदेशों के कवियों ने अपनी सुंदर कविताओं का पाठ करके श्रोताओं को भाव- विभोर कर दिया। सभी विषयों पर लेकिन अधिकतर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार से संबंधित कविताएं प्रस्तुत की गई। इस कविगोष्ठी में काव्य पाठ करने वाले कवियों में सुनीता बंसल ,किरण मिश्रा, अलका गुप्ता, प्रदीप मिश्र अजनबी, दीपमाला माहेश्वरी, सुरेखा शर्मा, मनोज कुमार कैन, पूर्णिमा ढिल्लन, मीना कौशल, आदित्य अस्थाना, वर्षा सिंह, सीमा शर्मा मंजरी, उषा गोयल, शशि त्यागी, रोहित पांडेय, सर्वज्ञात सिंह, मुनक्का मोर्या शामिल रहे ।

शशि त्यागी की कविता₹ हूँ शारदा में चरणन, है मात स्वीकारो मेरा नमन-नमन। कार्यक्रम का संचालन कर रहीं सरोजिनी तन्हा की कविता ₹गंगा सी अविरल बहे हिंदी की रसदार ,अलंकार रस छंद मिल करते मंत्रोच्चार। अजनबी के गीत ₹राष्ट्र समन्वय के सूत्रों की भाषा हिंदी है ;अब हो राष्ट्र की भाषा राज की भाषा हिंदी है । अदिति की कविता ₹ हिंदी भारत की है ये शान, हम सबका है अभिमान ,जन-जन की यह बोली है ,भारत की यह है पहचान ₹ प्रमुख कविता रहीं । वर्षा सिंह ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए ₹ऑनलाइन शॉपिंग का किस्सा मजेदार ₹कविता का पाठ किया । इस आयोजन में संस्था के अध्यक्ष माननीय सुबोध मिश्र की उपस्थिति भी रही।

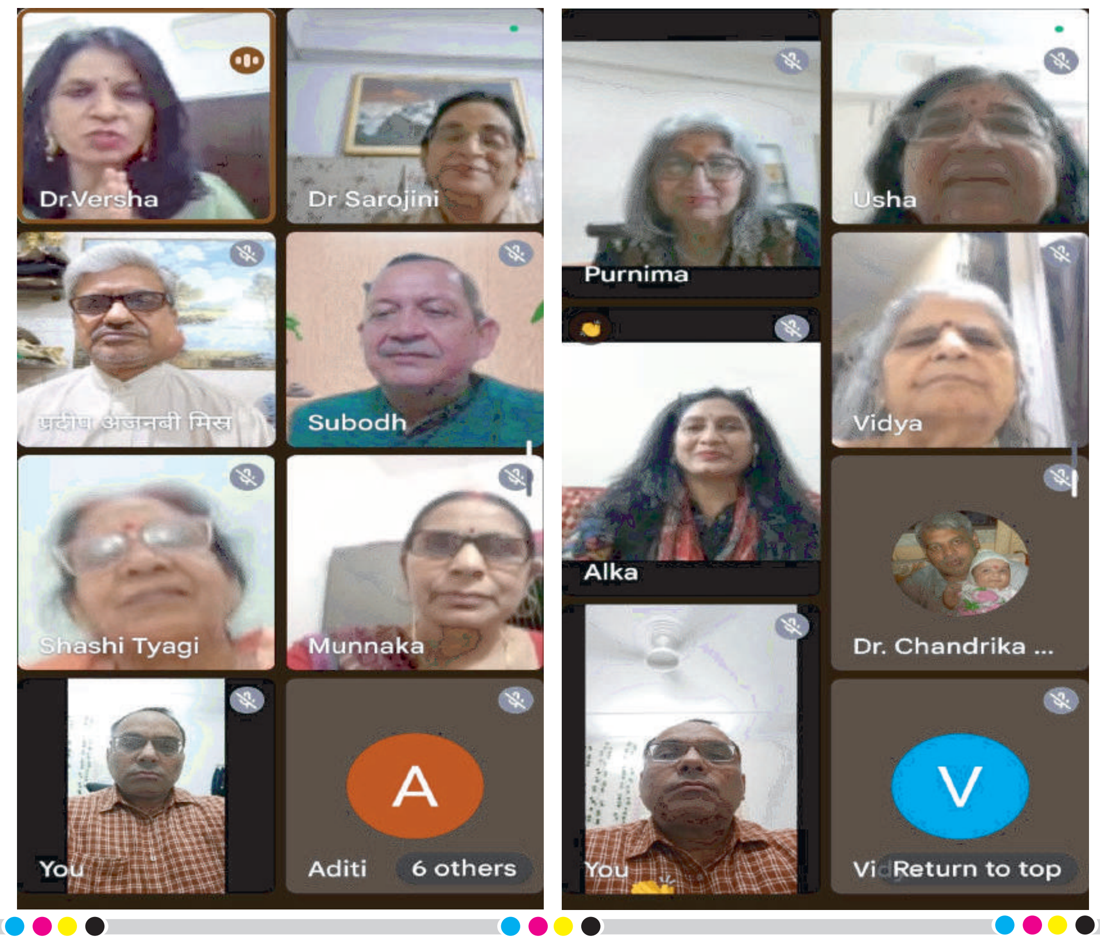

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील

हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:

- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

एनडीएमसी अध्यक्ष ने बाज़ार क्षेत्रों की सफ़ाई के लिए सफ़ाई टीमों को आधुनिक ट्रॉली वितरित की

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने अपने जन स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से आज ₹स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा₹ के अंतर्गत खान मार्केट पार्किंग क्षेत्र, नई दिल्ली में एक विशेष कार्यक्रम - ₹सफ़ाई की दक्षता और मशीनीकरण में सुधार हेतु पालिका सहायकों को उपकरणों से सशक्त बनाना₹ - का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एनडीएमसी के अध्यक्ष - केशव चंद्रा और सचिव - तारिक थॉमस उपस्थित थे।

इस आयोजन में मशीनीकरण और दक्षता बढ़ाने की दिशा में इस अभियान के तहत, एनडीएमसी ने सभी 14 स्वच्छता सर्कल्स में आधुनिक स्वच्छता उपकरणों का एक नया सेट वितरित किया गया । इस वितरण में स्रोत-स्तर पर कचरा संग्रहण के लिए प्रत्येक सर्कल में 300 हैंड-हेल्ड डस्टबिन, मशीनीकृत बाज़ार सफाई और गीले पोछे के लिए 27 पूरी तरह सुसज्जित सफाई ट्रॉलियाँ, जन जागरूकता अभियानों को मज़बूत करने के लिए 14 मेगाफोन और व्यवस्थित एवं कुशल सड़क अपशिष्ट प्रबंधन के लिए प्रत्येक सर्किल में 300 कचरा संग्रहण बैग शामिल थे।

इस पहल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, केशव चंद्रा ने कहा कि ₹सफाई कर्मचारियों को अब पारंपरिक हाथ-झाड़ू की जगह साबुन के घोल से लेकर पोंछे तक सभी आवश्यक सफाई उपकरण ले जाने वाली आधुनिक ट्रॉलियों से लैस किया जाएगा। यह कदम एनडीएमसी के उस दृष्टिकोण का हिस्सा है, जिसके तहत नवाचार, मशीनीकरण और सामुदायिक सहभागिता को मिलाकर एक स्वच्छ और हरित नई दिल्ली का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि स्वच्छता के तौर तरीकों को निरंतर नवाचार और प्रयोग के साथ विकसित किया जाना चाहिए ताकि दक्षता सुनिश्चित हो, कर्मचारियों को प्रेरित किया जा सके और शहर के निवासियों व आगंतुकों, दोनों को प्रत्यक्ष लाभ पहुँचाया जा सके। यह पहल एनडीएमसी के स्थायित्व और नागरिक-केंद्रित सेवाओं पर अटूट ध्यान को रेखांकित करती है, साथ ही शहर की स्वच्छता और सौंदर्यबोध को बनाए रखने में पालिका सहायकों की अमूल्य भूमिका को भी मान्यता देती है।

स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ गर्म जोशी से बातचीत की पहल की सराहना महिलाओं और बच्चों को पौष्टिक बाजरा वितरित

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्लीः स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान (एसएनएसपीए) के सातवें दिन, सफदरजंग अस्पताल ने महिलाओं, परिवारों और व्यापक समुदाय के लिए निवारक, प्रोत्साहनकारी और समग्र स्वास्थ्य सेवा को मज़बूत करने हेतु समर्पित विशेष स्वास्थ्य शिविरों की एक व्यापक श्रृंखला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कई विशिष्ट गतिविधियाँ शामिल थीं, जिनमें प्रसवपूर्व देखभाल (एएनसी) जाँच, पोषण परामर्श, मुख स्वास्थ्य जागरूकता, तपेदिक (टीबी) और गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) की जाँच और कायाकल्प योग सत्र शामिल थे। एक समर्पित मनोवैज्ञानिक ने मानसिक स्वास्थ्य पर एक जानकारीपूर्ण सत्र आयोजित किया, जबकि स्तन और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के लिए केंद्रित जाँच शिविरों के साथ-साथ खेल संबंधी चोटों के प्रबंधन पर एक आउटरीच कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इन शिविरों में समुदाय की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई, जहाँ आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ और जानकारी प्रदान की गई जो एसएनएसपी अभियान के मुख्य उद्देश्यों को आगे बढ़ाती हैं। पिछले छह दिनों में, 55,000 से अधिक व्यक्तियों को इन पहलों से लाभ हुआ है, जो सुलभ स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने में सफदरजंग अस्पताल की अग्रणी भूमिका को रेखांकित करता है। अस्पताल के अंदर की गतिविधियों के अलावा, आउटरीच कार्यक्रमों ने सामुदायिक पहुंच और प्रभाव को बढ़ाया। प्रतिष्ठित संसद सदस्य, पी पी चौधरी ने आज के शिविर की शोभा बढ़ाई। उन्होंने मरीजों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ गर्मजोशी से बातचीत की, पहल की सराहना की और महिलाओं और बच्चों को पौष्टिक बाजरा वितरित किए। निवारक स्वास्थ्य सेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, चौधरी ने कहा, "स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान एक परिवर्तनकारी अभियान है जो महिलाओं के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण को हमारे देश के स्वास्थ्य सेवा एजेंडे में सबसे आगे रखता है। इस तरह की पहल के माध्यम से समुदाय को निवारक, प्रोत्साहन और समग्र सेवाएं देने के लिए सफदरजंग अस्पताल की अटूट प्रतिबद्धता बेहद सराहनीय है।" उन्होंने इस प्रभावशाली आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए प्रधान मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया।

एनआईआईटी फाउंडेशन द्वारा फ़न वे लर्निंग एनजीओ के छात्रों को साइबर अवेयरनेस पाठ्यक्रम पूरा करने पर प्रमाण पत्र वितरित किए।

रिद्म की ताक़त: युवाओं को जोड़ रहा है Rhythmshala

जीवन की हर धड़कन में एक लय छिपी होती है। हमारे हृदय की धड़कन से लेकर प्रकृति की सरसराहट तक—हर जगह एक रिद्म, एक ताल हमें दिशा देती है। यही लय जीवन को संतुलित करती है और मनुष्य को अपनी ऊर्जा को सकारात्मक ढंग से प्रयोग करने की प्रेरणा देती है।

इसी सोच को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है Rhythmshala, जिसकी स्थापना डॉ. अंकुर शरण ने की है। Rhythmshala का उद्देश्य केवल संगीत या ताल सिखाना नहीं है, बल्कि युवाओं को इस लय से जोड़कर उनके व्यक्तित्व, सोच और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है।

आज के समय में जब युवा तनाव, असमंजस और प्रतिस्पर्धा से जूझ रहे हैं, तब Rhythmshala उन्हें रिद्म की ताक़त से जोड़कर आत्मविश्वास और आत्म-अनुशासन सिखा रहा है। यहां पर युवा यह सीखते हैं कि जैसे संगीत में हर बीट का अपना महत्व होता है, वैसे ही जीवन में हर पल का मूल्य है।

स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों के साथ मिलकर चल रहे इस अभियान ने युवाओं के बीच रचनात्मकता, टीमवर्क और सामाजिक संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया है। Rhythmshala यह संदेश दे रहा है कि यदि हम अपनी ज़िंदगी में सही तालमेल बैठा लें, तो समाज में बड़े बदलाव की शुरुआत हो सकती है।

ताल, संगीत और लय केवल कला नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है—और इसी कला को Rhythmshala नई पीढ़ी तक पहुंचा रहा है। यह पहल साबित कर रही है कि रिद्म से जुड़ना केवल दिल बहलाना नहीं, बल्कि जीवन को संवारना है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के द्वारा सम्मानित हुए प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। छटीकरा रोड़ स्थित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में रामायण रिसर्च काउंसिल के द्वारा प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद को उनके द्वारा चित्रकला के क्षेत्र में की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।उन्हें यह सम्मान रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी व भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व उच्चाधिकारी देवदत्त शर्मा (रिटायर्ड आई.ए.एस.) ने प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके दिया।ज्ञात हो कि प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद ने रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में संपन्न हुई त्रिदिवसीय पेंटिंग कार्यशाला में तीन सदस्यीय जजेस कमेटी में मुख्य जज की भूमिका निभाई थी। जिसमें देश भर के 15 राज्यों से आए हुए 55 चित्रकारों ने अपनी चित्रकला का प्रदर्शन किया था।

इस अवसर पर प्रख्यात संत स्वामी गोविंदानंद तीर्थ, महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद महाराज, पद्मश्री कृष्ण कन्हाई चित्रकार, सुश्री उमा शर्मा, डॉ. उज्ज्वला शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, चित्रकार अनिल सोनी एवं विक्रम जीत (उड़ीसा)आदि की उपस्थिति विशेष रही।

ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष व प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने रामायण रिसर्च काउंसिल के द्वारा प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद को सम्मानित किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया है।

नवरात्र: दूसरे दिन श्रद्धा के साथ हुआ माँ ब्रह्मचारिणी का पूजन अर्चन

सुनील वाजपेई

कानपुर। आज यहां नवरात्र के दूसरे दिन मंगल वार को जगत जननी दुर्गा जी के दूसरे स्वरूप ब्रह्मचारिणी के रूप में बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना की गई।

नवरात्रि दूसरा दिन आज लोगों ने उत्साह पूर्वक भगवती का पूजन श्रद्धा पूर्वक करते हुए घरों में कलस स्थापना व माता की चौकी भी कराई। साथ ही शहर के दुर्गा मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ता दिखाई पड़ा।

प्रातः से लेकर देर रात तक मां के जयकारे गूंजते रहे। जागरण के भी आयोजन हुए। घरों में भी मां की चौकी सजायी गयीं।

नवरात्रि इस दूसरे दिन शहर के प्रमुख मंदिरों काली मठिया, शास्त्री नगर, बारादेवी, किदवई नगर, तपश्वरी देवी बिरहाना रोड, फूलमती मंदिर. जनरलगंज, वैष्णो देवी मंदिर बर्रा, जंगली देवी मंदिर किदवई नगर, चंद्रिका देवी मंदिर, शीतला माता मंदिर और चौक सहित प्रमुख दुर्गा मंदिरों में भक्तों ने प्रसाद, नारियल व चुनरी चढ़ाकर मां से मुरादें मांगीं गईं।

इस दौरान चहुंओर जयकारें गूंजते रहे। मां की चौकी सजाकर किया जागरण किया। दुर्गा मंदिरों में तडक़े से ही मां के स्वरूप के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

मंदिरों में सुबह से उमड़ी भीड़ देर रात तक चलती रही। भक्तों ने मंदिरों में दुर्गा सप्तशती, दुर्गा स्त्रोत व दुर्गा कवच का पाठ कर मां की स्तुति वन्दना कर मन मांगी। स्थानीय दुर्गा मंदिर, गायत्री मंदिर, सिद्धदात्री नौ दुर्गा मंदिर,काली मंदिर में भक्तों की अपार भीड़ भी देखी गई। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे।

संदूक में मिली लाश का पुलिस ने किया सनसनी खेज खुलासा, दोस्त ने ही की थी जुझार की हत्या

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

एटा/ मलावन थाना क्षेत्र में 2 दिन पूर्व थाना हुई जुझार सिंह की हत्या का सनसनी खेज खुलासा किया है।मारपीट व कहा–सुनी से क्षुब्ध हो कर अभियुक्त विशाल उर्फ़ नरेंद्र पाल सिंह पुत्र इंद्रपाल सिंह ने हत्या कर शव को अपने ही घर के बक्से छुपाया था पुलिस ने हत्यारोपी की निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त दुपट्टा भी बरामद कर लिया है

थाना मलावन पर हंसा देवी पत्नी जुझार सिंह पुत्र करतार सिंह निवासी कस्बा व थाना मलावन जनपद एटा ने सूचना दी कि उनके पति जुझार सिंह उपरोक्त,दिनांक 20.09.2025 को समय करीब 18:30 बजे घर से कहीं चले गए है काफी तलाश करने पर भी नहीं मिले है। प्राप्त सूचना पर जुझार सिंह उपरोक्त की गुमशुदगी दर्ज की गई, गुमशुदगी दर्ज करने के उपरांत गुमशुदा की तलाश की गई, तलाश के दौरान शक के आधार पर स्थानीय पुलिस द्वारा विशाल पुत्र इंद्रपाल नि० क़स्बा व,थाना मलावन जनपद एटा के घर के कमरे मे रखे बक्से को खोलकर देखा गया तो मृतक जुझार सिंह उपरोक्त का शव बक्से के अंदर कपड़ो के निचे दबा पाया गया,मौके पर फील्ड यूनिट की टीम द्वारा,घटनास्थल की फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी करते हुये परिजनों के समक्ष बॉक्स खोलकर मृतक

के शव को बाहर निकाला कर शव को पोस्टमार्टम हेतु भिजवाते हुए,थाना स्थानीय पर *मुअसं0-198/2025 धारा 103(1), 238 बीएनएस* बनाम विशाल उर्फ नरेन्द्रपाल पुत्र इन्द्रपाल निवासी कस्बा व थाना मलावन एटा पंजीकृत किया गया,उपरोक्त अभियोग में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तारी हेतु एटा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्याम नारायण सिंह द्वारा,थानाध्यक्ष मलावन को उपरोक्त अभियोग में वांछित अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया,आज दिनांक 23.09.2025 को अपर पुलिस अधीक्षक राजकुमार सिंह के कुशल नेतृत्व में थाना मलावन पुलिस द्वारा,

उपरोक्त अभियोग में वांछित अभियुक्त विशाल उर्फ नरेन्द्रपाल पुत्र इन्द्रपाल निवासी कस्बा व थाना मलावन एटा को गिरफ्तार किया गया है,गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध थानास्तर से आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है,

मुख्य बिन्दु-

1. अभियुक्त विशाल उर्फ नरेन्द्रपाल मृतक जुझार सिंह दोनों एक ही मौहल्ले के निवासी है व दोनों की मित्रता थी तथा दोनों अक्सर एक साथ बैठकर खाते पीते थे।
2. दिनांक 20.9.2025 की शाम को अभियुक्त विशाल उर्फ नरेन्द्र पाल तथा मृतक जुझार सिंह दोनों एक साथ थे तथा बाद दोनों अभियुक्त विशाल उपरोक्त के घर पर गये।
3. रात में करीब 21.00 बजे अभियुक्त विशाल उपरोक्त ने मृतक जुझार सिंह को खाना खाने के लिए कहा तो जुझार सिंह ने थप्पड मार दिया,इसी बात को लेकर अभियुक्त विशाल उपरोक्त ने गुस्से में चुन्नी से जुझार सिंह का गला दबाकर हत्या कर दी,
4. अभियुक्त विशाल उपरोक्त ने मृतक जुझार सिंह के शव को अपने कमरे में रखे बडे बक्से में छिपाकर फरार हो गया।

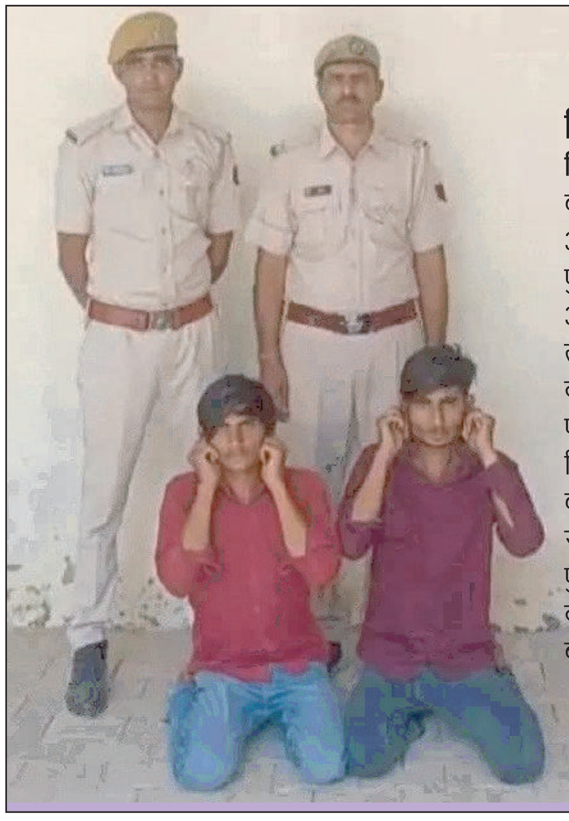

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

तिजारा : पुलिस की बड़ी कार्रवाई, साइबर ठग तसलीम व अरसद गिरफ्तार, जैरोली थाना पुलिस ने एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत साइबर ठग तसलीम और अरसद को धर दबोचा, आरोपी सोशल मीडिया पर पुराने सिक्कों के फर्जी विज्ञापन डालकर लोगों से ठगी करते थे, आरोपियों के मोबाइल से फर्जी आईडी, आरबीआई व पुलिस अधिकारियों के नाम से दस्तावेज, स्कैनर और वीडियो बरामद हुए।

ट्रंप का नया एच-1बी वीजा वार - भारतीय प्रोफेशनल्स पर गहरी चोट या भारत के लिए ब्रेन गेन का अवसर?

अब तक भारत से ₹ब्रेन ड्रेन₹होता रहा है, टैलेंटेड युवा विदेश जाकर अपनी क्षमताएं वहीं इस्तेमाल करते थे।अब नया परिदृश्य ब्रेन गेन बन सकता है– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर अंतरराष्ट्रीय राजनीति और आर्थिक नीतियों की दुनियाँ में अमेरिका हमेशा से अपनी इमिग्रेशन पॉलिसीज़ के ज़रिए विश्वभर के टैलेंट को आकर्षित करता रहा है। लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद से अमेरिकी वीज़ा और माइग्रेशन नीतियों में एक के बाद एक सख्ती देखने को मिली है। कभी टैरिफ के नाम पर व्यापारिक प्रतिबंध, तो कभी टेक सेक्टर के लिए वीज़ा नियमों में कट्टर बदलाव,ये सब कदम स्पष्ट करते हैं कि ₹अमेरिकी फर्स्ट₹ पॉलिसी सिर्फ नारा नहीं, बल्कि ट्रंप प्रशासन का आधारभूत एजेंडा है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि इसी कड़ी में ट्रंप सरकार ने टैरिफ के बाद, भारतीयों पर एक और स्ट्राइक की है,उन्होंने एच-1बी वीजा पर एक लाख डॉलर (करीब 88 लाख रुपये) की फीस थोप दी है,ये चोट कितनी बड़ी है, इसका अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि 70 फीसदी एच-1बी वीजा भारतीयों को मिलते हैं,अब सवाल ये है कि क्या इतनी मोटी रकम खर्च करके कंपनियां भारतीयों को अमेरिका में नौकरी पर रखेंगी ?इसकी तगड़ी मार भारतीयों के अलावा अमेरिकी टेक सेक्टर पर भी पड़ने की आशंका जताई जा रही है खासकर भारतीय प्रोफेशनल्स और टेक कंपनियों की नींद उड़ा दी है।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,ट्रंप का नया एच-1बी वीजा वार-भारतीय प्रोफेशनल्स पर गहरी चोट या भारत के लिए ब्रेन गेन का अवसर?

साथियों बात अगर हम एच-1बी वीजा पर ट्रंप की नई स्ट्राइक और उसका नोटिफिकेशन को समझने की करें तो एच-1बी वीज़ा वह रास्ता है जिसके माध्यम से भारतीय और अन्य देशों के उच्च कौशल वाले प्रोफेशनल्स अमेरिका की कंपनियों में काम कर सकते हैं। सिलिकॉन वैली से लेकर न्यूयॉर्क के फाइनेंशियल सेक्टर तक, भारतीय इंजीनियर,आईटी प्रोफेशनल्स और मैनेजमेंट एक्सपर्ट्स की बड़ी मौजूदगी इन्हीं वीज़ा के जरिए संभव हुई है।ट्रंप प्रशासन ने हाल ही में एक नोटिफिकेशन जारी किया है जिसके अनुसार एच-1बी वीज़ा पर हर साल $100,000 की फीस देनी होगी। यह फीस केवल पहली बार वीज़ा आवेदन करने वालों पर ही नहीं, बल्कि उन लोगों पर भी लागू होगी जो पहले से अमेरिका में हैं और वीज़ा रिन्यू करना चाहते हैं। इस निर्णय को न केवल अप्रवासी समुदाय बल्कि अमेरिकी कॉर्पोरेट जगत भी ₹अत्यधिक बोझ₹ मान रहा है।हर साल की फीसः पुराने और नए आवेदकों पर समान बोझ-अब तक वीज़ा शुल्क केवल आवेदन और प्रोसेसिंग के समय एकमुश्त लिया जाता था। लेकिन अब इस नए नियम के तहत फीस हर साल देनी होगी।जो भारतीय प्रोफेशनल्स पहले से अमेरिका में काम कर रहे हैं, उन्हें भी वीज़ा रिन्यूअल के दौरान यह राशि चुकानी होगी।इसका मतलब यह है कि यदि किसी का वीज़ा 3 साल का है और वह दो बार रिन्यू करवाता है, तो कुल मिलाकर करीब $300,000 (2.64 करोड़ रुपये से अधिक) का बोझ कंपनियों या कर्मचारियों पर पड़ेगा।इससे कंपनियों पर वित्तीय दबाव और बढ़ेगा और वे सोच-समझकर ही भारतीय या अन्य विदेशी कर्मचारियों को नौकरी पर रखने का निर्णय लेंगी।ग्रीन कार्ड का सपना और दूर होता भविष्य-भारतीय प्रोफेशनल्स के लिए अमेरिका का सपना केवल एच-1बी वीज़ा तक सीमित नहीं है। इसका अंतिम लक्ष्य है-ग्रीन कार्ड और नागरिकता।लेकिन इस भारी- भरकम फीस ने उस सपने को और कठिन बना दिया है।कंपनियां अब इतनी बड़ी राशि खर्च करने से पहले कई बार सोचेंगी कि क्या किसी कर्मचारी के लिए ग्रीन कार्ड स्पॉन्सर करना उनके लिए लाभकारी है।पहले ही ग्रीन कार्ड की प्रतीक्षा सूची भारतीयों के लिए दशकों लंबी हो चुकी है, ऐसे में अतिरिक्त वित्तीय बोझ कंपनियों को पीछे हटने पर मजबूर कर सकता है।भारतीयों का अमेरिका में स्थायी बसने का सपना अब पहले से भी ज्यादाकठोर कठिन और अनिश्चित हो गया है।

साथियों बात अगर हम 70 पेसेंट भारतीयों पर सीधा असर व पूरी तरह कर्मचारी की ब्रेन ₹वैल्यू₹ पर निर्भर होने को समझने की करें तो, एच-1बी वीज़ा की हकीकत यह है कि इसमें सबसे बड़ाहिस्सा भारतीयों का है।हर साल जारी होने वाले एच-1बी वीज़ा में लगभग 70 पेसेंट भारतीयों को ही मिलता है।इसका मतलब है कि इस नीति का सीधा और सबसे ज्यादा असर भारतीयों पर पड़ेगा।लाखों भारतीय युवा जो अमेरिका जाकर करियर बनाने का सपना देखते हैं, उनकी राह में अब बड़ी बाधा आ खड़ी हुई है।साथ ही, भारतीय आईटी कंपनियां जैसे इंफोसिस, टीसीएस,विप्रो आदि भी इससे प्रभावित होंगी, क्योंकि उनके हजारों कर्मचारी हर साल अमेरिका में सेवाएं देते हैं।यह बदलाव भारत-अमेरिका संबंधों में भी तनाव पैदा कर सकता है, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से भारतीय प्रोफेशनल्स को निशाना बनाता दिख रहा है।कर्मचारी की ब्रेन ₹वैल्यू₹ और कंपनी की गणना- ट्रंप की नई नीति का एक और पहलू यह है कि यह अब पूरी तरह कर्मचारी की ब्रेन₹वैल्यू₹पर निर्भर करेगा।यदि किसी कंपनी को लगता है कि कोई भारतीय प्रोफेशनल इतना कुशल है कि उसका काम कोई अमेरिकी कर्मचारी नहीं कर सकता, तभी कंपनी यह भारी-भरकम फीस देने को तैयार होगी।इसका नतीजा यह होगा कि केवल ₹टॉप टैलेंट₹ को ही अब अमेरिका में अवसर मिलेगा।मिड-लेवल या सामान्य कौशल वाले भारतीय प्रोफेशनल्स के लिए अमेरिका का दरवाजा लगभग बंद हो जाएगा।इससे अमेरिका में कार्य संस्कृति और भर्ती प्रक्रिया में गहरा बदलाव आएगा।

साथियों बात अगर हम भारत के लिए ब्रेन गेन का सुनहरा अवसर होनें की करें तो,अब तक भारत से ₹ब्रेन ड्रेन₹ होता रहा है,टैलेंटेड युवा विदेश जाकर अपनी क्षमताएं वहीं इस्तेमाल करते थे।अब नया परिदृश्य ब्रेन गेन बन सकता है,आईआईटीप्रोफेशनल्स और भारत की टेक्नोलॉजी हब बनने की राह मिल सकती है,इस फैसले का सबसे ज्यादा असर आईआईटी, आईआईएम और अन्य शीर्ष संस्थानों से निकलने वाले भारतीय प्रोफेशनल्स पर होगा।अब तक इन संस्थानों के कई टॉप टैलेंट अमेरिका में काम करने चले जाते थे।लेकिन जब फीस इतनी भारी होगी, तो कंपनियां ऐसे टैलेंट को रखने से पहले कई बार सोचेंगी।इसका नतीजा यह होगा कि धीरे-धीरे भारतीय टैलेंट की ₹वापसी₹ तेज होगी और भारत में ही हाई-टेक रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन को बल मिलेगा। भारत पहले से ही बैंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और गुरुग्राम जैसे शहरों में आईटी और स्टार्टअप हब के रूप में उभर चुका है। ट्रंप का यह कदम इस प्रक्रिया को और तेज कर सकता है।अमेरिका से लौटने वाले उच्च कुशल भारतीय अब भारत की कंपनियों, विश्वविद्यालयों और स्टार्टअप्स में नई ऊर्जा और विशेषज्ञता लेकर आएंगे।इससे भारतीय टेक इंडस्ट्री और स्टार्टअपइकोसिस्टम को एक नई उड़ान मिलेगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग,साइबर सिक्योरिटी और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में भारत अगले दशक में विश्व नेता बन सकता है।

साथियों बात अगर हम अदालत में चुनौती और कंपनियों की नई रणनीति को समझने की करें तो, ट्रंप के इस फैसले को अदालत में चुनौती देने की तैयारियां भी शुरू हो चुकी हैं। अमेरिकी कंपनियां और अप्रवासी अधिकार संगठन इसे भेदभावपूर्ण और असंवैधानिक मानते हैं।यदि अदालत इस फैसले को रोक देती है तो भारतीयों को राहत मिलेगी।लेकिन अगर कोर्ट भी इस नियम को बरकरार रखता है, तो कंपनियों को नई रणनीति अपनानी होगी।वे अब भारत में ही ऑफशोर डेवलपमेंट सेंटर स्थापित कर सकती हैं और वर्क-फ्रॉम-इंडिया मॉडल पर काम कर सकती हैं।इससे भारतीय आईटी उद्योग में निवेश और रोजगार बढ़ सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप का यह कदम भारतीयों पर सीधा वार है। यह न केवल व्यक्तिगत सपनों को तोड़ता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कारोबारी समीकरणों को भी प्रभावित करता है।जहां एक तरफ लाखों भारतीय प्रोफेशनल्स के लिए यह दुखद और निराशाजनक है, वहीं दूसरी ओर भारत के लिए यह ₹ब्रेन गेन₹ का मौका भी है। अब सवाल यह है कि भारत इस मौके को कितनी दूरदर्शिता से भुना पाता है। यदि भारत अपनी नीतियों को मज़बूत करे, स्टार्टअप इकोसिस्टम को और सहारा दे तथा रिसर्च और इनोवेशन में निवेश बढ़ाए, तो यह ट्रंप का झटका भारतीयों के लिए नई उड़ान का अवसर भी साबित हो सकता है।

अलीगढ़ में भीषण सड़क हादसा,कार और कैंटर की भिड़त में 5 लोगों की मौत

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

उत्तर प्रदेश के जिला अलीगढ़ में एक दर्दनाक सड़क हादसा सामने आया है हादसे में एक ही परिवार के पांच लोग जिंदा जल गए जिसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं और एक व्यक्ति बुरी तरह झुलस गया जिसका उपचार जारी हैं। दरहसल अलीगढ़ के NH 34 पर दर्शन करके लौट रही कार का अचानक टायर फट गया जिससे कार अनियंत्रित हो गयी और सामने से आ रहे टैंकर से टकरा गयी टक्कर इतनी जोरदार थी कि टैंकर और कार में आग लग गयी देखते ही देखते आग की लपटों ने भयानक रूप ले लिया कार में बैठे एक ही परिवार के पांच लोग जिंदा जल गए जिसने छोटे बच्चे भी शामिल थे हादसे को देखने के स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई और स्थानीय लोगों ने कार में बैठे लोगों को बचाने का काफी प्रयास किया लेकिन सफल नही हो सके क्योंकि आग ने विकराल रूप ले रखा था सूचना पर पुलिस के आला अधिकारी और दमकल की टीम मोके पर पहुँची तो घण्टो की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया लेकिन तब तक दोनों वाहन जलकर खाक हो गये तो वहीं पुलिस ने कार से जले हुए शवों को बाहर निकाला और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया बुरी तरह जलने से शवों की पहचान नहीं हो सकी हैं पोस्टमार्टम के बाद ही स्थिति साफ होगी फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही हैं , हादसा किस कारण से हुआ था उसकी भी पुलिस टीम जांच करेगी।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

राजधानी लखनऊ में नवरात्रि के अवसर पर 'प्रेरणा परिवार' के द्वारा 25 सितंबर को राजभवन में 5100 कन्याओं का पूजन किया जाएगा. इसमें लखनऊ और आसपास की 251 सेवा बस्तियों की कन्याएं शामिल होंगी. इस कार्यक्रम में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल भी मौजूद रहेंगी. राज्यपाल कन्याओं को तिलक लगाकर और चुनरी भेंट करके उनका स्वागत करेंगी.

स्लाइट कैंपस में माता दुर्गा पूजा की शुरुआत

लोंगोवाल, 23 सितम्बर (जगसीर सिंह)–

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट) के परिसर में आज माता दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर विधिवत कलश स्थापना का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के निर्देशक. मणिकांत पासवान की उपस्थिति में पूजा-पाठ के साथ हुई। इस पावन अवसर पर बीटेक थर्ड ईयर के छात्र रवि प्रकाश और देव शर्मा ने यजमान की भूमिका निभाई और पारंपरिक विधियों के अनुसार कलश की स्थापना की। पूजा-अर्चना में संस्थान के छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया।पूरे कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थान में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण को प्रोत्साहन देना था। प्रो. मणिकांत पासवान ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, ₹ऐसे आयोजनों से न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत जीवित रहती है, बल्कि यह छात्रों में सामूहिकता और नैतिक मूल्यों का विकास भी करती है।₹ इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के छात्रों द्वारा सामूहिक प्रयास से किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और आने वाले दिनों तक चलने वाली दुर्गा पूजा की तैयारियों की भी शुरुआत की।

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : गिफ़्ट-गिफ़्ट ना रहा, बर्थ डे बर्थ डे ना रहा ! : राजेंद्र शर्मा

अब क्या इन विपक्ष वालों को शिष्टाचार भी मोदी जी को ही सिखाना पड़ेगा? बताइए, 17 सितंबर को मोदी जी का जन्म दिन था या नहीं। जन्म दिन भी मामूली नहीं, पचहत्तरवां। जन्म दिन, जो बस मोदी जी को छोड़कर सारी दुनिया ने मनाया। मोदी जी ने नहीं मनाया माने वैसे छुट्टी-वुट्टी लेकर नहीं मनाया, जैसे ज्यादातर बाइलॉजीकल लोग मनाते हैं। नॉन-बाइलॉजीकल जो ठहरे।

मोदी जी छुट्टी-वुट्टी कहां लेते हैं? सुना है ग्यारह साल में मोदी जी ने एक भी छुट्टी नहीं ली है। ओन्ली ड्यूटी, नो छुट्टीr। मोदी जी कम से कम अपने लिए तो कोई छुट्टी-वुट्टी नहीं ही लेते हैं। और परिवार वाला होने का इल्जाम उन पर कोई लगा नहीं सकता है। हां! देश के लिए ही छुट्टी लेनी पड़ जाए, तो बात दूसरी है। यानी जिस दिन सारी दुनिया उनका जन्म दिन मना रही थी, उस दिन भी मोदी जी हर रोज की तरह काम कर रहे थे। जी हां, मध्य प्रदेश में धार में पहले पीएम-मित्र पार्क के उद्घाटन का काम। ऐसी है मोदी जी की काम की लगन। कोई उद्घाटन हो, कोई बटन दबाना हो, कोई झंडी दिखाना हो या पब्लिक को सौगात देने का एलान करना हो, मोदी जी, सारा काम खुद अपने हाथों से करते हैं। और हां! मौका कोई भी क्यों न हो, चुनावी भाषण भी। और जगह कोई भी हो, उसके साथ पुराने और खास रिश्ते की खोज भी।

बताइए, ऐसे कामधुनी व्यक्ति को भी —नॉन-बायोलॉजीकल बंदे को भी व्यक्ति कह सकते हैं क्या (?) -- भाई लोग रिटायर कराने पर तुले हुए थे। बस एक ही एक ही रट लगा रखी थी—पचहत्तर साल पूरे हो गए। अब और किसी को मौका दिया जाए! जिसने कभी एक दिन की छुट्टी नहीं ली, चाहते थे कि राजी-राजी परमानेंट छुट्टी पर चला जाए। झोला उठाए और अपने ही बनाए मार्गदर्शक मंडल में चला जाए। आडवाणी जी, मुरली मनोहर जोशी जी, वगैरह की संगत करे। कुछ उनकी सुने और कुछ अपनी सुनाए। उनके कोई गिले-शिकवे हों, तो उन्हें भी सुने और उनकी शिकायतें मिटाए। और आगे आने वाले के खिलाफ उनके साथ संयुक्त मोर्चा जमाए।

पर ऐसा नहीं हुआ। उन भारत-विरोधियों का मंसूबा पूरा नहीं हुआ, जो नहीं चाहते हैं कि भारत को 2047 तक एक विकसित देश बनाने का मोदी जी का संकल्प पूरा हो। ये भारत के दुश्मन जानते हैं कि भारत को अगर कोई 2047 तक, बल्कि उसके पहले भी विकसित देश बना सकता है, नरेंद्र मोदी ही बना सकता है। और कोई ऐसा होगा, जो अठारह-अठारह घंटे काम करता होगा, जो एक दिन की भी छुट्टी नहीं लेता होगा? हर्गिज नहीं। हमारे देश के दुश्मन जानते हैं कि अब भारत को विकसित देश बनने से रोकने का एक ही तरीका है — नरेंद्र मोदी को रिटायर करा दो। सो उन्होंने पूरी कोशिश की पचहत्तरवें बर्थ डे को रिटायरमेंट दिवस बनाने की। पर उनके मंसूबे पूरे नहीं हुए। और होते भी कैसे? रिटायर तो वो होता है, जो बायोलॉजीकल होता है। जो बायोलॉजीकल होता है, वही माता के गर्भ से जन्म लेता है। जो बायोलॉजीकल होता है, उसी की उम्र बढ़ती है। जो बायोलॉजीकल होता है, उसी के पचहत्तर साल रिटायरमेंट की पुकार करते हुए आते हैं। नॉन-बायोलॉजीकलों की बात ही कुछ और होती है। उनका जन्म दिन होता भी है, तो भी जन्म नहीं होता है, अवतरण होता है। उनके बरस बढ़ते भी हैं, तो उम्र नहीं बढ़ती है। उनकी जवानी कभी खत्म नहीं होती, उनका बुढ़ापा कभी नहीं आता।

एक बार को तो नागपुर वाले भागवत जी को भी धोखा हो गया। पहले तो उन्होंने भी पचहत्तर साल को पचहत्तर साल ही समझा और लगे राजी-राजी रिटायर होने के फायदे गिनाने में। पर जब भक्तों ने याद दिलाया, यह तो राष्ट्र विरोधी षडयंत्रकारियों की डिमांड है, तब उन्हें समझ में आया कि मोदी जी के मां को गाली दिए जाने से आहत होने का मतलब यह हर्गिज नहीं है कि वह बाकी लोगों की तरह ही बायोलॉजीकल हैं। झट इशारे में समझ गए कि ऐसा मार्गदर्शक मंडल बना ही नहीं है, जिसमें मोदी जी समा सकें। फिर क्या था, भागवत जी ने फौरन एलान कर दिया — हमारे यहां रिटायरमेंट नहीं होता। रिटायरमेंट संघ की संस्कृति में नहीं है। हाथ के हाथ, हफ्ते भर पहले ही अगले जन्म दिन की बधाई भी दे डाली। मोदी जी ने भी जवाब में पचहत्तरवें जन्म दिन की ही बधाई दी, वह भी लिखा-पढ़ी में। और दोनों भाई एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर आसानी से पचहत्तर की बाउंड्री फलांग गए।

और उसके बाद तो सारी दुनिया ने जो मोदी जी का पचहत्तरवां जन्म दिन मनाया, सारी दुनिया ने देखा। अखबारों ने मनाया, टेलीविजन ने मनाया, रेडियो ने मनाया, सोशल मीडिया ने मनाया। देश में मनाया, विदेश में भी मनाया। दिल्ली में कर्तव्य पथ पर मनाया, तो दुबई में बुर्ज खलीफा पर भी मनाया। भक्तों ने मनाया, तो भगवा सरकारों ने भी मनाया। मुंबइया सेलिब्रिटी लोगों ने मनाया, तो खेल वाले सेलिब्रिटी लोगों ने भी मनाया। अपनी-अपनी मोदी स्टोरी लिखकर मनाया। ट्रंप ने मनाया, तो पुतिन ने भी मनाया। इंग्लैंड के राजा ने भी मनाया और तेल वाले शेखों ने भी मनाया। क्या हुआ कि याद दिलाने पर मनाया, पर सब ने मनाया। क्या हुआ कि हजारों करोड़ फूंक कर दिखाया, पर तमाशा जोरदार दिखाया।

पर राहुल गांधी ने क्या किया? हजारों करोड़ के तमाशे का मजा किरकिरा कर दिया। शिष्टाचार का तकाजा होता है कि किसी का जन्म दिन है, तो उसे बधाई दो और हां गिफ़्ट भी। पर इन्होंने क्या गिफ़्ट दिया? अगले ही दिन वोट चोरी के अरोपों की दूसरी किस्त जारी कर दी। कर्नाटक में, अलंद सीट पर वोट काटने के जरिए वोट चोरी की कहानी। और महाराष्ट्र की एक सीट पर वोट जोड़ने के जरिए, चुनाव चोरी की कहानी। ऐसे में किसी नॉन-बायोलाजीकल के जन्म दिन का जश्न भी कब तक चल पाता। बेचारे भक्तों को और पूरी भगवा पार्टी को तो नाच-गाना बीच में छोडक़र ही, राहुल गांधी को गरियाने में जुटना पड़ा। और रास्ता ही क्या था, वोट चोरों को बचाने का इल्जाम भले चुनाव आयोग पर था, पर वोट चोरी का इल्जाम तो मोदी पार्टी पर ही था। जायका बिगड़ने में जो भी कसर बची थी, ट्रंप के एच1बी वीसा प्रहार ने पूरी कर दी। एक दिन पहले मोदी जी को जन्म दिन की बधाई दी और अगले ही दिन एक ही झटके में, सबसे ज्यादा भारतीयों को ही मिलने वाले इस वीसा की सालाना फीस 6 लाख से बढ़ाकर 88 लाख कर दी। आपका ये कैसा बर्थ डे गिफ़्ट, ट्रंप जी! राहुल तो राहुल, लगता है मोदी जी को ट्रंप को भी बर्थ डे शिष्टाचार सिखाना पड़ेगा।

(व्यंग्यकार वरिष्ठ पत्रकार और

चोर को चोर कहने का सही समय : विष्णु नागर

वे दिन हवा हुए, जब चोर को कोई चोर कह देता था, तो उसकी हवा निकल जाती थी। चलते-चलते अचानक वह तेजी से भागने लगता था और कहीं छुप जाता था। भय से रोने लगता था। ईश्वर से प्रार्थना करता था कि कहीं पुलिस आ न धमके। जब पुलिस आ धमकती थी, तो वह घिघियाता था, चरण छूता था, अपने बीवी-बच्चों की बर्बादी का वास्ता देता था। गलती हो गई, हुजूर माफ कर दीजिए, पैर पकड़कर कहता था। जब इससे भी बात नहीं बनती थी, तो जो थोड़ा-बहुत मालमत्ता वह लाता था, उसके फिफ्टी-फिफ्टी पर दोनों के बीच सौदा पट जाता था। इस तरह वह मामला वहीं रफा-दफा हो जाता था।

फिर भी चोर, समाज की नजर में, मोहल्ले वालों की नजर में और यहां तक कि पुलिस वालों की नजर में चोर ही रहता था। कहीं चोरी हुई नहीं कि सबसे पहले उसे धरा जाता था। थाने ले जाया जाता था। उसकी पिटाई की जाती थी। उसने चोरी नहीं की होती थी, तो भी पुलिस उससे कुछ न कुछ वसूल कर उसे छोड़ती थी, चाहे इसके लिए चोर को अपने घर के बर्तन-भांडे बेचने पड़ जाएं!

अब चोर किसी से डरता नहीं। चोरी करने के बाद वही सबसे पहले थाने जाता है और इससे पहले कि जिसके यहां चोरी हुई है, वह एफ आई आर करवाने जाए, चोर पहुंच जाता है और एक फर्जी एफ आई आर दर्ज करवा आता है। नतीजा जिसके घर चोरी हुई है, उल्टा, वही फंस जाता है। बदनामी के डर से वह घर का बचा-खुचा मालमत्ता भी पुलिस को समर्पित कर देता है। इस तरह देखें, तो आज अपने ही नहीं, पुलिस के हितों की भी देख-रेख चोर कर रहे हैं!

चोर, अब पुलिस को अपना दोस्त, अपना साथी, अपना हमदर्द मानते हैं। चोर अब पुलिस से डर कर भागते नहीं, छुपते नहीं। वे जानते हैं कि उनकी रक्षा के लिए पुलिस ही नहीं, यह पूरा तंत्र कदम- कदम पर तैनात है। दिल्ली उनके साथ खड़ी है। लखनऊ उनके साथ खड़ा है।भोपाल, जयपुर, मुंबई, गुवाहाटी, देहरादून, अहमदाबाद सब आवश्यकतानुसार उसके साथ हैं। इसके अलावा धर्म, जाति, गोत्र साथ खड़े हैं, क्षेत्रीयता साथ खड़ी है, पार्टी खड़ी है। मंत्री खड़ा है, एम पी-एम एल ए खड़ा है, अधिकारियों का काफिला साथ खड़ा है। जो बैठा है, वह भी वक्त जरूरत खड़ा हो जाता है और सलाम बजाता है।

जिस चोर के अपराधों का रिकार्ड जितना पुराना और संगीन होता है, उतना ही मजबूत उसका रक्षा कवच होता है। उसे चोर कहना खतरे से खाली नहीं होता है। ऐसा कहने पर फौरन एक रिपोर्ट असम में, एक कर्नाटक में, एक उत्तराखंड में, एक महाराष्ट्र में, एक गुजरात में, एक मध्य प्रदेश, एक राजस्थान में, एक श्रीनगर में दर्ज करवा कर चोर कहनेवाले की टें बुलवा दी जाती है। मानहानि के केस पर केस करवा दिए जाते हैं। ठोस सबूत के अभाव में आरोपी को जेल की हवा खाने भेज दिया जाता है।इधर चोर का मान और सम्मान बढ़ जाता है।

और चोर के एक नहीं, अनेक रूप हैं। चोर समय-समय पर वेश भी बदलता रहता है। चोरी का स्थान और वहां की संस्कृति चोर का वेश तय करती है। वह केसरिया बाना भी पहन सकता है और सिर पर हैट या पगड़ी या साफा भी धारण कर सकता है। कहीं वह साधु बना बैठा मिलता है, तो कहीं योगी। कहीं वह इंजीनियर रूप में इंजीनियरों को इंजीनियरिंग का ज्ञान देते हुए मिलता है, तो कहीं डाक्टर के चोगे में मरीज की तबियत का हाल लेते हुए दिखता है। कभी वह वायु सैनिक है, तो कभी थल सेना का अफसर! कभी वह इतिहासकार और पुरातत्वविद् है और कभी वैज्ञानिक और समाजशास्त्री। कभी वह दाता है, तो कभी निरा भिक्षुक। कभी वह चौथी फेल है, कभी वह एंटायर पोलिटिकल साइंस मे पोस्ट ग्रेजुएट है! वह मायावी है!

उत्तर प्रदेश ने दिखाई राह—क्या पूरा भारत उठाएगा कदम?

उत्तर प्रदेश की धरती, जो कभी सामाजिक विभाजन की आग में तपती थी, अब एकता और समरसता की सुगंध बिखेरने को तैयार है। वे मैदान, जो समूह-आधारित नारों की गूंज से थर्राते थे, अब शांति की ओर बढ़ रहे हैं। सड़कों पर वाहनों के वे स्टिकर, जो संकीर्ण पहचानों का प्रतीक थे, अब गायब होने की कगार पर हैं। पुलिस स्टेशनों के नोटिस बोर्ड अब अपराधियों को केवल उनके कृत्यों से पहचानेंगे, न कि किसी सामाजिक समूह से। यह कोई स्वप्न नहीं, बल्कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के 16 सितंबर के ऐतिहासिक फैसले और इसके बाद 21 सितंबर को लागू हुए राज्य सरकार के साहसिक कदम का परिणाम है, जिसने समूह-आधारित रैलियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। वाहनों पर विभाजनकारी स्टिकर लगाने वालों के खिलाफ चालान, सार्वजनिक स्थानों से समूह-प्रतीकात्मक साइनबोर्ड हटाने का आदेश, और सोशल मीडिया पर भेदभावपूर्ण सामग्री पर कड़ी निगरानी—ये कदम एक ऐसे भारत की नींव रख रहे हैं, जहाँ केवल एकता का स्वर गूंजेगा।

हाईकोर्ट का यह फैसला एक याचिका के जवाब में आया, जिसमें कहा गया कि पुलिस दस्तावेजों, चाहे वह एफआईआर हो, गिरफ्तारी मेमो हो, या जब्ती मेमो, में सामाजिक समूहों का उल्लेख सामाजिक पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देता है। कोर्ट ने इसे ₹राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा₹ करार दिया और ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों में समूह-प्रतीकात्मक साइनबोर्ड को ₹विभाजनकारी क्षेत्रों₹ का प्रतीक बताया, जो संविधान की मूल भावना का उल्लंघन करता है। आदेश स्पष्ट था: पुलिस मैनुअल में संशोधन हो, और केवल विशेष कानूनी मामलों, जैसे एससी-एसटी एक्ट, में ही ऐसी पहचान का उल्लेख हो। इसके जवाब में, राज्य प्रशासन ने 21 सितंबर को 10-सूत्री दिशानिर्देश लागू किए: समूह-आधारित रैलियों पर पूर्ण रोक, मोटर व्हीकल एक्ट के तहत स्टिकरों पर कार्रवाई, सार्वजनिक स्थानों से विभाजनकारी प्रतीकों का उन्मूलन, और सोशल मीडिया पर ऐसी सामग्री पर सख्त निगरानी। ये नियम अभी लागू हुए हैं और इनका प्रभाव जल्द ही भौतिक और डिजिटल दोनों ही जगत को एकजुट और स्वच्छ बनाने की दिशा में दिखाई देगा। यह एक दमदार संदेश है: सामाजिक समूहों की संकीर्ण पहचान अब बंटवारे का कारण नहीं बनेगी, क्योंकि उत्तर प्रदेश एकता की राह पर चल पड़ा है।

उत्तर प्रदेश का यह साहसिक कदम सामाजिक एकता की दिशा में एक मील का पत्थर है, जिसका प्रभाव दूरगामी होगा। यह राज्य, जहाँ राजनीति लंबे समय तक सामाजिक समूहों के समीकरणों पर टिकी रही, अब 2027 के विधानसभा चुनावों की ओर नई राह पर बढ़ रहा है। पहले पार्टियां समूह-आधारित रणनीतियों पर निर्भर थीं, लेकिन समूह-आधारित रैलियों पर 21 सितंबर को लगे प्रतिबंध ने उनके खेल को उलट दिया है। सत्ताधारी दल इसे समग्र विकास और एकता के नारे को बल देने का अवसर बनाएंगे, जबकि विपक्ष को नई राहें तलाशनी होंगी। कुछ इसे ₹लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन₹ करार दे रहे हैं, लेकिन सवाल यह है—क्या ऐसी रैलियां वाकई लोकतंत्र की ताकत हैं? नहीं, ये सामाजिक विभाजन का हथियार हैं, जो गांवों में हिंसा, अपराधों में वृद्धि और विकास में रुकावट का कारण बनी हैं। यह आदेश पुलिस को निष्पक्ष बनाएगा, अपराधियों को केवल उनके कृत्यों के लिए दंडित करेगा, और सार्वजनिक स्थानों को ₹विभाजनकारी क्षेत्रों₹ की पहचान से मुक्त करेगा, जिससे सामाजिक सद्भाव को बल मिलेगा।

लेकिन यह क्रांति केवल उत्तर प्रदेश तक सीमित क्यों रहे? भारतीय संविधान का अनुच्छेद 15 धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव को निषिद्ध करता है, और अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता के हर रूप को दंडनीय अपराध घोषित करता है। फिर भी, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में समूह-आधारित रैलियां और प्रतीक हिंसा और विभाजन को बढ़ावा देते हैं, जिसने विकास को ठप किया है। उत्तर प्रदेश का यह मॉडल यदि राष्ट्रीय स्तर पर लागू हो, तो एक नया भारत उभरेगा—जहाँ राजनीति विकास, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दों पर केंद्रित होगी। केंद्र सरकार को तत्काल राष्ट्रीय नीति बनानी चाहिए, जो सभी राज्यों को समूह-आधारित प्रतीकों और रैलियों पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश दे। चुनाव आयोग को ऐसी अपीलों को आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन घोषित करना चाहिए। यह कदम सामाजिक एकता को मजबूत करेगा और युवाओं को उन बेड़ियों से मुक्त करेगा, जो वे राष्ट्र निर्माण में योगदान देना चाहते हैं।

सामाजिक विभाजन का यह जहर सदियों पुराना है। यह प्राचीन परंपराओं से उपजा, लेकिन आधुनिक भारत समानता और प्रगति की नींव पर खड़ा है। संविधान ने इस अभिशाप को उखाड़ने का मार्ग प्रशस्त किया, फिर भी 21वीं सदी में हमारा समाज और राजनीति इस जाल में फंसे हैं। यह आदेश एक सशक्त शुरुआत है, लेकिन इसे पूर्णता तक ले जाना होगा। शिक्षा में सुधार लाएं: स्कूलों में विभाजनकारी पहचानों को खत्म करें। आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दें: सामाजिक न्याय की नीतियां पारदर्शी हों, न कि राजनीतिक हथियार। सामाजिक जागरूकता का प्रसार करें: सरकार, एनजीओ और मीडिया मिलकर ₹विभाजन-मुक्त भारत₹ का अभियान चलाएं। सोशल मीडिया पर भड़काऊ सामग्री पर कठोर कार्रवाई हो। यह केवल कानूनी कदम नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक क्रांति का आह्वान है, जो भारत को एकता के सूत्र में बांधकर सच्चे अर्थों में विश्वगुरु बनाएगा।

उत्तर प्रदेश ने एक सशक्त चिंगारी प्रज्वलित की है, जो यदि देश के कोने-कोने में फैली, तो एक ऐसे भारत का निर्माण होगा, जहाँ व्यक्ति की पहचान उसकी योग्यता, कर्म और सपनों से होगी, न कि संकीर्ण लेबलों से। यह ऐतिहासिक क्षण हमें पुकार रहा है—विभाजनकारी पहचानों को उखाड़ फेंकें और एकता का परचम ऊंचा लहराएं। इलाहाबाद हाईकोर्ट और उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने इस क्रांतिकारी बदलाव की राह दिखाई है; अब प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह इस परिवर्तन का सिपाही बने। सामाजिक विभाजन का जहर भारत की आत्मा को कमजोर करता है, और जब तक यह रहेगा, हमारा भारत अधूरा रहेगा। संकल्प लें—एक ऐसा भारत गढ़ें, जो एकता, समानता और प्रगति का प्रतीक बने; एक ऐसा भारत, जो सच्चे अर्थों में विश्व गुरु के रूप में चमके। यह हमारा सपना नहीं, हमारा अटल संकल्प है।

21 की उम्र में संसद: क्या यही है सही समय?

[लोकतंत्र में ताजगी : क्यों ज़रूरी है युवा नेतृत्व]

भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, अपनी जीवंतता और विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी नींव में युवा शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है, जो सामाजिक परिवर्तन का वाहक होने के साथ-साथ भविष्य को आकार देने में भी सक्षम है। एक क्रांतिकारी प्रस्ताव वर्तमान में चर्चा में है—चुनाव लड़ने की न्यूनतम आयु 25 वर्ष से घटाकर 21 वर्ष करना। यह कदम न केवल लोकतांत्रिक भागीदारी को व्यापक बनाएगा, बल्कि युवाओं को नेतृत्व की मुख्यधारा में लाने का एक सशक्त अवसर भी प्रदान करेगा।

वर्तमान में, भारत के संविधान के अनुच्छेद 84 और 173 के अनुसार, लोकसभा और विधानसभा चुनाव लड़ने की न्यूनतम आयु 25 वर्ष है, जबकि 1989 के 61वें संविधान संशोधन द्वारा मतदान की आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष की गई थी। यह बदलाव युवाओं की बढ़ती जागरूकता और उनकी लोकतांत्रिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया था। आज, जब भारत की 65% से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है (2021 जनगणना अनुमान), यह सवाल प्रासंगिक है: क्या 21 वर्ष की आयु में युवा केवल मतदान तक सीमित रहें, या उन्हें नीति-निर्माण में भी भूमिका निभाने का अवसर मिलना चाहिए?

युवा नेतृत्व को बढ़ावा देना आज की आवश्यकता है। डिजिटल युग में पला-बढ़ा भारतीय युवा तकनीकी नवाचारों, वैश्विक दृष्टिकोण और सामाजिक-आर्थिक मुद्दों की गहरी समझ रखता है। उदाहरणस्वरूप, 2019 के लोकसभा चुनाव में 18-25 आयु वर्ग के लगभग 15 करोड़ मतदाताओं ने सक्रिय भागीदारी दिखाई, जो कुल मतदाताओं का एक बड़ा हिस्सा है। फिर भी, संसद में 25-35 आयु वर्ग के सांसदों की संख्या केवल 12% थी (पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च, 2019)। यह असंतुलन दर्शाता है कि युवा मतदान में तो सक्रिय हैं, लेकिन नेतृत्व और नीति-निर्माण में उनकी उपस्थिति सीमित है।

चुनाव लड़ने की आयु 21 वर्ष करने से यह असमानता कम हो सकती है। युवा नेता शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण, और तकनीकी नवाचार जैसे क्षेत्रों में नवीन दृष्टिकोण ला सकते हैं। वैश्विक उदाहरण के तौर पर, न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधानमंत्री जेसिंडा अर्डर्न ने 37 वर्ष की आयु में 2017 में सत्ता संभालकर युवा नेतृत्व की शक्ति का प्रदर्शन किया। उनकी जलवायु परिवर्तन और सामाजिक समावेशन की नीतियों ने विश्वव्यापी प्रशंसा प्राप्त की। भारत में भी, सचिन पायलट और तेजस्वी यादव जैसे युवा नेताओं ने अपनी क्षमता सिद्ध की है, किंतु आयु सीमा के कारण कई अन्य प्रतिभाशाली युवा नेतृत्व से वंचित रह जाते हैं।

चुनाव लड़ने की न्यूनतम आयु 25 से घटाकर 21 वर्ष करने का प्रस्ताव भारत के लोकतंत्र को अधिक समावेशी और गतिशील बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम हो सकता है। इसके पक्ष में कई ठोस तर्क हैं। पहला, यदि 18 वर्ष की आयु में कोई व्यक्ति मतदान के लिए पर्याप्त परिपक्व माना जाता है, तो 21 वर्ष की आयु में वह नीति-निर्माण और नेतृत्व के लिए भी सक्षम हो सकता है। यह बदलाव युवाओं को केवल मतदाता तक सीमित न रखकर उन्हें सक्रिय निर्णय-निर्माता की भूमिका में लाएगा। दूसरा, युवा नेतृत्व ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में नवीन विचारों और समाधानों को बढ़ावा देगा। उदाहरण के लिए, स्टूडेंट यूनियन चुनावों में 18-22 वर्ष के युवा अपनी संगठनात्मक क्षमता और नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करते हैं। राष्ट्रीय मंच पर अवसर मिलने पर वे बड़े पैमाने पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

तीसरा, यह प्रस्ताव भारतीय राजनीति में वंशवाद और पुरानी पीढ़ी के प्रभुत्व को चुनौती देगा। देश में राजनीति अक्सर कुछ परिवारों और पुराने चेहरों तक सीमित रहती है। कम आयु में उम्मीदवारी की अनुमति से नई प्रतिभाएं उभरेंगी, जिससे राजनीति में ताजगी और विविधता आएगी। साथ ही, डिजिटल युग का युवा सोशल मीडिया और तकनीक के माध्यम से मतदाताओं से सीधे जुड़ सकता है। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में डिजिटल प्रचार की प्रभावशाली भूमिका इसका प्रमाण है।

विपक्षी तर्कों में कहा जा सकता है कि 21 वर्ष की आयु में व्यक्ति में पर्याप्त अनुभव या परिपक्वता की कमी हो सकती है। हालांकि, यह तर्क कमजोर पड़ता है जब हम देखते हैं कि आज के युवा 21 वर्ष की आयु में स्टार्टअप्स, सामाजिक आंदोलन और वैश्विक मंचों पर नेतृत्व कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मलाला यूसुफजई ने 17 वर्ष की आयु में नोबेल शांति पुरस्कार जीतकर वैश्विक प्रभाव डाला। दूसरा तर्क यह है कि कम आयु के उम्मीदवारों से राजनीति में अस्थिरता बढ़ सकती है। किंतु यह तर्क भी तथ्यपरक नहीं, क्योंकि नेतृत्व की क्षमता आयु से नहीं, बल्कि दृष्टिकोण, कार्यक्षमता और समर्पण से निर्धारित होती है।

इस प्रस्ताव का कार्यान्वयन भारत के लोकतंत्र को और जीवंत बनाएगा। यह न केवल युवा नेतृत्व को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि मतदाताओं में भी उत्साह जगाएगा। सीएसडीएस – लोकनीति के 2019 के सर्वेक्षण के अनुसार, 60% से अधिक युवा मतदाता चाहते हैं कि उनकी आयु वर्ग के लोग संसद में उनकी आवाज बनें। इस बदलाव के लिए संवैधानिक संशोधन आवश्यक होगा, जिसमें संसद के दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत और आधे से अधिक राज्यों की सहमति चाहिए। यह प्रक्रिया जटिल है, लेकिन 1989 में मतदान आयु घटाने का सफल उदाहरण इसे संभव बनाता है।

इसके अतिरिक्त, इस परिवर्तन को प्रभावी बनाने के लिए व्यापक सामाजिक जागरूकता और युवाओं के लिए लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता होगी। गैर-सरकारी संगठन, शैक्षिक संस्थान और नागरिक समाज मिलकर युवाओं को राजनीतिक प्रक्रियाओं, नीति-निर्माण और प्रभावी नेतृत्व के लिए तैयार कर सकते हैं। कार्यशालाओं, प्रशिक्षण शिविरों और मेंटरशिप कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को संसदीय कार्यप्रणाली, कानून निर्माण और जनसंपर्क जैसे कौशलों में निपुण किया जा सकता है। साथ ही, निर्वाचन आयोग की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, ताकि कम आयु के उम्मीदवारों के लिए निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी प्रक्रिया सुनिश्चित हो। विशेष रूप से, ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों के युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए लक्षित पहल की आवश्यकता होगी, ताकि अवसरों की समानता बनी रहे।

चुनाव लड़ने की न्यूनतम आयु 25 से घटाकर 21 वर्ष करना भारत के लोकतंत्र को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगा। यह कदम युवाओं को केवल मतदाता की भूमिका तक सीमित न रखकर उन्हें नेतृत्व की मुख्यधारा में लाएगा। विश्वसनीय आंकड़ों और उदाहरणों से स्पष्ट है कि आज का युवा न केवल सक्षम है, बल्कि परिवर्तन का सशक्त वाहक भी है। उदाहरण के लिए, जलवायु कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने 15 वर्ष की आयु से वैश्विक पर्यावरण आंदोलन को प्रेरित किया, और भारत में भी युवा सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर सक्रियता दिखा रहे हैं। यह प्रस्ताव न केवल लोकतांत्रिक भागीदारी को गहरा करेगा, बल्कि भारत को एक अधिक गतिशील, समावेशी और प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगा।

स्वस्थ हरियाणा की ओर: गुटखा-पान मसाला पर बैन

हरियाणा सरकार ने गुटखा, पान मसाला और तंबाकू पर पूर्ण बैन लगाने का फैसला किया है। अब इन उत्पादों की बिक्री करने पर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगेगा। हर महीने राज्य में लगभग 4000 नए कैंसर मरीज सामने आ रहे हैं। गुटखा और तंबाकू न केवल स्वास्थ्य, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी हानिकारक हैं। यह कदम लोगों को हानिकारक आदतों से बचाने और नई पीढ़ी को स्वस्थ जीवन की ओर प्रेरित करने के लिए उठाया गया है। जागरूकता और शिक्षा अभियान के माध्यम से इस बैन का प्रभाव और बढ़ाया जा सकता है।

- डॉ प्रियंका सौरभ

हरियाणा सरकार ने हाल ही में एक साहसिक और अहम फैसला लेते हुए पूरे राज्य में गुटखा, पान मसाला और तंबाकू के सेवन और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। इस फैसले के तहत इन उत्पादों को बेचने वाले दुकानदारों और वितरकों पर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। यह कदम केवल कानूनी कार्रवाई नहीं है, बल्कि यह लोगों के स्वास्थ्य और समाज की भलाई के लिए उठाया गया एक निर्णायक कदम है।

हर महीने हरियाणा में कम से कम 4000 नए कैंसर मरीज सामने आ रहे हैं। यह आंकड़ा न केवल चिंताजनक है, बल्कि यह दर्शाता है कि गुटखा, पान मसाला और तंबाकू जैसी हानिकारक आदतें हमारे समाज में कितनी तेजी से फैल रही हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ लंबे समय से इस समस्या की ओर इशारा कर रहे थे, और अब सरकार ने ठोस कदम उठाकर इस गंभीर स्थिति से निपटने का प्रयास किया है।

गुटखा, पान मसाला और तंबाकू का सेवन केवल एक आदत नहीं, बल्कि यह गंभीर बीमारियों का कारण भी है। लंबे समय तक इसका सेवन मुंह, गले और पाचन तंत्र के कैंसर का खतरा बढ़ाता है। इसके अलावा, यह हृदय रोग, फेफड़ों की समस्याएं और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को भी जन्म देता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, तंबाकू के सेवन से हर साल लाखों लोग अपनी जान गंवाते हैं। भारत में भी तंबाकू और गुटखा से होने वाली बीमारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

हरियाणा सरकार का यह बैन इस स्वास्थ्य संकट को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका सीधा प्रभाव यह होगा कि लोग इन हानिकारक उत्पादों से दूरी बनाएंगे और नई पीढ़ी भी इनसे बचने के लिए प्रेरित होगी। साथ ही यह कदम उन दुकानदारों और वितरकों के लिए भी चेतावनी है जो इन उत्पादों को बेचकर लोगों की जान को खतरे में डाल रहे हैं।

तंबाकू और गुटखा का सेवन केवल स्वास्थ्य पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी हानिकारक है। हरियाणा में कई गरीब परिवार अपनी सीमित आय का एक बड़ा हिस्सा गुटखा और तंबाकू जैसी चीजों पर खर्च कर देते हैं। यह न केवल उनके आर्थिक जीवन को कमजोर करता है, बल्कि बच्चों की पढ़ाई और परिवार की अन्य जरूरी जरूरतों पर भी असर डालता है।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो तंबाकू और गुटखा का सेवन युवा पीढ़ी में भी तेजी से बढ़ रहा है। स्कूल और कॉलेज के छात्र इन उत्पादों का प्रयोग कर रहे हैं, जो कि भविष्य में गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं की नींव डालता है। सरकार का यह कदम इस प्रवृत्ति को रोकने और युवाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सिर्फ बैन लगाना ही पर्याप्त नहीं है। लोगों में जागरूकता और शिक्षा भी उतनी ही जरूरी है। स्कूल, कॉलेज और स्थानीय समुदायों में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता अभियान चलाना आवश्यक है। जब तक लोग तंबाकू और गुटखा के खतरों के बारे में सही जानकारी नहीं पाएंगे, वे इनसे दूरी नहीं बनाएंगे। स्वास्थ्य मंत्रालय और स्थानीय प्रशासन को मिलकर विभिन्न अभियान चलाने चाहिए, जिसमें कैंसर और अन्य गंभीर बीमारियों के खतरों के बारे में जानकारी दी जाए। इसके साथ ही, लोगों को स्वास्थ्य सुधार के वैकल्पिक उपाय और तंबाकू से मुक्त जीवन जीने के तरीके भी बताने चाहिए।

- डॉ. प्रियंका सौरभ, लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार, हरियाणा

हरियाणा सरकार का यह निर्णय केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि कानूनी और प्रशासनिक दृष्टि से भी अहम है। 10 लाख रुपये तक का जुर्माना एक ऐसा प्रोत्साहन है जो दुकानदारों को इन उत्पादों की बिक्री से रोकने में मदद करेगा। इसके अलावा, यह कदम समाज में संदेश भेजता है कि स्वास्थ्य से खिलवाड़ करना गंभीर अपराध है। इस बैन के लागू होने के बाद अन्य राज्यों में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। यह कदम एक मिसाल बनेगा कि कैसे राज्य स्तर पर स्वास्थ्य सुरक्षा और कानून का संयोजन कर लोगों को सुरक्षित बनाया जा सकता है।

हरियाणा सरकार का यह फैसला न केवल स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से आवश्यक है, बल्कि यह समाज और युवा पीढ़ी के लिए भी एक संदेश है कि हानिकारक आदतों से दूरी बनाना ही बेहतर जीवन की कुंजी है। तंबाकू, गुटखा और पान मसाला जैसी चीज़ें केवल स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुँचातीं, बल्कि परिवार और समाज पर भी आर्थिक और सामाजिक दबाव डालती हैं। इस बैन से समय के साथ राज्य में तंबाकू और गुटखा से संबंधित बीमारियों की संख्या घटने की उम्मीद है। इसके साथ ही जागरूकता और शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से लोग स्वस्थ जीवन की ओर प्रेरित होंगे। यह कदम हरियाणा में स्वास्थ्य क्रांति की शुरुआत है और इसे सफल बनाने के लिए पूरे समाज, प्रशासन और परिवारों को मिलकर काम करना होगा।

अंततः, यह निर्णय यह संदेश देता है कि स्वास्थ्य सर्वोपरि है और समाज के हित में ठोस कदम उठाना किसी भी कीमत पर आवश्यक है। हरियाणा का यह उदाहरण पूरे देश के लिए एक प्रेरणा बन सकता है कि स्वास्थ्य सुरक्षा और कानूनी उपायों के माध्यम से भविष्य की पीढ़ियों को

उम्र बढ़ने वाले माता-पिता की देखभाल: समकालीन वास्तविकताओं के लिए कालातीत मूल्यों को अपनाना

विजय गर्ग

भारत में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जैसे कई अन्य देशों में। भारत में पुराने वयस्कों में से एक-पांचवें से अधिक अब अकेले या विशेष रूप से अपने पति या पत्नी के साथ रहते हैं, भारत में अनुदैर्ध्य वृद्धावस्था अध्ययन के अनुसार। भले ही चिकित्सा प्रगति के कारण जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है, लेकिन बुजुर्ग लोगों की भावनात्मक और सामाजिक भलाई अक्सर अवहेलना होती है। विशेषज्ञ सावधान करते हैं कि अकेलापन पुरानी बीमारियों के रूप में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। यह अवसाद का खतरा पैदा करता है, नींद को नुकसान पहुंचाता है और प्रतिरक्षा को नष्ट करता है।

इतने दूर के अतीत में, कई संस्कृतियों के परिवारों ने एक अनकहे लय का पालन किया: माता-पिता ने बच्चों को पाला, जिन्होंने तब अपने माता-पिता की देखभाल की, जब वे वृद्ध थे। ₹माता-पिता की देखभाल₹ का विचार एक निर्धारित व्यवस्था के बजाय रोजमर्रा की जिंदगी का विस्तार था। हर उत्सव, भोजन और सोने की कहानी में दादा-दादी शामिल थे, जो परिवार का अभिन्न अंग थे।

यह लय आज लड़खड़ा रही है। बुजुर्ग माता-पिता की दुनिया भर के शहरों और कस्बों में अकेले रहने की संभावना पहले से कहीं अधिक है, खासकर शहरी क्षेत्रों में। जिस तरह से समाज अपने बड़ों के साथ बातचीत करता है वह परमाणु परिवारों में वृद्धि, दूर-दूर के शहरों या राष्ट्रों में करियर का लालच और समकालीन जीवन की बढ़ती मांगों के परिणामस्वरूप बदल गया है। कई लोगों के लिए, माता-पिता के साथ बातचीत को संक्षिप्त फोन कॉल या वार्षिक यात्राओं में कम कर दिया गया है, जिससे एक शून्य हो जाता है जिसे प्रौद्योगिकी पूरी तरह से संबोधित नहीं कर सकती है।

भारत में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जैसे कई अन्य देशों में। भारत में पुराने वयस्कों में से एक-पांचवें से अधिक अब अकेले या विशेष रूप से अपने पति या पत्नी के साथ रहते हैं, भारत में अनुदैर्ध्य वृद्धावस्था अध्ययन के अनुसार। भले ही चिकित्सा प्रगति के कारण जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है, लेकिन बुजुर्ग लोगों की भावनात्मक और सामाजिक भलाई अक्सर अवहेलना होती है। विशेषज्ञ सावधान करते हैं कि अकेलापन पुरानी बीमारियों के रूप में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। यह अवसाद का खतरा पैदा करता है, नींद को नुकसान पहुंचाता है और प्रतिरक्षा को नष्ट करता है।

कहावत में सन्निहित माता, पिता, गुरु, देवम, बड़ों के प्रति श्रद्धा लंबे समय से भारतीय संस्कृति का एक मूलभूत पहलू रहा है। माता-पिता कई संस्कृतियों के नीतिवचन के पदानुक्रम के केंद्र में तैनात हैं। हालांकि, नियमित देखभाल के बजाय, यह सम्मान अब कई घरों में औपचारिक इशारों के माध्यम से दिखाया गया है। त्योहारों पर पैर छूने या जन्मदिन पर फूल भेजने पर विचार किया जा सकता है, वे चल रही भागीदारी और उपस्थिति को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते। माता-पिता जो एक बार देर रात अपने बच्चों का इंतजार करते थे, अब उनके कॉल का इंतजार करते हैं। विडंबना यह है कि तत्काल संचार के समय में, एक गहरा संबंध विकसित करना कठिन हो गया है। वीडियो कॉल और संदेश मौजूद हैं, लेकिन अक्सर जल्दबाज़ी या परफ़ेक्ट महसूस करते हैं।

सार्थक देखभाल के लिए आज सचेत प्रयास की आवश्यकता है। अतीत में, देखभाल व्यवस्थित रूप से हुई क्योंकि परिवार एक साथ रहते थे। अब, यह उद्देश्य पर होना चाहिए। स्क्रीन के व्याकुलता के बिना, केंद्रित बातचीत के दस मिनट, बिना बात किए एक साथ बिताए गए घंटों से बेहतर हो सकते हैं। माता-पिता की देखभाल में परिभाषित चुनौतियों में से एक भूमिकाओं का उलटा है। बच्चे देखभाल करने वाले बन जाते हैं, स्वास्थ्य, वित्त और कभी-कभी रहने की व्यवस्था के बारे में निर्णय लेते हैं। यह संक्रमण, जबकि आवश्यक है, यदि संवेदनशीलता के साथ संभाला जाता है, माता-पिता की गरिमा और स्वतंत्रता को संरक्षित कर सकता है। सहयोगात्मक निर्णय

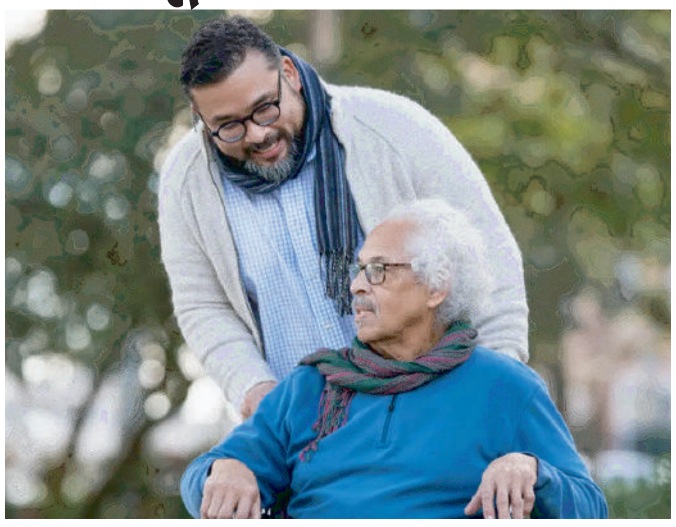

लेना, हालांकि शायद कई बार मुश्किल होता है, मदद करता है। विकल्पों को निर्धारित करने के बजाय, उन्हें साझा चर्चाओं के रूप में तैयार करना यह सुनिश्चित करता है कि माता-पिता अपने जीवन में सक्रिय प्रतिभागी बने रहें। देखभाल की भाषा मायने रखती है: ₹क्या हम इस डॉक्टर के पास जाएंगे ₹आपको इस डॉक्टर को देखना चाहिए₹ से अधिक सम्मान का संचार करता है

सभी बच्चे अपने माता-पिता के करीब नहीं रह सकते, लेकिन दूरी का मतलब टुकड़ी नहीं है। दूर से देखभाल के लिए भावनात्मक और व्यावहारिक समर्थन के मिश्रण की आवश्यकता होती है। नियमित, सार्थक संचार मायने रखता है - उनके दिन के बारे में पूछना, उनके शौक और उनकी यादों पर चर्चा करना। स्वास्थ्य समन्वय महत्वपूर्ण है, चिकित्सा रिपोर्ट के डिजिटल रिकॉर्ड और आपात स्थिति में विश्वसनीय स्थानीय समर्थन की व्यवस्था के साथ । अच्छी रोशनी, रेल हड़पने और गैर पर्ची फर्श जैसे छोटे समायोजन घरों को सुरक्षित बना सकते हैं। साझा गतिविधियां - एक ही पुस्तक को पढ़ना, कॉल पर एक साथ एक कार्यक्रम देखना, या व्यंजनों का आदान-प्रदान करना - ऐसे क्षण बनाएं जो बांड को जीवित रखते हैं।

अलगाव उम्र बढ़ने की चुनौतियों को गहरा करता है, और सामाजिक संपर्क मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। माता-पिता को सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने, रुचि-आधारित समूहों में शामिल होने या दोस्तों के साथ जुड़े रहने में मदद कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन मंचों और शौक वर्गों के साथ सहज लोगों के लिए सगाई के लिए नए रास्ते खोलते हैं। लाभ दोगुना हैं: सक्रिय दिमाग तेज रहते हैं, और एक मजबूत सामाजिक नेटवर्क हर जरूरत के लिए परिवार पर निर्भरता को कम करता है, दोनों तरफ भावनात्मक तनाव को कम करता है। छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में, बड़ों को परिवार के करीब रहने की अधिक संभावना होती है, लेकिन अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है - सीमित स्वास्थ्य देखभाल पहुंच, शारीरिक श्रम की मांग, और कम मनोरंजक अवसर। दुनिया भर के शहरों में, उनके पास बेहतर सुविधाएं हो सकती हैं लेकिन भावनात्मक अलगाव से पीड़ित हैं। इस अंतर को पाटने के लिए नीतिगत ध्यान और पारिवारिक प्रतिबद्धता दोनों की आवश्यकता होती है। कुछ देशों में, वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिए कानूनी ढांचे मौजूद हैं, लेकिन अकेले कानून मानव कनेक्शन की गर्मी को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं।

बूढ़े माता-पिता को दी गई देखभाल केवल एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है; यह एक सामाजिक निवेश है। जब बुजुर्ग मूल्यवान महसूस करते हैं, तो वे अपने परिवारों और समुदायों के लिए सक्रिय योगदानकर्ता बने रहते हैं। उनकी कहानियां, कौशल और ज्ञान युवा पीढ़ी को समृद्ध करते हैं, उन्हें उन मूल्यों में ग्राउंडिंग करते हैं जो भौतिक विरासत को रेखांकित करते हैं। इसके अलावा, बच्चे उदाहरण के द्वारा सीखते हैं। जिस तरह से वयस्क अपने माता-पिता का इलाज करते हैं, वह इस बात के लिए टेम्पलेट सेट करता है कि बाद के वर्षों में उनके साथ कैसा व्यवहार किया जा सकता है।

भारत के तेजी से आधुनिकीकरण को पारिवारिक निकटता की अपनी परंपराओं की कीमत पर आने की जरूरत नहीं है। माता-पिता की देखभाल का मतलब पुरानी संरचनाओं से चिपके रहना नहीं है; इसका मतलब है समकालीन वास्तविकताओं के लिए कालातीत मूल्यों को अपनाना। लचीले काम की व्यवस्था, परस्पर रहन-सहन, और सामुदायिक सहायता प्रणाली सभी एक भूमिका निभा सकते हैं। लक्ष्य अतीत को फिर से बनाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए है कि आगे की दौड़ में, समाज उन लोगों को नहीं छोड़ता है जिन्होंने उस यात्रा को संभव बनाया है।

बुजुर्ग केवल आश्रित नहीं हैं; वे इतिहास जी रहे हैं। उनकी उपस्थिति लचीलापन, बलिदान और बिना शर्त प्यार की याद दिलाती है। माता-पिता की देखभाल एक ऋण का पुनर्भुगतान नहीं है, क्योंकि कोई भी पुनर्भुगतान जीवन भर पोषण के बराबर नहीं हो सकता है। यह उनके जीवन के अंतिम अध्यायों में जड़ों का सम्मान है। कॉल सरल है: अधिक बार जाएं, अधिक गहराई से सुनें, उन्हें निर्णयों में शामिल करें, और उन्हें सुना और देखा हुआ महसूस करें।

एक संस्कृति को उसकी सबसे ऊंची इमारतों या सबसे तेज प्रौद्योगिकियों द्वारा नहीं मापा जाता है, लेकिन यह उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है जो पहले रास्ते पर चले गए हैं। एक पुरानी कहावत के शब्दों में, ₹जब कोई बूढ़ा व्यक्ति मर जाता है, तो एक पुस्तकालय जमीन पर जल जाता है समाजों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके पुस्तकालय बरकरार रहें - धूल और एकांत इकट्ठा न करें, लेकिन अंतिम पृष्ठ तक पढ़ा, मूल्यवान और मनाया जा रहा है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारत से गिद्ध लुप्त हो रहे हैं।

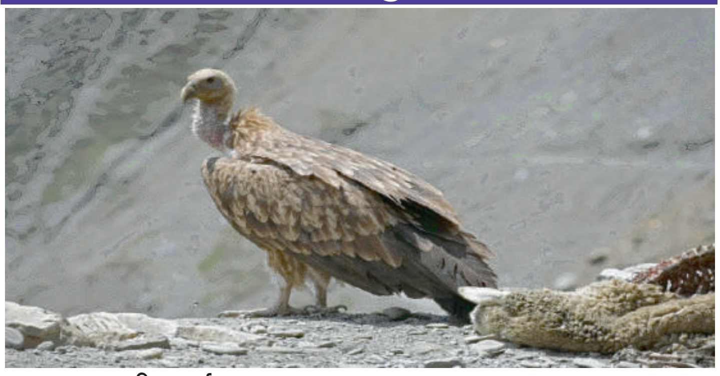

विजय गर्ग

भारत से गिद्धों के लुप्त होने के वास्तविक कारण - पैंतीस-चालीस साल पहले गिद्ध आम थे, लेकिन अब लगभग लुप्त हो गए हैं। ये ज़्यादातर हद्दा रोरियन/करंगा हेरी में देखे जाते थे, जहाँ ये मरे हुए जानवरों का मांस खाते थे। यही मांस उनका मुख्य आहार था। वे मरे हुए जानवरों का मांस खाते थे, जिससे उससे आने वाली दुर्गंध दूर हो जाती थी। इस प्रकार, समय पर मांस का वध करने से कई बीमारियों के फैलने से राहत मिलती थी। जानवरों का मांस खाने के बाद, वे पास के ऊँचे पेड़ों पर जाकर बैठ जाते और वहाँ खुरदुरे, मोटे घोंसले बना लेते। खास तौर पर पुर पीपल और टाहली के पेड़ उनके रात्रि-आश्रय थे।

गिद्धों के विलुप्त होने के वास्तविक कारण -

जो लोग मृत पशुओं को बूचड़खानों में ले जाते हैं और उनकी खाल उतारते हैं, उन्होंने पशुओं को मारना और उनका मांस बेचना शुरू कर दिया है। इस कारण वहां केवल हड्डियां ही बचीं, जिन्हें आवारा कुत्ते नोच रहे थे। इस प्रकार, गिद्धों को भोजन मिलना बंद हो गया और वे यहां-वहां भटकने को मजबूर हो गए, जिससे वे विलुप्त होने की ओर बढ़ गए। आज भी ठेकेदार गांवों और शहरों से पशुओं को लाते हैं और उनकी खाल उतारने के बाद उनका मांस और हड्डियां बेच देते हैं।

ऊंचे पीपल और टाहली के पेड़ों में भी भारी गिरावट आई, जिसके कारण उनके रैन बसेरे भी स्थिर नहीं रहे।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, गिद्धों के विलुप्त होने के वास्तविक कारण ये हैं।

सड़कों और नहरों के किनारे हर मील पर पीपल, टाहली, सरिंह और नीम के पेड़ लगाए जाने चाहिए ताकि हवा साफ़ रहे और पक्षी वहाँ घोंसला बना सकें। इसके अलावा, गाँवों में सार्वजनिक जगहों पर भी ऐसे पेड़ लगाए जाने चाहिए।

गिद्धों को बाज़ भी कहा जाता है, क्योंकि बाज़ गिद्धों से हल्के होते हैं। बाज़ पहले बिना पंखों के आसमान में उड़ते हुए आम तौर पर देखे जाते थे, लेकिन अब वे भी लुप्त हो गए हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

पश्चिम में आयुर्वेद: प्राकृतिक उपचार वैश्विक विश्वास क्यों प्राप्त कर रहा है

विजय गर्ग

चिकित्सा की एक प्राचीन भारतीय प्रणाली आयुर्वेद, अपने समग्र दर्शन और निवारक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने के कारण, विशेष रूप से पश्चिम में वैश्विक विश्वास प्राप्त कर रहा है। जबकि पश्चिमी चिकित्सा तीव्र स्थितियों के इलाज में उत्कृष्टता प्राप्त करती है, अधिक लोग दीर्घकालिक स्वास्थ्य और जीवन शैली प्रबंधन के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण की तलाश कर रहे हैं। बढ़ती लोकप्रियता के लिए प्रमुख कारण

समग्र और व्यक्तिगत दृष्टिकोण: आयुर्वेद स्वास्थ्य को मन, शरीर और आत्मा के संतुलन के रूप में देखता है। यह ₹एक आकार-फिट-ऑलर₹ प्रणाली नहीं है। प्रैक्टिशनर तीन मौलिक ऊर्जाओं या दोषों (वात, पित्त और कफ) के आधार पर एक व्यक्ति के अद्वितीय संविधान, या प्रकृति का निर्धारण करते हैं। आहार, हर्बल उपचार, योग और ध्यान सहित उपचार, संतुलन को बहाल करने और बीमारी को रोकने के लिए व्यक्ति के अनुरूप हैं।

रोकथाम पर जोर: केवल लक्षणों का इलाज करने के बजाय, आयुर्वेद का उद्देश्य बीमारी के मूल कारण को संबोधित करना है। यह एक ऐसी जीवनशैली को बढ़ावा देता है जो बीमारियों को पहले स्थान पर विकसित होने से रोकती है, जो तनाव, मधुमेह और हृदय रोग जैसी पुरानी, जीवन शैली से संबंधित स्थितियों से तेजी से निपटने के लिए एक आधुनिक दुनिया की अपील करती है।

प्राकृतिक और सतत उपचार: प्राकृतिक उत्पादों के लिए बढ़ती उपभोक्ता वरीयता और सिंथेटिक रसायनों का अविश्वास है। आयुर्वेद का जड़ी बूटियों और प्राकृतिक अवयवों का उपयोग इस प्रवृत्ति के साथ प्रतिध्वनित होता है। हल्दी और अश्वगंधा जैसे कई आयुर्वेदिक अवयवों को उनके विरोधी भड़काऊ, एडाप्टोजेनिक और अन्य लाभकारी गुणों के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा मान्य किया गया है।

आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण: कई पश्चिमी स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर दोनों प्रणालियों की ताकत को मिलाकर एक एकीकृत दृष्टिकोण के लाभों को पहचान रहे हैं। जबकि आधुनिक चिकित्सा आघात और गंभीर बीमारी के लिए महत्वपूर्ण, जीवन रक्षक हस्तक्षेप प्रदान करती है, आयुर्वेद पूरक प्रथाओं की पेशकश करता है जो समग्र कल्याण में सुधार कर सकते हैं, पारंपरिक उपचारों के दुष्प्रभावों को कम कर सकते हैं, और पुरानी स्थितियों का प्रबंधन कर सकते हैं।

चुनौतियां और चिंताएं अपनी बढ़ती स्वीकृति के बावजूद, आयुर्वेद पश्चिम में चुनौतियों का सामना करता है। इनमें मानकीकृत नियमों और पश्चिमी वैज्ञानिक मानकों को पूरा करने वाले कठोर नैदानिक परीक्षणों की कमी शामिल है। गुणवत्ता नियंत्रण और कुछ हर्बल तैयारियों में भारी धातु संदूषण की क्षमता के बारे में भी चिंताएं हैं। इन बाधाओं पर काबू पाना आयुर्वेद के वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों में निरंतर एकीकरण के लिए महत्वपूर्ण होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पित्त बढ़ने के लक्षण

1. सीने या पेट में जलन
2. खट्टी डकारें
3. अत्यधिक पसीना
4. मुँह का स्वाद कड़वा
5. चिड़चिड़ापन व गुस्सा
6. आँखों में जलन
7. बार-बार प्यास लगना
8. पतले दस्त या गर्म मल

दो-तीन दिन में पित्त शांत करने वाली असरकारी आयुर्वेदिक औषधियां

1. अविपत्तिकर चूर्ण (Avipattikar Churna):- डोज़ 3–5 ग्राम चूर्ण, भोजन के बाद गुनगुने पानी से

लाभ :- एसिडिटी, जलन, कब्ज और पाचन दोष में तुरंत राहत

2. कामदुधा रस (Kamdudha Ras) – मुक्तायुक्त :- डोज़:- 125–250 mg दिन में दो बार ठंडे पानी या गुलाब जल से

लाभ:- जलन, दस्त, पेशाब की जलन और मानसिक अशांति में लाभकारी

3. सूतशेखर रस (Sutshekhar Ras), डोज़:- 125–250 mg दिन में 2 बार, शीतल जल के साथ

लाभ:- वमन, अम्लपित्त, घबराहट में तुरंत राहत

4. शंख भस्म (Shankh Bhasma), डोज़:- 250 mg मधु या घी के साथ दिन में दो बार

लाभ:- गैस, जलन और अम्लपित्त के लिए कारगर

5. चंदनादि वटी (Chandanadi Vati), डोज़:- 1–1 गोली दिन में दो बार ठंडे पानी के साथ

लाभ:- पित्तजन्य जलन, पेशाब की दिक्कत और शरीर की गर्मी में राहत

6. गिलोय सत्व (Giloy Satva), डोज़:- 250 mg शहद के साथ

लाभ:- प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाए, पाचन सुधारे और पित्त को शांत करे

कुछ घरेलू उपाय (Quick Home Remedies)

1. धनिया पानी:- रातभर 1 चम्मच धनिया 1 गिलास पानी में भिगोकर सुबह छानकर पी जाएं
2. सौंफ-गुड़ मिश्रण:- खाना खाने के बाद 1 चुटकी सौंफ + थोड़ा गुड़
3. आंवला जूस:- सुबह खाली पेट 15 ml आंवला रस, थोड़ा पानी मिलाकर
4. गुलकंद: सुबह-शाम 1 चम्मच ठंडे दूध के साथ

किन चीजों से बचें?

1. मिर्च, मसालेदार और तला हुआ खाना
2. चाय, कॉफी, शराब
3. अत्यधिक देर रात तक जागना
4. दिन में सोना
5. मानसिक तनाव

नारी सशक्तिकरण (नवरात्र विशेष)

संघर्ष से सिद्धि तक: प्रियंका सौरभ की प्रेरक यात्रा

प्रियंका का संघर्ष: मौन में लिखी गई कहानी

(लेखन के साथ-साथ प्रियंका शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। वे Unacademy और अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से लड़कियों को निःशुल्क कोचिंग प्रदान करती हैं। उनके प्रयास विशेष रूप से निराश्रित महिलाओं, विधवाओं, विकलांग महिलाओं और बच्चों के उत्थान के लिए हैं।

अपने लेखन, सेमिनारों और सामाजिक कार्यों के माध्यम से प्रियंका सौरभ नई पीढ़ी की महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुकी हैं।)

स्नातक की पढ़ाई के दौरान विवाह, सीमित संसाधन, गाँव की पृष्ठभूमि और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच प्रियंका ने हार नहीं मानी। माँ बनीं, गृहिणी बनीं, लेकिन कलम नहीं छोड़ी। पढ़ाई जारी रखी — डबल एम.ए., एम.फिल और अब पीएच.डी। पाँचवीं बार सरकारी नौकरी प्राप्त की और हरियाणा शिक्षा विभाग में प्रवक्ता बनीं। घर, बच्चों, स्कूल और समाज के बीच लेखन को जिया, रातों की नींद और सामाजिक चुप्पियों को पन्नों पर उतारा। उनका संघर्ष शोर नहीं करता, लेकिन हर शब्द में एक संघर्षशील स्त्री की अनकही शक्ति बोलती है।

हर युग में कुछ आवाज़ें होती हैं जो भाषण नहीं देतीं, आंदोलन नहीं चलातीं, बस चुपचाप लिखती हैं — और फिर भी इतिहास को मोड़ देती हैं। प्रियंका सौरभ ऐसी ही एक सृजनशील शक्ति हैं, जिन्होंने न पगड़ी पहनी, न पताका उठाई — लेकिन उनकी कलम ने वो कर दिखाया, जो कई क्रांतियाँ भी न कर सकीं।

हरियाणा के हिसार ज़िले के आर्य नगर गाँव से शुरू हुआ प्रियंका का सफर आज वैश्विक मंच तक गूंज रहा है। स्नातक के समय ही विवाह हो गया, पर जीवन की रफ्तार रुकी नहीं। राजनीति विज्ञान में डबल एम.ए. और एम.फिल करने के बाद वे शिक्षा विभाग में प्रवक्ता बनीं। पाँचवीं सरकारी नौकरी, और अब पीएच.डी की शोध यात्रा — उनका जीवन लेखन और शिक्षा का संगम बन गया।

2020 की वैश्विक महामारी जहाँ ठहराव बनी, प्रियंका के लिए वह 'समय की रेत पर' लिखने का समय बन गई। इसी शीर्षक से उनका निबंध संग्रह सामने आया, जिसमें उन्होंने समाज, मन, और मनुष्यता के बीच के झंझावातों को दर्ज किया।

प्रियंका सौरभ की नौ पुस्तकें उनके साहित्यिक विस्तार और सरोकारों का प्रमाण हैं — दीमक लगे गुलाब, चूल्हे से चाँद तक, मौन की मुस्कान (काव्य संग्रह), परियों से संवाद, बच्चों की दुनिया (बाल साहित्य), समय की रेत पर, निर्भयें (हिंदी निबंध संग्रह), Fearless (अंग्रेज़ी निबंध संग्रह) और आंचल की चुप्पी (लघुकथा संग्रह)। इनमें हर किताब किसी एक अनकही संवेदना या हाशिए पर छूटे हुए समाज की वाणी बनती है।

उनका लेखन कोई घोषणापत्र नहीं, आत्मा का जल है। वे उन विषयों को उठाती हैं जिनसे समाज अक्सर आँखें चुराता है — दिव्यांग बच्चों की पीड़ा, बुजुर्गों की उपेक्षा, शिक्षकों का मानसिक बोझ, स्त्रियों की चुप्पियाँ। वह स्त्री विमर्श को नारे में नहीं, संवेदना में ढालती हैं। उनकी कविताएं और लघुकथाएं पाठकों को झकझोरती नहीं, बल्कि सोच की ज़मीन को उपजाऊ बनाती हैं।

संघर्ष से सिद्धि तक (एक प्रेरक झलक)

- शुरुआत: स्नातक की छात्रा के रूप में विवाह
- पढ़ाई: राजनीति विज्ञान में डबल M.A. और M.Phil
- रोजगार: पाँचवीं सरकारी नौकरी — प्रवक्ता, हरियाणा शिक्षा विभाग
- वर्तमान: पीएच.डी शोधार्थी, लेखिका, स्तंभकार
- साहित्यिक योगदान: 9 पुस्तकें, 10,000+ लेख, वैश्विक मंचों पर लेखन
- सम्मान: IPS मानव पुरस्कार, नारी रत्न, सुपर वुमन अवार्ड, अंतरराष्ट्रीय डॉक्टरेट्स

>₹संघर्ष केवल बाधा नहीं, सीढ़ी भी हो सकता है — प्रियंका की यात्रा इसका प्रमाण है।₹ उनका साहित्य कोई ब्रांड नहीं, विचार का बीज है। सम्मान और पुरस्कार उनके पीछे आए।

₹मैंने अपने हिस्से का आकाश नहीं माँगा,
मैंने बस इतना चाहा —
कि जो ज़मीन मेरी सोच को उगने दे,
वो बंजर न हो।"

— प्रियंका सौरभ

किताबों संग सफर छीना मोबाइल ने

विजय गर्ग

एक समय था जब रेल यात्राओं का साथी किताबें हुआ करती थीं। स्टेशन की बुकस्टॉल से उपन्यास खरीदकर लोग सफर का आनंद लेते थे। सहयात्रियों से बातचीत होती थी, कहानियां साझा होती थीं। आज मोबाइल स्क्रीन ने वह सब छीन लिया है। अब सफर है, मगर वह रूह नहीं रही।

अहमदाबाद के रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के आने में देरी थी। इंतजार के दौरान बेंच पर बैठा व्यक्ति अपने बैग की तरफ हाथ बढ़ाता है, यह सोचते हुए कि टाइम पास करने के लिए मोबाइल निकाले या किताब। फिर दोनों का इरादा छोड़ देता है। अक्सर देखा जाता है कि गाड़ी की प्रतीक्षा या सफर में लोग अपना समय व्यतीत करने के लिए कुछ न कुछ अपने साथ रखते हैं। आज के समय में देखें तो जिस तरफ भी निगाह दौड़ाई जाती है, उसी तरफ लोग अपने-अपने मोबाइल स्क्रीन में नज़रें गड़े हुए होते हैं। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं होता।

ज़िंदगी को दो दशक पहले रिवाइंड किया जाए तो रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म की बुकस्टाल की तरफ लोग तेज़ी से जाते हुए देखे जा सकते थे, ताकि ट्रेन आने से पहले कोई पत्रिका या उपन्यास खरीद सकें और सफर में बोरियत न हो। फिर जब कोई सह-यात्री अख़बार या पत्रिका पढ़ने के लिए मांगे, तो उससे खेल, सियासत या फिल्मों पर अच्छी गुफ़्तगू की शुरुआत भी हो जाती थी। चूंकि ट्रेन पर कैसी भी पत्रिकाएं पढ़ने का अपराध बोध नहीं होता था, इसलिए स्टाल से अक्सर क्राइम या फिल्मों की पत्रिकाएं खरीदी जाती थीं, जिन्हें पढ़कर ट्रेन में ही छोड़ दिया जाता था, अगले यात्री के लिए। गंभीर किस्म के यात्री अख़बार या समाचार पत्रिकाएं खरीदते थे।

ट्रेन के अंदर हर कोई बिना संकोच के एक-दूसरे की खरीदी हुई पत्रिकाएं मांग लेता था। हालांकि ज्योतिष पर किताबें खरीदते हुए कम ही देखा गया, जबकि प्लेटफार्म बुकस्टाल्स पर उनका अच्छा-खासा स्टॉक रहता था। सबसे ज्यादा बिक्री पॉकेटबुक्स की हुआ करती थी। गुलशन नंदा, वेद प्रकाश शर्मा आदि की दुकान रेलवे प्लेटफॉर्म्स की वजह से ही चलती थी। एयरपोर्ट्स पर हेरोल्ड रॉबिन्स, सिडनी शेल्डन, अगाथा क्रिस्टी जैसे लेखक अधिक बिकते थे, क्योंकि वहां स्टेटस की बात होती थी। और सआदत हसन मंटो की 'बदनाम कहानियां' तो हर जगह सदाबहार थीं, और आज भी हैं— मोबाइल पर।

आखिर ट्रेन का लंबा सफर कैसे कटता था? खिड़की से खेत-खलिहानों को कितनी देर तक देखा जा सकता था, सह-यात्रियों से कितनी बातें होतीं, घर से लाया हुआ या विभिन्न रेलवे स्टेशनों से खरीदा हुआ खाना कब तक खाया जाता था... तब भी काफी समय बच जाता था, जिसे पढ़कर ही काटा जा सकता था। फिल्म 'आराधना' (1969) में शर्मिला टैगोर का वह दृश्य याद आता है, जब दार्जीलिंग टॉय ट्रेन में खिड़की की सीट पर बैठकर वह एलिसटियर मैकलीन की 'व्हेन एट बेल्स टोल' पढ़ रही थीं। उनका ध्यान कौन भटका सकता था, सिवाय राजेश खन्ना के जो पटरी के समानांतर चलती सड़क पर ओपन जीप में हैं और 'मेरे सपनों की रानी कब आयेगी तू' गा रहे हैं। ऐसे सुंदर वातावरण में शर्मिला की हिम्मत थी कि वह जहाजों और समुद्री लुटेरों से संबंधित किताब पढ़ रही थीं।

लोग ट्रेनों में किताबें पढ़ते थे, इस अदा को फिल्मकारों ने भी खूब भुनाया है। 'अंगूर' (1982) में ट्रेन के कूपे में संजीव कुमार को वेद प्रकाश कम्बोज की थ्रिलर पढ़ते हुए दिखाया गया है। वह पुस्तक के प्लॉट में इतना अधिक डूब जाते हैं कि जैसे ही कोई उनके कंधे पर हाथ रखता है, तो वह डर के मारे उछल पड़ते हैं और उन्हें लगता है कि हर कोई बदमाश गैंग का हिस्सा है। फिल्म 'मेरे हुज़ूर' में जितेंद्र लेडीज डिब्बे में चढ़ जाते हैं, जहां वह पर्दानशीं माला सिन्हा का चेहरा देखने के लिए 'रुख से ज़रा नकाब हटा दो मेरे हुज़ूर' गाते हैं। 'पाकीजा' के आइकोनिक सीन में राजकुमार सोती हुई मीना कुमारी के मेहंदी लगे पांव में तारीफ का एक पर्चा लिखकर चले जाते हैं कि आपके पांव बहुत खूबसूरत हैं, इन्हें ज़मीन पर मत उतारना, मैले हो जायेंगे। मीना कुमारी उस पर्चे को तावीज़ बनाकर हमेशा अपने पास रखती हैं। फिल्म 'दूर की आवाज़' में जॉय मुखर्जी और सायरा बानो की मुलाकात और इश्क़ ट्रेन में ही होता है। शाहरुख़ खान और काजोल पहली बार ट्रेन में ही मिलते हैं और फिर 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' ट्रेन में ही लेकर चले जाते हैं।

आज भी लोग ट्रेन के उस सफर को याद करते हैं, जब हाथ में किताब हुआ करती थी और सफर का आनंद एक अलग ही अनुभव होता था। इ.रि.सें.

रामलीला : हमारी लोक संस्कृति

डॉ नीरज भारद्वाज

भगवान श्रीराम भारतीय जन मानस की आत्मा हैं। भगवान श्रीराम का जीवन हम सभी के लिए आदर्श है। भगवान श्रीराम व्यक्ति नहीं, विश्वास हैं। श्रीराम को जानने के लिए उनके जीवन चरित्र को समझना अति आवश्यक है। राम का नाम इस भवसागर से पार उतार ले जाता है। श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम हम सबके अंदर बसे हैं. राम नाम ही हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे साथ रहता है। जब श्रीराम की बात होती है तो श्रीरामकथा और रामलीला की बात जरूर होती है। श्रीरामकथा करने वाले विद्वान आचार्य, साधु, संत महात्मा होते हैं जो स्वयं राममय होकर राम नाम को जीते हैं।

जहां तक रामलीला की बात है, भारतीय लोक संस्कृति में रामलीला का बहुत महत्व है। रामलीला का मंचन भारतीय जनमानस में नवऊर्जा और नवप्राण भर देने का काम करती है। भारतीय जनमानस में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा, जिसने रामलीला ना देखी हो। रामलीला का मंचन अपने आप में अद्भुत है। श्रीराम का चरित्र, उनसे जुड़ी घटनाएं, हम सबके लिए आदर्श हैं। रामलीला का एक-एक दिन अलग-अलग शिक्षा देती रहती है। भगवान श्रीराम के चरित्र को रामलीला के माध्यम से मंचित किया जाता है। रामलीला में हर वर्ग का व्यक्ति हिस्सा लेता है और दर्शक भी हर वर्ग का होता है। उसमें बच्चे, युवा सभी आते हैं। रामलीला का महत्व केवल इतना ही नहीं है कि उसमें श्रीराम के चरित्र को दिखाया बताया जाता है बल्कि आप इसे सांस्कृतिक दृष्टि से भी देखें और समझे तो रामलीला के अंदर पूरा भारतीय समाज दिखाई देता है।

दूसरी ओर रामलीला में लोकगीतों की एक बहुत लंबी परंपरा छिपी हुई है। रामलीला के लगभग हर एक दृश्य में लोकगीत चलते हैं और उनका गायन भी होता है। कई सारी रामलीलाएं तो संगीत आधारित होती हैं अर्थात चौपाइयों के गायन या फिर लोकगीतों के आधार पर होती हैं। कलाकार अपनी कलाएं, अपनी मुद्राएं बिखेर कर दर्शकों को रसानुभूति कराते हैं। लोकगीत के साथ-साथ लोक नृत्य भी रामलीला का प्रमुख अंग है। रामलीला के अंदर कई दृश्यों में नृत्य की मुद्राएं भी सामने आ जाती हैं। इन सभी बातों के अलावा रामलीला हम सबके रीति-रिवाज, परंपराओं को भी दिखाती है। राजसी वेशभूषा, तपस्वी वेशभूषा, आरती, पूजा पाठ, तीज-त्योहार, सामान्य जन का सहयोग आदि सभी कुछ दिखाया जाता है। भगवान श्रीराम का जीवन मर्यादाओं से बंधा है और वह सृष्टि के हर एक जीव को अपने साथ लेकर चलते हैं। हर एक जीव से बात करते हैं, जिससे कि लोगों में सृष्टि, संस्कृति, पर्यावरण, प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।

रामलीला में समाज का हर एक रूप दिखाई देता है। भगवान श्रीराम की सामाजिक चेतना यह है कि वह राजघराने से निकलकर वनवासी रूप में आते हैं और रावण का वध करके वापस राजा बनते हैं। कठोर व्रत को धारण करते हैं, वनवास के समय किसी भी राजा के राजमहल या सुख-सुविधा का आनंद नहीं लेते हैं। इस पूरी यात्रा में भगवान श्रीराम वानर, भालू, पक्षी, नदी, पहाड़, झरने सभी से मिलते हैं और सभी भगवान राम का सहयोग भी करते हैं। भगवान श्रीराम भी कहीं ना कहीं इनका सहयोग करते हैं। रामलीला में यह सामाजिक चेतना समाज को नवजीवन भरने का संदेश देती है। कैसे भगवान होते हुए भी स्वयं श्रीराम प्रकृति को बचाने का संदेश दे रहे हैं। रीति-रिवाज, परंपराओं को पुनः जीवित करने का काम करते हैं।

हर वर्ष रामलीला का होना हमारी संस्कृति का बहुत बड़ा हिस्सा है। रामलीलाओं से समाज को शिक्षा, संस्कृति, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, लोक गायन आदि सभी का ज्ञान होता है। समाज अपनी परंपराओं से जुड़ा रहता है। रामलीला केवल मंचन ही नहीं, दृश्य या कोई नाटक ही नहीं, बल्कि समाज रीति-रिवाज, परंपरा, लोकगीत, लोकनृत्य आदि का समावेश है। रामलीला का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ा है, भारतीय समाज की बात करें तो रामलीलाओं में नए युग का प्रादुर्भाव भी हुआ है। तकनीक के साथ रामलीला को जोड़ा गया है। रामलीला भारतीय लोककला और लोकसंस्कृति का बहुत बड़ा कार्य है। रामलीला में सभी पात्र अपने पूरी निष्ठा, भक्ति, प्रेम के साथ काम करते हैं। रामलीला केवल मंच पर दिखने वाला दृश्य ही नहीं बल्कि एक भक्तिपरक, भावात्मक पक्ष है।

सऊदी-पाक सुरक्षा समझौते से भारत चिंतित क्यों

राजेश कुमार पासी

सऊदी अरब और पाकिस्तान ने नाटो देशों की तरह सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके बारे में कहा जा रहा है कि एक देश पर हमला दोनों देशों पर हमला माना जाएगा और दोनों देश मिलकर उसका जवाब देंगे । इस समझौते का पूरा वर्णन अभी हासिल नहीं हुआ है क्योंकि हो सकता है कि इस समझौते में गुप्त प्रावधान भी रखे गए हों । इस समझौते के कारण न केवल सुरक्षा और कूटनीति विशेषज्ञ परेशान हैं बल्कि भारत की आम जनता भी चिंतित है। इस चिंता की वजह यह है कि नाटो देश भी ऐसे ही समझौते से बंधे हुए हैं, इसलिए कोई भी देश उन पर हमला नहीं करता है क्योंकि सबको पता है कि अगर उसने एक देश पर हमला किया तो उस पर सारे नाटो देश टूट पड़ेंगे। पाकिस्तान की जनता बहुत खुश है क्योंकि उसे लगता है कि अगर भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया तो सऊदी अरब पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत का मुकाबला करेगा । पाकिस्तानी प्रधानमंत्री को इसके लिए पाकिस्तानी जनता बधाई दे रही है जबकि भारत की जनता चिंतित है क्योंकि उसे लगता है कि ऑपरेशन सिंदूर जारी है और अगर भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया तो सऊदी अरब की मदद से पाकिस्तान पूरी ताकत से भारत का मुकाबला करने की कोशिश करेगा ।

भारतीय विदेश विभाग इसको बड़ी संवेदनशीलता से देख रहा है और उसने बयान दिया है कि वो देख रहा है कि इस समझौते का भारत पर क्या असर हो सकता है । ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी थी, अब भारत को देखना है कि अगर दोबारा ऐसा होता है तो सऊदी अरब पाकिस्तान की कैसी मदद कर सकता है । सऊदी अरब को पाकिस्तान की मदद करने से रोकने के लिए भारत क्या कर सकता है, इस पर भारतीय सरकार और सेना ने विचार करना शुरू कर दिया होगा । वैसे देखा जाए तो यह समझौता भारत को देखते हुए नहीं किया गया है और इसकी पहल भी पाकिस्तान की तरफ से नहीं हुई है । इजराइल द्वारा कतर की राजधानी दोहा पर किया गया हमला इसकी मुख्य वजह है जो हमास नेताओं को निशाना बनाकर किया गया था ।

इस हमले के कारण पूरे अरब जगत में भय का वातावरण पैदा हो गया है क्योंकि सऊदी अरब सहित ज्यादातर अरब देशों की सुरक्षा की जिम्मेदारी अमेरिका ने संभाल रखी है । इस हमले पर अमेरिका ने चुप्पी साध ली है जिसके कारण सभी अरब देश परेशान हैं । इससे पहले सऊदी पर ईरान समर्थित आतंकवादी संगठन हमला कर चुके हैं । अमेरिका के रवैये से लग रहा है कि वो अब अरब देशों की सुरक्षा देने का इच्छुक नहीं है । सऊदी को लगता है कि अब सिर्फ अमेरिका के भरोसे नहीं रहा जा सकता, उसे दूसरे विकल्पों पर भी विचार करना होगा । पाकिस्तान सऊदी अरब का पुराना सहयोगी है और उसकी सेना का प्रशिक्षण भी पाकिस्तानी सेना द्वारा किया जाता है । पाकिस्तान परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र है इसलिए सऊदी ने पाकिस्तान को अपने विकल्प के रूप में चुना है । वैसे दोनों देशों का कहना है कि उनका समझौता किसी देश को देखकर नहीं किया गया है लेकिन सबको पता है कि पाकिस्तान का दुश्मन कौन है और सऊदी का कौन है ।

नवीन के स्वास्थ्य पर तूफान: बीजद क्यों परेशान ?

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : विपक्ष के नेता नवीन पटनायक की कुछ दिन पहले तबीयत खराब हो गई थी ।भाजपा के सत्ता में आने से पहले, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान राज्य का दौरा किया था। एक बैठक को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान विपक्ष के नेता का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यह पता नहीं है कि उन्हें क्या हुआ है। इसलिए, जब भाजपा सरकार राज्य में आई, तो उसने नवीन के स्वास्थ्य की जांच के लिए एक समिति बनाई और कहा कि उनकी गिरावट के लिए कौन जिम्मेदार होगा ? अब जब भाजपा सरकार राज्य में आ गई है, तो मुख्यमंत्री को नवीन के स्वास्थ्य की जांच के लिए एक समिति बनानी चाहिए, भाजपा सदस्य बिभूति भूषण ने प्रधान सदन में एक व्यवस्था का प्रश्न उठाया। बिभूति के बयान के बाद, बीजद सदस्य तुरंत सदन में खड़े हो गए। सबसे पहले, विपक्ष के उपनेता प्रसन्ना आचार्य ने बिभूति के बयान का विरोध किया और कहा कि नवीन का स्वास्थ्य अच्छा है। उन्होंने कहा कि वह किसी काम से नई दिल्ली के दौरे पर थे। उन्होंने यह भी मांग की कि बिभूति के बयान को विधानसभा के मिनटों से हटा दिया जाए। इसके तुरंत बाद विपक्ष की नेता प्रमिला मलिक ने भी इसका विरोध किया

और कहा कि बीजद पूछ रही है कि भाजपा नेता हर 8 दिन में दिल्ली क्यों जा रहे हैं। इसके बाद सभी बीजद सदस्य खड़े हो गए और मांग की कि सदन में विभूति द्वारा दिए गए बयान को विधानसभा रिकॉर्ड से हटाया जाए। हालांकि, अध्यक्ष ने विपक्षी सदस्यों को अपनी सीटों पर बैठने को कहा। सरकारी पक्ष के सदस्य ने जो कहा वह संसदीय कार्य से बाहर का एक शब्द भी नहीं था। उनके बयान के अनुसार, किसी भी बात की जाँच नहीं की जाएगी। उनके शब्दों का विश्लेषण करने की कोई आवश्यकता नहीं है और सभी से बैठने का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि बिभूति ने किसी को ठेस पहुँचाने के लिए कुछ नहीं कहा, बल्कि उन्होंने भावुक होकर यह कहा और सदन की ओर इशारा किया। हालाँकि, बीजद सदस्य अपनी जिद पर अड़े रहे। कुछ देर बाद बिभूति प्रधान फिर से खड़े हो गए और चेतावनी दी कि अगर उनके बयान को रिकॉर्ड से नहीं हटाया गया तो वह सदन छोड़ देंगे। कुछ देर बाद बिभूति अपने स्थान पर खड़े हुए और फिर से कहा। उनका किसी को ठेस पहुँचाने का इरादा नहीं था। अगर उनके शब्दों से किसी को ठेस पहुँची है, तो उन्होंने कहा कि वह अपने शब्दों को वापस ले रहे हैं। इसके बाद सदन की कार्यवाही सामान्य हो गई। दूसरी ओर, विधानसभा के विभिन्न हिस्सों में इस बात पर चर्चा और बहस शुरू हो गई है कि विभूति की टिप्पणी का निशाना ख़ास तौर पर कौन था। यह भी चर्चा शुरू हो गई है कि प्रधानमंत्री की बात मानकर वे अप्रत्यक्ष रूप से क्या संदेश देना चाहते थे।

नवीन पटनायक की तबीयत पिछले कुछ दिनों से बिगड़ रही थी। उनका एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा था। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षों समेत सभी दलों के नेता उनसे मिलने गए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनसे फ़ोन पर बात की थी।

शराब पर सरकार की दोहरी नीति के खिलाफ मोना का विरोध

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मोना ने ओडिशा में शराब वितरण को लेकर राज्य की भाजपा सरकार की दोहरी नीति का कड़ा विरोध किया है। विशेष रूप से, संयुक्त ओडिशा नशा विरोधी अभियान (मोना) ने मंगलवार, 23 सितंबर को भुवनेश्वर के लोअर पीएमजी में एक विरोध कार्यक्रम आयोजित किया है, जिसमें विधानसभा में राज्य मंत्री द्वारा हाल ही में 70 शराब की दुकानें और 3 शराब निर्माण कारखाने खोलने की घोषणा का विरोध किया गया है। सभी शराब विरोधी लोगों, विशेष रूप से राज्य में कार्यरत शराब विरोधी संगठनों से इस विरोध कार्यक्रम में शामिल होने और शराब विरोधी आवाज को एकजुट होकर मजबूत करने का अनुरोध किया गया है। इसे सफल बनाने के लिए मोना अध्यक्ष पद्मचरण नायक की अध्यक्षता में कल एक महत्वपूर्ण बैठक हुई।

लोअर पीएमजी में बीजेडी का बड़ा विरोध प्रदर्शन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : बिजेड़ी ने पंचायत प्रतिनिधियों के अधिकारों में कटौती के खिलाफ प्रदर्शन कर रहा है। बीजद कार्यकर्ताओं ने दो बैरिकेड तोड़ दिए हैं। बीजद कार्यकर्ताओं की पुलिस से झड़प हुई है। झड़प के बाद लोअर पीएमजी में पुलिस और बीजद कार्यकर्ता आमने-सामने हो गए हैं।इसके अलावा, आखिरी बैरिकेड भी टूटकर बिखरा हुआ दिखाई दिया है। स्थिति भयावह होने के बाद, पुलिस को पानी का इस्तेमाल करते देखा गया है।

इसके अलावा, भाजपा विधायक इराशीष आचार्य ने बीजद के विधानसभा घेराव पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा, पंचायत प्रतिनिधियों की शक्ति कम नहीं हुई है, बल्कि पीसी लेनदेन बंद कर दिया गया है।40 प्रतिशत पीसी लेनदेन अवरुद्ध हो गए हैं। इसका असर बीजद के चमचों और ठेकेदारों पर पड़ा है। मोहन सरकार ने पंचायत को मजबूत किया है।सरकार ने विकसित गाँव, विकसित ओडिशा कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम में पंचायत प्रतिनिधियों को शामिल करके और ग्राम सभाएँ आयोजित करके गाँव का विकास किया जाएगा। उन्होंने तमिल बाबू के निर्देश पर ग्राम सभाएँ नहीं कीं। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों से पूछा तक नहीं। बीजद नेता बीजद के दलालों और ठेकेदारों का समर्थन करने की नीति के लिए विधानसभा के अंदर और बाहर नाटक कर रहे हैं।

हरगोविंद आर्या जी : युवाओं के प्रेरणास्रोत, समाजसेवा और राष्ट्र निर्माण के ध्वजवाहक

नाहरगढ़ जिला।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) नंगली नगर के नगर विद्यार्थी कार्यप्रमुख हरगोविंद आर्या जी समाजसेवा, संगठनात्मक गतिविधियों और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अपनी असाधारण सक्रियता के लिए पहचाने जाते हैं। वे अपनी ओजस्वी वाणी, तेजस्वी व्यक्तित्व और प्रखर वक्तृत्व कला से युवाओं को निरंतर प्रेरित कर रहे हैं।

⦿ **शिक्षा और संस्कार की अलख**

विद्यालयों व विभिन्न शैक्षणिक मंचों पर युवाओं को राष्ट्रहित में कार्य करने का आह्वान।

छात्रों के बीच शिक्षा, संस्कार और सामाजिक चेतना को प्रोत्साहित करने के लिए नियमित अभियान।

"विद्यार्थी ही राष्ट्र का भविष्य हैं" – इस विश्वास को साकार करने का सतत प्रयास।

⦿ समाजहित के उल्लेखनीय अभियान

भव्य पर्यावरण संरक्षण अभियान का सफल संचालन।

विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन, जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

छात्र जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों का संदेश दिया।

⦿ युवाओं के लिए प्रखर संदेश

हरगोविंद आर्या जी का स्पष्ट मानना है—

> "संगठित समाज ही सशक्त राष्ट्र का आधार है।"

उनके अनुसार, शिक्षा के साथ-साथ युवाओं में देशभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक मूल्य विकसित करना ही राष्ट्र निर्माण का मूल मंत्र है।

⦿ निष्कर्ष : अपनी समर्पित कार्यशैली, उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता और निरंतर समाजसेवा के कारण हरगोविंद आर्या जी आज युवाओं के बीच एक आदर्श, मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। उनका संकल्प है—

"शिक्षित, जागरूक और सशक्त युवा ही भारत के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखेंगे।"

भिवाड़ी: साइबर क्राइम थाना भिवाड़ी की बड़ी कार्रवाई

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी प्रशांत किरण के निर्देशन में साइबर क्राइम थाना टीम ने साइबर ठगों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही की है। 1930 पर दर्ज शिकायतों की जांच में सामने आया है कि आरोपियों ने अब तक 61 करोड़ रुपये की साइबर ठगी को अंजाम दिया है। इसमें पीड़ित योगेश जे. देसाई से 40 करोड़ रुपये की ठगी का बड़ा मामला भी शामिल है। आरोपियों ने फर्जी फर्म बनाकर, फर्जी बैंक खाते खोलकर और खातों का क्रय–विक्रय कर ठगी की राशि प्राप्त की। इनके कब्जे से 11 बैंक खातों की पासबुक, 4 एटीएम कार्ड, 4 क्यूआर कोड, 1 स्वाइप मशीन और 5 मोबाइल बरामद किए गए।

जांच में सामने आया है कि बरामद खातों पर देशभर के विभिन्न राज्यों से 100 से अधिक शिकायतें NCRP पोर्टल (1930) पर दर्ज हैं।

नवरंग का गीत संगीत आज भी सतरंगी...

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

सन १९५९ में प्रदर्शित हिंदी फिल्म 'नवरंग' के गीत और संगीत आज इतने वर्षों बाद भी दिल को छू लेता है। बहुत सुकुन देने वाली धुनें हैं, फिल्म का संगीत अपने-आप में बहुत ही कर्णप्रिय था। संध्या व वी. शांताराम और संगीतकार सी. रामचंद्र ने जो सुर और ताल के साथ लय का इसमें जो संगम किया था, वह बहुत अनोखा व यादगार बना।

कल्पनाओं की उड़ान में नायक- नायिका ने "आधा है चंद्रमा, रात आधी, रह ना जाए ये बात आधी..."

शब्दों को कितने जबरदस्त तरीके से सजाया था, जिसमें बोला गया कि "रहा राधा का श्याम भी आधा...।"

"नैन आधे खुलें होंठ आधे कहें" ऐसी बातों को जब फिल्माया जाता है तो सही में गाने में जान आ ही जाती है। राजकमल कला मंदिर की इस फिल्म में गीतकार भरत व्यास ने गाने लिखे थे।

चाँदनी रात में सिर पर मटकी लेकर नृत्य करती अभिनेत्री संध्या, साथ में अभिनेता महिपाल का वह अभिनय आज भी इस गीत को अपने-आप में कालजयी व कर्णप्रियता के साथ साथ मनभावन भी बनाए हुए है।

'नवरंग' फिल्म का पुराने जमाने में इतना खूबसूरत वह मनोहारी दृश्य था, जबकि गणेश जी की प्रतिमा के सामने "अरे जा रे नटखट, ना खोल रे मेरा घूंघट..." होली का वह दृश्य प्राचीनतम त्योहार की संस्कृति व परम्परा को लिए हुए केन्द्रीय गीत में नायक नायिका का किरदार पेड़ के पीछे से जिस प्रकार अभिनेत्री संध्या ने निभाया, वह यादगार है। दोहरे चरित्र में वह गीत जब भी सुनें, तो हमेशा होली की मस्ती का सुरूर देखते ही बनता है। रंगीन दृश्य को इस नए युग में हम श्रोता देखते हैं तो मन बहुत प्रसन्न हो जाता है। हाथी बाबा की पिचकारी से रंगों में सराबोर नायिका के साथ नृत्य करते गजराज, सही में इस गीत में मन को पर्व की लालिमा में सतरंगी छटा बिखेरते हुए मन को भाने वाली प्रस्तुति दी गई थी। संगीत उस जमाने में इतना जबरदस्त कि हर एक वाद्ययंत्र की आवाज जैसे ढोलक, सीटी, घुंघरू के साथ वह दिल को बहुत भाता है। ऐसा लगता है कि स्वर्ग में इन्द्र की सभा में गायन-वादन हो रहा हो। यह अहसास बहुत ही अलग है। अगले गीत में "श्यामल श्यामला वरण कोमल-कोमल चरण..." गीत देखने में बहुत हास्यप्रद लगता है, पर बोल बहुत साहित्यिक है। "तीखे-तीखे नयन" बहुत ही सफलतम गीत है। अगले गीत के बोल "तू छुपी है कहाँ, मैं तड़पता यहाँ..." में संगीत इतना बढ़िया था कि सुनते ही कानों को आंनद की अनुभूति होती है। मन्ना डे, आशा भोसले, महेन्द्र कपूर की आवाज़ में सभी गाने मन को तृप्त कर देते हैं। "तू छुपी है कहाँ" गाने में नायिका-नायक का दर्द कैसा होता है, उसे परदे पर देखते हैं तो बहुत अच्छा महसूस होता है। इस गीत में घंटों की मधुर ध्वनि का चित्र व नृत्य करती अभिनेत्री ने अपने अभिनय में पूरा न्याय किया है।

अगला गाना "ना राजा रहेगा, ना यह कहानी रहेगी... ये माटी सभी की कहानी कहेगी" देशभक्ति पूर्ण यह गीत देशभक्तों के लिए इतना अच्छा प्रयास था। उस जमाने में इतना बोलना बहुत बड़ी बात होती थी। स्वतंत्रता आंदोलन व अंग्रेजों की गुलामी पर जो कटाक्ष किया गया था, वह बहुत बढ़िया बना।

संध्या व वी. शांताराम ने इस फिल्म में बहुत मेहनत की थी। तभी यह महान कृतियों में आज भी हमें याद आ जाती है।

गीत "तुम पश्चिम हो, हम पूरब हैं..." भी राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत गीत था। हिन्दुस्तानियों की सामाजिक व धार्मिकता की बात इस फिल्म 'नवरंग' में कल भी देखी गई थी और आज भी इस फिल्म को देखें तो हर एक पक्ष के साथ गीत-संगीत सबसे ज्यादा मजबूती प्रदान करता है। फिल्म पूरी तरह सतरंगी सुरों में शानदार है। संगीत की इस महफ़िल में इस फिल्म का हर एक पहलू कल भी लाज़वाब था, आज भी है और कल भी रहेगा।

ड्राइंग बनाकर दिया स्वच्छता सेवा पखवाडा दिवस का संदेश।

गंजडुंडवारा अनिल राठौड़

शिक्षा विकास समिति द्वारा माँ गंगे आशा रानी हायर सेकेण्डरी स्कूल अकबर नगर पलिया नबादा मै स्वच्छता ही सेवा पखवाडा दिवस पर ड्राइंग व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुमित सोलंकी नें छात्र छात्राओं व स्टॉफ को स्वच्छता की शपथ दिलाई। विद्यालय की छात्रायें शिवानी कक्षा 9 वीनेश कक्षा 10 मुस्कान पूनम कक्षा 11 ड्राइंग प्रतियोगिता मै भाग लेकर पोस्टर के माध्यम सें सभी छात्र छात्राओं को स्वच्छता के विषय मै जानकारी दी। कार्यक्रम मै कु रीता कु वंदना सुमित मिश्रा सहित समस्त स्टॉफ उपस्थित रहे।

2 से 5 अक्टूबर तक मनाया जाएगा दान उत्सव – मैडम पियूषा

विभिन्न संस्थाओं और गैर-सरकारी संगठनों के साथ दान उत्सव संबंधी समीक्षा बैठक आयोजित

अमृतसर, (साहिल बेरी)

जिला प्रशासन, अमृतसर की ओर से 2 से 5 अक्टूबर तक एक सप्ताह चलने वाला सिटी नीड्स दान उत्सव कम्युनिटी सेंटर, ई ब्लॉक, रणजीत एवेन्यू, अमृतसर में सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक मनाया जाएगा।

इस संबंध में आज सहायक कमिश्नर–कम–ऑनरेरी सचिव रेड क्रॉस मैडम पियूषा ने जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारियों, अलग-अलग संस्थाओं और गैर-सरकारी संगठनों के साथ बैठक करते हुए बताया कि दान उत्सव मनाने का मुख्य उद्देश्य ज़रूरतमंदों की सहायता करना है। उन्होंने कहा कि हम सभी का कर्तव्य है कि जरूरतमंदों को बांटने के लिए उपयोग किए हुए कपड़े, जूते, खिलौने, किताबें, इलेक्ट्रॉनिक सामान और अन्य पुनः उपयोग योग्य वस्तुएं एकत्रित कर उन्हें दान करें।

सहायक कमिश्नर ने सभी भाग लेने वाली संस्थाओं और गैर-सरकारी संगठनों से अपील की कि वे अपने समुदायों में इस कार्यक्रम को प्रोत्साहित करें और व्यापक जागरूकता व भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करें। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे मिशन मेरी लाइफ कार्यक्रम के अनुरूप इस प्रकार की पहल का जिला प्रशासन हमेशा समर्थन करता रहेगा।

बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गैर-सरकारी संस्थाओं को इस आयोजन में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

इस बैठक में श्री सैमसन मसीह सचिव रेड क्रॉस, श्री जगजीत सिंह, श्री दीपक बब्बर, श्री सुखविंदर सिंह हेर के अलावा सरबत भला ट्रस्ट, जनकल्याण संगठन, अमृतसर हरियावल मंच, रोटरी क्लब, मिशन आगाज़ तथा अन्य धार्मिक संगठन भी मौजूद रहे।

आईआईटी- आईआईएम में पुरी शंकराचार्य का कलश स्थापन सह जिज्ञासा कार्यक्रम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, धनबाद के आईआईटी-आईएसएम में गोवर्धन मठ के शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती पहुंचे, जहां दुर्गापूजा की कलश स्थापना हुई। दो दिवसीय कार्यक्रम में छात्रों और प्रोफेसरों ने उनका भव्य स्वागत किया। यहां शंकराचार्य जिज्ञासा कार्यक्रम को संबोधित करेंगे और वैदिक ज्योतिष पर व्याख्यान देंगे। उन्होंने सनातन धर्म सामाजिक मूल्यों और गुरुकुल परंपरा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने राजनीति के उद्देश्य और समाज को सकारात्मक दिशा देने की बात कही।

आईआईटी-आईएसएम में पुरी स्थित गोवर्धन मठ के शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती सोमवार को पहुंचे। इस दौरान शंकराचार्य की मौजूदगी में दुर्गापूजा की कलश स्थापना पूरे विधि-विधान के साथ कराई गई।

इस दौरान शंकराचार्य को देखने एवं सुनने के लिए छात्रों व समेत संस्थान के प्रोफेसर व अन्य लोगों की भारी भीड़ हुई। मंगलवार को शंकराचार्य जिज्ञासा कार्यक्रम में संबोधित करेंगे।

वहीं, शाम को पेनमेन सभागार में वैदिक ज्योतिष पर व्याख्यान देंगे। शंकराचार्य सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार और सामाजिक मूल्यों के महत्व पर अपना विचार रखेंगे। आईएसएम के छात्रों को गुरुकुल परंपरा के महत्व से भी रूबरू कराएंगे।

शंकराचार्य का मानना है कि आज के समय में यह शिक्षा व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी है। राजनीति का उद्देश्य होना चाहिए। सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुरक्षित, समृद्ध, सेवाभावी, स्वस्थ और समाजोपयोगी नागरिक एवं समाज के निर्माण को शामिल रखना चाहिए।

उन्होंने स्पष्ट किया कि राजनीति के नाम पर उन्माद फैलाना उचित नहीं है, बल्कि समाज को सकारात्मक दिशा देना ही उसका असली कार्य होना चाहिए।

बताते चलें कि वैज्ञानिक शंकराचार्य महाराज से मिलने आते हैं। इसरो के अहमदाबाद सेंटर में शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती जी वैदिक गणित के महत्व पर व्याख्यान भी दे चुके हैं।

ऐसा माना जाता है कि पुरी गोवर्धन मठ के शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती इसरो वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-2 के लांच से पहले जुलाई महीने में स्वामी निश्चलानंद सरस्वती से परामर्श लिया था। ऐसा कुछ संदेहों को दूर करने के लिए किया गया था जिसका समाधान उस समय वैज्ञानिकों के पास भी नहीं था।

हिंदी दिवस पर 'अनुगूँज–हिंदी की' प्रतियोगिता संपन्न

- टीचर्स ऑफ बिहार की ओर से प्रदान किया गया डिजिटल प्रशस्ति पत्र/सहभागिता प्रमाण पत्र।

पटना। हिंदी दिवस के अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित 'अनुगूँज – हिंदी की विशेष प्रतियोगिता' सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह प्रतियोगिता दो विधाओं – पत्र लेखन एवं स्वरचित काव्य लेखन – में आयोजित की गई, जिसमें राज्य भर से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता के लिए पत्र लेखन का विषय था – "हिंदी के महत्व को समझाते हुए माता का पुत्र/पुत्री के नाम पत्र" तथा काव्य लेखन का विषय था – "हिंदीः हमारी अस्मिता की पहचान"। प्रविष्टियों का मूल्यांकन निर्णायक मंडल एवं पाठकों की पसंद (लाइक्स) – दोनों आधारों पर किया गया।

टीचर्स ऑफ़ बिहार
"अनुगूँज-हिंदी की"
(रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता)
प्रशस्ति-पत्र
यह प्रमाणित किया जाता है कि RUCHIKA विद्यालय, PRIMARY SCHOOL KURMAULI, GUTHANI, SIWAN ने टीचर्स ऑफ़ बिहार द्वारा आयोजित "अनुगूँज-हिंदी की" पत्र लेखन प्रतियोगिता के शिक्षक श्रेणी में "निर्णायक मंडल द्वारा मूल्यांकन" के आधार पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
आपकी रचनात्मक प्रस्तुति एवं हिंदी भाषा के प्रति प्रतिबद्धता प्रशंसनीय रही।
हम आपके इस उपलब्धि हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं।
www.teachersofbihar.org

काव्य लेखन प्रतियोगिता परिणाम...

शिक्षक श्रेणी (लाइक्स के आधार पर) में प्रथम स्थान शशि भूषण (उ.मा.वि. बरियारपुर कंध, मुजफ्फरपुर), द्वितीय स्थान रागिनी कुमारी (उ.उ.वि. जमीन मठिया, मीनापुर, मुजफ्फरपुर) तथा तृतीय स्थान एकता कुमारी (मध्य विद्यालय नगरनौसा, नालंदा) को प्राप्त हुआ।

निर्णायकों की पसंद पर शिक्षक श्रेणी में असीम कलीम (उ.मा.वि. चोरमा, पूर्वी चंपारण) को प्रथम, पंकज कुमार (उ.उ.वि. मरवापाकर, मुजफ्फरपुर) को द्वितीय तथा लाल बच्चन पासवान (उ.मा.वि. मधुबनी, मीनापुर, मुजफ्फरपुर) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

विद्यार्थी श्रेणी में निर्णायकों ने मयंक कृष्ण (उ.उ.वि. दरगाहीगंज, अररिया) को प्रथम, पियूष कुमार (उ.मा.वि. बरियारपुर कंध, मुजफ्फरपुर) को द्वितीय तथा निगम कुमारी (उ.उ.वि. दरगाहीगंज, अररिया) को तृतीय स्थान पर चुना।

पत्र लेखन प्रतियोगिता परिणाम..

शिक्षक श्रेणी (निर्णायकों की पसंद पर) में रुचिका (प्रा. विद्यालय कुरमौली, सीवान), दीप शिखा (मध्य विद्यालय जगतपुर, सुपौल) और श्री कृष्णा सिंह (+2 उच्च विद्यालय रामगढ़, कैमूर) क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।

लाइक्स के आधार पर शिक्षक श्रेणी में दीपक कुमार (उ.मा.वि. दुधैल, समस्तीपुर) ने प्रथम, घनश्याम कुमार (प्रा. विद्यालय झंडापुर, भागलपुर) ने द्वितीय तथा कुमारी कांती (राजकीय मध्य विद्यालय, बोचहां, मुजफ्फरपुर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विद्यार्थी श्रेणी में कशिश कुमारी और सोनम कुमारी (दोनों राजकीयकृत उच्च विद्यालय, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर) ने क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय तथा लक्ष्मी कुमारी (उ.मा.वि. सियटानर, झाझा, जमुई) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में राम किशोर पाठक, डॉ. स्नेहलता द्विवेदी, डॉ. स्वराक्षी स्वरा, अमितेश कुमार, प्रियंका प्रिया, डॉ. विनोद उपाध्याय, सुबोध कुमार द्विवेदी एवं आस्था दीपाली शामिल थे।

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि "इस प्रतियोगिता ने शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को हिंदी भाषा के प्रति रचनात्मक सोच और अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया है।"

इवेंट लीडर केशव कुमार एवं अनुपमा प्रियदर्शिनी ने बताया कि "प्रतियोगिता को लेकर प्रतिभागियों का उत्साह उल्लेखनीय रहा। राज्य के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं।"

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि "टीचर्स ऑफ बिहार सदैव शिक्षा और भाषा के क्षेत्र में सकारात्मक पहल करता रहा है। इस आयोजन ने हिंदी दिवस को और अधिक सार्थक बना दिया।"

प्रमाणपत्र उपलब्ध...

सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को डिजिटल प्रमाणपत्र उपलब्ध कराया गया है। इन्हें टीचर्स ऑफ बिहार की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

निष्कर्ष...

कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को हिंदी भाषा के महत्व और गौरव को अभिव्यक्त करने का अनूठा अवसर प्रदान किया। निर्णायकों और पाठकों की पसंद से चयनित प्रविष्टियों ने यह स्पष्ट किया कि हिंदी हमारी अस्मिता की पहचान होने के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहर की धड़कन भी है।

झारखंड एवं दिल्ली में करोड़ों का अवैध जमीन कारोबार को लेकर ईडी के पुनः छापे

भूमि माफिया, आदिवासी जमीन विक्री, मनी लांड्रिंग रोकथाम को लेकर हुई रेड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, जमीन माफिया, भ्रष्ट अधिकारी, दलाल, बिल्डर, बिचौलिए के हाथों आज झारखंड त्राहि त्राहि कर रहा है। निराकरण के नाम पर इन लोगों पर सरकार की तरफ से कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती, करण इनकी जडें झारखंड की हर सरकार में गहरी है। पर विगत समय कुछ में रांची की जमीन पर ईडी का ऐंन्ट्री होने के के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी भी करवाई से जेल यात्रा पर हैं, हां, यह कटू सत्य है राज्य के अंचल इन दिनों भ्रष्टाचारियों का चरागाह बन चुके है। इसी क्रम में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को आदिवासी की जमीन मालिकाना परिवर्तन, मनी लड्रिंग रोकथाम

से जुड़े करोड़ों रुपए के घोटाले की जांच के सिलसिले में रांची और दिल्ली में कई जगहों पर छापेमारी की है।

मिली जानकारी के अनुसार, ईडी ने रांची में छह से अधिक स्थानों पर और दिल्ली में तीन ठिकानों पर छापेमारी की।

ईडी की कई टीमें संपत्ति के दस्तावेज, वित्तीय रिकॉर्ड और डिजिटल सबूतों की जांच के लिए तैनात की गई हैं, जो कथित तौर पर जमीन के सौदागरों, बिल्डरों और बिचौलियों से जुड़े एक घोटाले से संबंधित हैं। रांची में कई प्रमुख स्थानों जैसे कांके में कांके रिसॉर्ट, रतू रोड पर सुखदेव नगर, काडरू, बरियातू और अशोक नगर में छापेमारी की गई। इसके अलावा, दिल्ली में भी प्रभावशाली जमीन दलालों और उनके सहयोगियों से जुड़े स्थानों पर तलाशी ली गई

यह कार्रवाई कांके ब्लॉक के चामा मौजा में धोखाधड़ी से जुड़ी है, जहां आदिवासी जमीन को नकली दस्तावेजों के जरिए सामान्य भूखंड में बदला गया और फिर ऊंची कीमतों पर बेचा गया। जांचकर्ताओं को शक है कि इन सौदों से प्राप्त धन को मनी लॉन्ड्रिंग के जरिए वैध आय के रूप में दिखाया गया था

ईडी की जांच के दायरे में कथित भूमि माफिया कमलेश कुमार सिंह और कांके रिसॉर्ट के मालिक बीके सिंह शामिल हैं, जिनके ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है। इन छापेमारी में उनके करीबी लोग, जैसे प्रॉपर्टी डीलर और दस्तावेज बनाने वाले लोग भी शामिल हैं। यह पहली बार नहीं है जब एजेंसी ने इस मामले में कार्रवाई की है। इससे पहले, पिछले साल 10 जुलाई को ईडी की एक टीम विवादित जमीन के प्लॉट की जांच के लिए कांके गई थी।

यह छापेमारी मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत की जा रही है। ईडी को शक है कि फर्जी दस्तावेजों और राजस्व रिकॉर्ड में हेरफेर करके आदिवासी भूमि पर कब्जा किया गया ताकि उसे अवैध रूप से बेचा जा सके और फिर रियल एस्टेट और अन्य निवेशों के माध्यम से अवैध कमाई को सफेद किया जा सके।

कासगंज संदीप वर्मा ने संभाला पटियाली सीओ का पदभार

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज जिले के पटियाली क्षेत्र में पुलिस प्रशासनिक फेरबदल के चलते नए क्षेत्राधिकारी (सीओ) की नियुक्ति कर दी गई है। जानकारी के अनुसार, पटियाली क्षेत्राधिकारी संतोष सिंह को एएपसी (एडिशनल एसपी) पद पर पदोन्नत कर गौतमबुद्ध नगर स्थानांतरित कर दिया गया है। उनके स्थानांतरण के बाद पटियाली सीओ का पद रिक्त हो गया था। कासगंज जिले के पटियाली क्षेत्र में पुलिस प्रशासनिक फेरबदल के चलते नए क्षेत्राधिकारी (सीओ) की नियुक्ति कर दी गई है। जानकारी के अनुसार, पटियाली क्षेत्राधिकारी संतोष सिंह को एएपसी (एडिशनल एसपी) पद पर पदोन्नत कर गौतमबुद्ध नगर स्थानांतरित कर दिया गया है। उनके स्थानांतरण के बाद पटियाली सीओ

का पद रिक्त हो गया था।

अब इस पद की जिम्मेदारी संदीप सिंह को सौंपी गई है। मंगलवार को एसपी अंकिता शर्मा ने उन्हें तत्काल पदभार ग्रहण करने के निर्देश दिए। साथ ही यह भी कहा कि वह अपने कार्यक्षेत्र में कानून व्यवस्था सुदृढ़ करने और अपराध पर नियंत्रण को प्राथमिकता दें। एसपी ने निर्देशित किया है कि क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और जनता की समस्याओं के समाधान पर विशेष ध्यान दिया जाए। नए सीओ से उम्मीद जताई गई है कि वे अपराध नियंत्रण, यातायात व्यवस्था और थाना प्रभारियों के साथ समन्वय स्थापित कर आमजन में पुलिस के प्रति विश्वास को और मजबूत करेंगे। पटियाली क्षेत्र के लोगों में भी नए क्षेत्राधिकारी के कार्यभार संभालने को लेकर उत्सुकता है। माना जा रहा है कि संदीप सिंह के नेतृत्व में क्षेत्र में पुलिसिंग को और मजबूती मिलेगी।

मथुरा रिपोर्ट अंकित गुप्ता

अपर मुख्य सचिव IAS दीपक कुमार पहुंचे मथुरा*
डीजीपी राजीव कृष्ण पहुंचे मथुरा*
राष्ट्रपति के आगमन की तैयारियों का लिया जायजा
25 *सितंबर* 2025 को द्रोपदी मुर्मू का वृंदावन में कार्यक्रम
राष्ट्रपति के आगमन स्थलों का स्थलीय निरीक्षण
राष्ट्रपति का बांके बिहारी मंदिर, निधिवन में दर्शन कार्यक्रम
वृन्दावन की सुदामकुटी में धार्मिक कार्यक्रम में करेंगी शिरकत

वही *डीजीपी* राजीव कृष्ण *ने बताया* कि *सुरक्षा व्यवस्था* को लेकर *सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं।*

धनबाद स्टेशन पर 42 लाख रुपये के साथ दो धराये, आयकर को सौंपें गये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, धनबाद रेलवे स्टेशन के दक्षिणी छोर पर सोमवार की रात रुपये से भरे दो बैग के साथ आरपीएफ ने दो लोगों को पकड़ा है। लगेज स्कैनर में बैग की जांच के दौरान कैश पकड़ा गया। लगभग 42 लाख रुपये नगद के साथ पकड़े गए लोगों में 50 वर्षीय हरेंद्र प्रसाद एवं 45 वर्षीय संतोष कुमार खरवार शामिल हैं। दोनों बिहार के रोहतास सूर्यपुरा के रहनेवाले हैं। रकम बड़ी होने के कारण आरपीएफ ने इनकम टैक्स विभाग को सूचना दी। इनकम टैक्स की अनुसंधान विंग की टीम पहुंची और नगद के साथ पकड़े गए दोनों व्यक्ति से पूछताछ शुरू की। इतनी बड़ी रकम के साथ स्टेशन किस उद्देश्य से आए थे, कहां जा रहे थे समेत अन्य विषयों पर पूछताछ की जा रही है। बीती रात लगभग 9:45 पर स्टेशन के दक्षिणी छोर से दो व्यक्ति बगैर लगेज स्कैनर में सामान जांच कराए स्टेशन के अंदर प्रवेश का प्रयास कर रहे थे। ऑन ड्यूटी आरपीएफ जवान प्रविंद कुमार के स्कैनर में बैग रखने की बात पर दोनों सकपका गये।

दोनों बैग की लगेज स्कैनर से जांच और टटोलने पर कागज की गड्डी जैसी वस्तु प्रतीत हुई। पूछताछ करने पर टालमटोल करने लगे। बाद में रुपये होने की बात कही।

सूचना मिलते ही आरपीएफ के अधिकारी पहुंचे और रकम अधिक होने के कारण इनकम टैक्स विभाग को जानकारी दी। आयकर विभाग की अन्वेषन टीम पहुंची जिन्हें नकद समेत दोनों को सौंप दिया गया।

आयकर विभाग की पूछताछ में उन्होंने बताया कि दोनों गल्ला व्यापारी हैं। उन्होंने बताया कि सासाराम जाने वाले थे, तभी उन्हें पकड़ लिया गया। जांच में पाया गया कि दोनों ने पैसे को अखबार के अंदर बंडल बना कर उसे गमछे से बांध कर छिपाया था। लगेज स्कैनर में बैग रखने से भी हिचकिचा रहे थे। इससे यह स्पष्ट है कि उन्होंने नगद छिपाने का प्रयास किया।

दो बैग में भरे रुपये गिनने के लिए रेलवे की बुकिंग आफिस से मशीन लाई गई। महिला बुकिंग स्टाफ सुप्रिया ने मशीन से रुपये गिने जिसमें कुल 41 लाख 22 हजार 400 रुपये मिले। इनकम टैक्स की अन्वेषण टीम व आरपीएफ अधिकारियों ने इसकी वीडियोग्राफी भी कराई।

सीवरेज और सेनिटेशन की समस्या को लेकर विधायक डॉ गुप्ता ने निगम कमिश्नर और अधिकारियों के साथ क्षेत्र का किया निरीक्षण

अमृतसर, 23 सितंबर (साहिल बेरी)

केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता ने नगर निगम कमिश्नर बिक्रमजीत सिंह शेरगिल और निगम अधिकारियों की टीम के साथ सीवरेज और सैनिटेशन की समस्या को लेकर वार्ड नंबर 67 के क्षेत्र किशन कोट नीवी आबादी का निरीक्षण किया। विधायक डॉ गुप्ता ने बताया कि इसी क्षेत्र के लोग पिछले लंबे अरसे से सीवरेज की समस्या से ग्रस्त है। उन्होंने कहा कि इस समस्या का अब परमानेंट हल निकाला जाएगा।

विधायक डॉ गुप्ता ने कहा कि कंपनी द्वारा सफाई व्यवस्था का कार्य बंद कर देने के कारण सैनिटेशन की समस्या तो आई है। उन्होंने कहा कि फिर भी वह खुद सड़कों पर उतरकर सैनिटेशन ठीक करवा

रहे हैं। उन्होंने की आने वाले 1 महीने के भीतर शहर की सैनिटेशन बेहतर हो जाएगी।

नगर निगम कमिश्नर बिक्रमजीत सिंह शेरगिल ने कहा कि इस क्षेत्र में कल से ही दो सुपर सक्कर मशीने लगाकर सीवरेज डिसिल्टिंग शुरू करवा दी जाएगी। उन्होंने कहा कि आने वाले दो-तीन दिनों में सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या समाप्त हो जाएगी। कमिश्नर शेरगिल ने कहा कि शहर में प्रतिदिन लगभग 560 मैट्रिक टन कूड़ा करकट निकलता है। उन्होंने कहा कि अवर्डा कंपनी के काम बंद करने के बावजूद नगर निगम द्वारा सारा दिन मेहनत करके अपने स्तर पर कूड़ा करकट उठाया जा रहा है। उन्होंने कहा की नई कंपनी के कार्य शुरू होने से सफाई व्यवस्था बेहतर हो जाएगी। इस अवसर पर डिप्टी मेयर अनीता रानी के पुत्र तरुणवीर कैंडी, आम आदमी पार्टी के वॉलिंटियर्स और क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

होटल साँवरिया का भव्य शुभारम्भ

देवघर। स्थानीय जलसार रोड, रघुनाथ पथ स्थित होटल साँवरिया का भव्य शुभारम्भ श्री श्याम बाबा प्रभु के असीम कृपा से श्री श्याम भक्त सुरेश केसरी एण्ड ब्रदर्श द्वारा किया गया। मौके पर, भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने शुभारम्भ पर ढेर सारी शुभकामनाएँ व बधाईयाँ दी और कहा आधुनिक सुविधाओं से सुस्सजित होटल साँवरियाँ के शुभारम्भ हो जाने से बाबा धाम आने वाले पर्यटकों को काफी सहुलियत होगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023